नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

वर्ष 03, अंक 313, नई दिल्ली, सोमवार 12 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 अंकज्योतिष, रंग और ग्रह ऊर्जा: रंगों द्वारा भाग्य को सक्रिय करने की कला

06 बच्चों का भोजन: जानलेवा खतरा या सुरक्षित भोजन?

08 बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष ब्रजनंदन शर्मा का निधन

सड़क सुरक्षा के प्रति युवाओं से टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) की अपील

याद रखें — सड़कें रेस ट्रैक नहीं हैं, आपकी - हमारी ज़िंदगी अनमोल है, इसे संभालकर जिएं और जीने दें

पिंकी कुंडू

आजकल दिल्ली - एनसीआर की सड़कों पर बच्चों और युवाओं द्वारा तेज़ रफ्तार से बाइक चलाना एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है।

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के 2025 आंकड़ों के अनुसार,

*जनवरी - सितंबर में 1,149 सड़क हादसों में मौतें हुईं, जिनमें 19-30 आयु वर्ग के युवाओं पर सर्वाधिक प्रभाव पड़ा;

*स्पीडिंग और बिना हेलमेट के 65% मामले दर्ज।

*बिना हेलमेट, ट्रिपल राइडिंग या नियमों की अवहेलना न तो समझदारी है और न ही बहादुरी।

न्यायालयों के हालिया फैसले:

दिल्ली हाईकोर्ट (जनवरी 2026):

*ई-रिक्शा संचालन पर PIL में सरकार से जवाब मांगा; अवैध रजिस्ट्रेशन, ओवरलोडिंग और 236 सड़कों पर प्रतिबंध उल्लंघन पर चिंता जताई,

***सार्वजनिक सुरक्षा को खतरा बताया।**

सुप्रीम कोर्ट (अक्टूबर 2025): रोड सेफ्टी पर व्यापक निर्देश—

*हेलमेट अनिवार्य प्रवर्तन,

*AI कैमरों से स्पीडिंग/लेन वायलेशन चेक,

*चकाचौंध वाली LED लाइट्स/हूटर प्रतिबंध;

*6-7 माह में फुटपाथ/क्रॉसिंग सुधार अनिवार्य।

*दिल्ली हाईकोर्ट क्षेत्र में विशेष फोकस।

फैक्ट-बॉक्स (इन्फोग्राफिक सुझाव):

उल्लंघन	2025 चालान (एनसीआर)
बिना हेलमेट	6.9 लाख (गाजियाबाद)
स्पीडिंग/रॉन्ग साइड	1.9 लाख
युवा मौतें (19-30)	185 (जन-जून, दिल्ली)

*हमारी एक पल की लापरवाही ज़िंदगी भर का दर्द बन सकती है।

*हादसे में सिर्फ़ एक व्यक्ति नहीं, पूरा परिवार टूट जाता है।

*सुप्रीम कोर्ट के निर्देशानुसार, PUC/फिटनेस चेक में हेडलाइट्स की जांच अनिवार्य।

हमारे मां-बाप के सपने, उनकी मेहनत और उनका सहारा एक झटके में छिन सकता है। नोएडा में 2025 में 28 लाख चालान जारी हुए, ज्यादातर युवाओं पर।

हमारा कर्तव्य बनता है और सभी माता - पिता का दायित्व है कि वे

*बच्चों को सड़क सुरक्षा,

*GRAP प्रतिबंध (BS-IV डीजल वाहन स्टेज-3 में बंद) और

*न्यायिक आदेश समझाएं।

मेरे युवा भाइयों - बहनों से अपील — रफ्तार नहीं, सुरक्षा चुनें।

याद रखें—सड़कें रेस ट्रैक नहीं हैं। आपकी-हमारी ज़िंदगी अनमोल है, इसे संभालकर जिएं।

टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत ट्रस्ट, जनहित जागरूकता अभियान के तहत)

ट्रेक्टर ट्रालियों का व्यावसायिक दुरुपयोग: हरियाणा में ट्रांसपोर्टरों की लूट जारी, सरकार सोई हुई?

(संपादक संजय कुमार बाठला जी को व्हाट्सएप मैसेज द्वारा प्राप्त शिकायत के आधार पर।)

प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रान्सपोर्ट सारथी संगठन की चेतावनी

हरियाणा में ट्रेक्टर ट्रालियों का व्यावसायिक उपयोग अब गंभीर समस्या का रूप ले चुका है। ट्रेक्टर मूलतः किसानी कार्यों के लिए डिजाइन किया गया है, जिसके तहत किसान अपना अनाज मंडी तक ले जा सकता है लेकिन व्यापारी व ठेकेदार इन्हें परमिटरहित कमर्शियल वाहनों की तरह सड़कों पर चला रहे हैं, जिससे लगातार दुर्घटनाएं हो रही हैं। फिर भी, सरकार, RTO और पुलिस का कोई ध्यान नहीं।

हाईकोर्ट के आदेश की खुलेआम अवहेलना संगठन ने पत्र के माध्यम से सरकार व RTO को पंजाब-हरियाणा हाईकोर्ट के स्पष्ट आदेश की सूचना दी, किंतु कोई आश्वासन नहीं मिला।

एसोसिएशन के पास हाईकोर्ट का आदेश मौजूद है, जो ट्रेक्टर ट्रालियों के दुरुपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाने का निर्देश देता है, विभाग की इस उदासीनता से सड़कें मौत के सौदागरों के हवाले हो रही हैं।

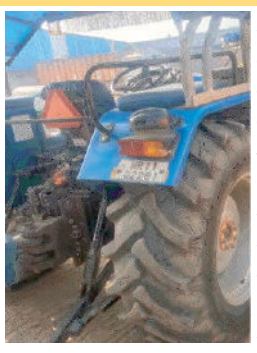

चालान व अवैध पार्किंग का काला कारोबार दूसरी ओर, ट्रांसपोर्टरों पर जबरन चालान थोपे जा रहे हैं। RTO के दलाल ड्राइवरों से चालान का भुगतान करवाते हैं, लेकिन अतिरिक्त 3,000 रुपये की अवैध वसूली करते हैं।

पूरे हरियाणा में अवैध पार्किंग माफिया सक्रिय हैं, जो 12 घंटे की पार्किंग के लिए प्रति टायर 100 रुपये वसूलते हैं। उदाहरणस्वरूप, 10 चक्का ट्रक से सीधे 1,000 रुपये लूट लिए जाते हैं। गाड़ी मालिकों पर ऐसी लूटमारी जारी है।

बड़े आंदोलन की चेतावनी, किसान नेताओं का समर्थन यदि सरकार ने इन मुद्दों पर तत्काल ध्यान न दिया, तो हरियाणा में विशाल आंदोलन छेड़ा जाएगा। संगठन ने किसान नेताओं से समर्थन मांगा, जिन्होंने हौसला बढ़ाते हुए कहा, "हम टीम के साथ हैं।" ट्रांसपोर्टर भाइयों, जागो! जनहित में एकजुट होकर लड़ाई लड़नी होगी।

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

अन्य कई देशों में शुगर टैक्स, पैकेज्ड ड्रिंक्स पर चेतावनी लेवल और स्कूलों में शीतल पेयों पर प्रतिबंध

फिर भारत देश की सरकार और सम्बन्धित विभाग क्यों इनके प्रति मेहरबान

संजय कुमार बाठला, मुख्य संपादक, स्वतंत्र पत्रकार और सामाजिक मुद्दों के विश्लेषक

अत्यधिक शक्कर सेवन के दुष्प्रभावः विशेषकर मीठे शीतल पेय (Cold Drinks) के संदर्भ में आज के आधुनिक जीवन - शैली में मीठे शीतल पेय, सोडा, फ्लेवर्ड ड्रिंक्स और पैकेज्ड जूस का अत्यधिक सेवन एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन चुका है।

वैज्ञानिक अनुसंधानों और स्वास्थ्य संगठनों के अनुसार, अधिक मात्रा में चीनी (Added Sugar) शरीर पर अनेक स्तरों पर हानिकारक प्रभाव डालती है।

1. दाँतों पर घातक प्रभाव (Dental Damage);- अत्यधिक चीनी सेवन दंत रोगों का प्रमुख कारण है।

मुँह में मौजूद बैक्टीरिया चीनी को भोजन की तरह उपयोग करते हैं। इसके परिणामस्वरूप तेज़ अम्ल (Acid) बनता है, जो दाँतों की ऊपरी परत (Enamel) को धीरे-धीरे नष्ट करता है।

*इससे दंत क्षय (Cavities), दाँतों का सड़ना, मसूड़ों की सूजन और पायरिया (Periodontal Disease) जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

*मीठे शीतल पेय विशेष रूप से अधिक हानिकारक क्यों हैं?

*इन्हें धीरे-धीरे घूँट-घूँट कर पिया जाता है, जिससे दाँत लंबे समय तक अम्ल के संपर्क में रहते हैं।

* कोला जैसे पेय स्वयं भी अत्यधिक अम्लीय (Phosphoric / Citric Acid) होते हैं, जो बिना बैक्टीरिया के भी एनामेल को कमजोर कर देते हैं।

*नवीन शोध (2023–2025) बताते हैं कि बच्चों और युवाओं में दंत क्षय का मुख्य कारण अब ठोस मिठाइयाँ नहीं, बल्कि Sugar-Sweetened Beverages बन चुके हैं।

2. चयापचय (Metabolism) पर गंभीर दुष्प्रभाव अत्यधिक चीनी सेवन शरीर की चयापचय प्रणाली को असंतुलित कर देता है।

*इसके प्रमुख परिणाम हैं:

*मोटापा (Obesity)

* इंसुलिन प्रतिरोध (Insulin Resistance)

*टाइप-2 मधुमेह

*फैटी लिवर रोग (NAFLD)

*उच्च रक्तचाप

*मेटाबॉलिक सिंड्रोम

*इसके पीछे वैज्ञानिक कारण:

*मीठे पेय "तरल कैलोरी" देते हैं, जो पेट नहीं भरते लेकिन कैलोरी अत्यधिक होती है।

* बार-बार रक्त शर्करा बढ़ने से इंसुलिन पर दबाव पड़ता है।

* अतिरिक्त फ्रक्टोज़ सीधे लिवर में वसा (Fat) के रूप में जमा होता है।

*** हालिया वैश्विक ट्रेंड (2024–2025):** कम उम्र में मधुमेह और फैटी लिवर के मामलों में तीव्र वृद्धि — जिसका प्रमुख कारण मीठे पेय और प्रोसेस्ड शुगर मानी जा रही है।

3. फ्री रेडिकल्स, ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस और कैंसर से संबंध यह संबंध प्रत्यक्ष नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष और जटिल है।

*कैसे?

*अत्यधिक चीनी उच्च रक्त शर्करा सूजन (Inflammation) ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस

* ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस में शरीर में फ्री रेडिकल्स बढ़ते हैं, जो कोशिकाओं के DNA को नुकसान पहुँचा सकते हैं।

कैंसर से जुड़ाव: अत्यधिक चीनी स्वयं कैंसर नहीं करती, लेकिन इससे उत्पन्न मोटापा, सूजन और हार्मोनल असंतुलन कई प्रकार के कैंसर का जोखिम बढ़ाते हैं, जैसे:

*स्तन कैंसर

*कोलन कैंसर

*एंडोमेट्रियल कैंसर

*लीवर कैंसर

कुछ नवीन अध्ययनों में यह पाया गया है कि: Sugar-Sweetened Beverages का अधिक सेवन

कुछ विशेष कैंसर (विशेषकर महिलाओं में) से जुड़ा हुआ पाया गया है, यह प्रभाव मुख्यतः मोटापा और मेटाबॉलिक गड़बड़ी के माध्यम से होता है, न कि केवल फ्री रेडिकल्स से।

4. नवीन वैश्विक सिफारिशें (Latest Recommendations)

*WHO:

* कुल दैनिक कैलोरी का 10% से कम चीनी

*बेहतर स्वास्थ्य हेतु 5% से भी कम

*ICMR (भारत):

* बच्चों और किशोरों के लिए मीठे पेय से परहेज़

*नवीन नीति रुझान:

*कई देशों में Sugar Tax

*पैकेज्ड ड्रिंक्स पर चेतावनी लेबल

*स्कूलों में शीतल पेयों पर प्रतिबंध

निष्कर्ष (Conclusion)

*दाँतों और चयापचय पर चीनी का नुकसान प्रत्यक्ष, स्पष्ट और वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है।

* कैंसर का खतरा अप्रत्यक्ष लेकिन वास्तविक है, मुख्यतः मोटापा और सूजन के कारण।

* मीठे शीतल पेय का नियमित सेवन दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हो सकता है।

सर्वश्रेष्ठ विकल्प:

*पानी, नारियल पानी, छाछ

*बिना चीनी की चाय/कॉफी

*ताज़े फल (जूस नहीं, पूरा फल)

*कम चीनी = बेहतर दाँत,

*बेहतर मेटाबॉलिज़्म और दीर्घायु जीवन

सड़कें अब बुद्धिमान: भारत की स्मार्ट सुरक्षा का नया युग [टकराव नहीं, तालमेल: वी2वी तकनीक के साथ सुरक्षित ड्राइविंग]

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

भारत की सड़कें आज भी जीवन और सुरक्षा के लिए जोखिमपूर्ण साबित हो रही हैं। हर साल लाखों लोग दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं और अनगिनत परिवार टूट जाते हैं। वर्ष 2024 में देशभर में लगभग 1.77 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवा चुके हैं। इसका अर्थ है कि हर दिन औसतन 485 से अधिक लोग अपने घरों से कभी लौटकर नहीं आते। तेज़ गति, लापरवाही, हेलमेट न पहनना और यातायात नियमों की अवहेलना प्रमुख कारण हैं। युवा वर्ग (18-34 वर्ष) सबसे अधिक प्रभावित है, जो देश की आर्थिक और सामाजिक शक्ति का अहम हिस्सा है। इन भयावह आंकड़ों ने सरकार को मजबूर कर दिया कि वह सड़क सुरक्षा में क्रांतिकारी बदलाव लाए।

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए 2026 तक पूरे देश में व्हीकल-टू-व्हीकल (वी2वी) संचार तकनीक लागू करने की ऐतिहासिक घोषणा की। यह तकनीक वाहनों को सीधे संवाद करने में सक्षम बनाएगी, बिना किसी मोबाइल नेटवर्क या इंटरनेट के। वी2वी तकनीक के माध्यम से वाहन आपस में गति, स्थिति, दिशा, ब्रेकिंग और त्वरण जैसी महत्वपूर्ण जानकारी साझा करेंगे। यदि कोई वाहन अचानक रुकता है, ब्लाइंड स्पॉट में प्रवेश करता है या किसी खतरे का सामना करता है, तो आसपास के सभी वाहन तुरंत चेतावनी पाएंगे। इस प्रकार, दुर्घटनाओं को पहले ही रोका जा सकेगा और लाखों जीवन सुरक्षित रहेंगे।

वी2वी संचार प्रणाली पूर्णतः अत्याधुनिक वायरलेस तकनीक पर आधारित है। प्रत्येक वाहन में एक ऑन-बोर्ड यूनिट (ओबीयू) स्थापित की जाएगी, जो 5.875 से 5.905 गीगाहर्ट्ज़ बैंड में उपलब्ध 30 मेगाहर्ट्ज़ स्पेक्ट्रम का उपयोग करेगी। यह विशिष्ट स्पेक्ट्रम दूरसंचार विभाग द्वारा निःशुल्क आवंटित किया गया है। इस प्रणाली के माध्यम से वाहन रीयल-टाइम में एक-दूसरे के साथ महत्वपूर्ण सूचनाओं का आदान-प्रदान करेंगे, जिससे प्रतिक्रिया समय अत्यंत कम हो जाएगा। कई परिस्थितियों में यही कुछ सेकंड जीवन और मृत्यु के बीच का निर्णायक अंतर साबित

होते हैं। विशेषज्ञों और विभिन्न मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, यह तकनीक दुर्घटनाओं की संभावना को लगभग 80 प्रतिशत तक कम करने में सक्षम है, विशेष रूप से कोहरे, अत्यधिक यातायात और रियर-एंड टक्कर जैसी जोखिमपूर्ण स्थितियों में। सरकार ने इसे 2026 तक राष्ट्रीय स्तर पर लागू करने का स्पष्ट लक्ष्य रखा है। पहले चरण में यह केवल नए वाहनों में अनिवार्य होगा। इसके बाद मौजूदा वाहनों में रेट्रोफिटिंग की जाएगी। अनुमानित परियोजना लागत लगभग 5,000 करोड़ रुपये है। प्रति वाहन उपकरण की लागत 5,000-7,000 रुपये के आसपास होने का अनुमान है। राज्य परिवहन मंत्रियों की वार्षिक बैठक में इस योजना पर व्यापक चर्चा हुई। दूरसंचार विभाग के साथ संयुक्त कार्यबल गठित किया गया है। वी2वी प्रणाली एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (एडीएएस) के साथ पूरी तरह एकीकृत होगी। प्रीमियम वाहनों में पहले से मौजूद सेंसर-आधारित फीचर्स को भी नए मानकों से जोड़ा जाएगा। दुर्घटना पीड़ितों के लिए कैशलेस इलाज योजना (1.5 लाख रुपये तक, 7 दिनों के लिए) को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जाएगा। वी2वी तकनीक के लाभ अत्यधिक व्यापक और दूरगामी हैं। कोहरे में बहु-वाहन टक्कर, रियर-एंड कोलिजन और स्थिर वाहनों से टकराव अब बड़ी संख्या में रोके जा सकेंगे। यातायात का प्रवाह सुचारू होगा, ईंधन की बचत होगी और वायु प्रदूषण में कमी आएगी। भारत जैसे विविध भूगोल वाले देश में—जहां पहाड़ी रास्ते, घुमावदार सड़कें, घना ट्रैफिक और मौसमी चुनौतियां आम हैं—यह प्रणाली विशेष रूप से उपयोगी साबित होगी। ड्राइवरों को अतिरिक्त प्रतिक्रिया समय मिलने से दुर्घटनाओं की गंभीरता कम होगी और जीवन रक्षा संभव होगी। कुल मिलाकर, यह तकनीक सुरक्षित, स्मार्ट और कुशल परिवहन प्रणाली की नींव रखेगी और नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देगी।

हालांकि, इस योजना के कार्यान्वयन में चुनौतियां भी हैं। प्रारंभिक लागत, पुराने वाहनों में उपकरण इंस्टॉलेशन, डेटा गोपनीयता की चिंता, साइबर खतरों का जोखिम और सभी वाहनों में समान मानकीकरण प्रमुख बाधाएँ हैं। सरकार ऑटोमोबाइल उद्योग, विशेषज्ञों और तकनीकी संस्थानों के साथ मिलकर इन समस्याओं का समाधान कर रही है। सफल परीक्षण और समयबद्ध क्रियान्वयन से इन चुनौतियों को प्रभावी ढंग से पार किया जा सकता है। इसके लिए व्यापक जनजागरूकता अभियान, प्रशिक्षित ड्राइवर प्रशिक्षण कार्यक्रम और सख्त नियमावली लागू करना आवश्यक होगा, ताकि रोलआउट सुचारु और सुरक्षित रूप से संभव हो सके।

इस तकनीक से न केवल दुर्घटनाओं की संख्या घटेगी, बल्कि अनगिनत परिवारों को दुख, पीड़ा और तबाही से भी बचाया जाएगा। यह देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाएगी और सामाजिक सुरक्षा के ढांचे को और अधिक सुदृढ़ और प्रभावी करेगी। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी की दूरदर्शिता और सरकार की सक्रियता अत्यंत सराहनीय है। अब समय आ गया है कि हम सभी इस तकनीक को अपनाएं और सुरक्षित यात्रा को अपनी आदत में बदलें। सुरक्षित सड़कें ही विकसित, समृद्ध और सुरक्षित भारत की असली नींव हैं। वी2वी तकनीक केवल एक योजना नहीं, बल्कि हर भारतीय के जीवन की सुरक्षा, संरक्षा और सुरक्षित भविष्य का दृढ़ संकल्प है।

भारत 2026 तक वी2वी तकनीक के रोलआउट से स्मार्ट, सुरक्षित और कुशल परिवहन की एक नई क्रांति की ओर कदम बढ़ाएगा। यह प्रणाली न केवल देश की सड़क सुरक्षा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मजबूती देगी, बल्कि वैश्विक स्मार्ट मोबिलिटी मानकों में भारत को नेतृत्व दिलाकर उसे अग्रणी बनाएगी। जीवन की रक्षा, आर्थिक बचत और पर्यावरणीय सुरक्षा के साथ यह तकनीक हर भारतीय नागरिक के लिए सुरक्षा और भरोसे का वास्तविक वादा है। वर्तमान समय की चुनौती और आवश्यकता यही है कि हम इसे अपनाएं, ताकि सुरक्षित सड़कें सुनिश्चित हों और हर व्यक्ति का जीवन संरक्षित रह सके।

पिंकी कुंडू

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार: श्री रजनीश गुप्ता, संयुक्त आयुक्त पुलिस, IFSO, दिल्ली पुलिस के नाम

आज का साइबर सुरक्षा विचार दिल्ली पुलिस के एक अधिकारी को समर्पित है, जिनके बारे में एक टेलीविज़न पत्रकार ने अनुभव साझा किया। उन्होंने बताया कि जब वे उनसे मिलने गए तो अधिकारी ने उन्हें और उनके साथी पत्रकार को चाय ऑफर की और कहा: "चाय पीते-पीते आप संचार साथी ऐप डाउनलोड कर लें—यह बहुत काम की चीज़ है।"

जी हाँ, मैं बात कर रहा हूँ श्री रजनीश गुप्ता, संयुक्त आयुक्त पुलिस, IFSO, दिल्ली पुलिस की।

यह रजनीश गुप्ता के समर्पण को दर्शाता है जो साइबर अपराध से लड़ने के लिए तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देने में अद्वितीय है, और संचार साथी ऐप के महत्व को भी उजागर करता है।

आज के साइबर सुरक्षा विचार में हम संचार साथी ऐप की उपलब्धियों पर चर्चा करेंगे जो इस आग्रह के साथ है कि आप सभी संचार साथी एप्प जरूर डाउनलोड करें।

संचार साथी एक नागरिक - केंद्रित पोर्टल है जिसे भारत सरकार के दूरसंचार विभाग (DoT) ने शुरू किया है। इसका उद्देश्य मोबाइल उपयोगकर्ताओं को सुरक्षा, धोखाधड़ी रोकथाम और पारदर्शिता के लिए उपकरण उपलब्ध कराना है।

यह पोर्टल आपको खोए/चोरी हुए मोबाइल फोन को ब्लॉक करने, अपने नाम पर जारी मोबाइल कनेक्शनों की जाँच करने और संदिग्ध धोखाधड़ी संचार की रिपोर्ट करने में मदद करता है।

CEIR के माध्यम से 44.31 लाख मोबाइल ब्लॉक किए गए।

- 27.43 लाख मोबाइल खोजे और वापस मिले।

- मोबाइल कनेक्शन जाँचने के लिए 310.36 लाख अनुरोध प्राप्त हुए।

- 277.53 लाख अनुरोध सफलतापूर्वक निपटाए गए।

- चक्षु के तहत 7.44 लाख धोखाधड़ी इनपुट प्राप्त हुए, जिन पर 41.72 लाख कार्रवाइयाँ की गईं।

संचार साथी की मुख्य विशेषताएँ

- खोए/चोरी हुए मोबाइल फोन ब्लॉक करें (CEIR):

- उपयोगकर्ता अपने हैंडसेट को दुरुपयोग से बचाने के लिए ब्लॉक कर सकते हैं।

- यदि फोन वापस मिल जाए तो उसे अनब्लॉक करने का विकल्प भी है।

अपने नाम पर मोबाइल कनेक्शन जानें (TAFCOP):

* यह जाँचें कि आपके पहचान पत्र पर कितने सिम कार्ड जारी किए गए हैं।

* अनधिकृत या धोखाधड़ी वाले कनेक्शनों का पता लगाने में मदद करता है।

मोबाइल हैंडसेट की वास्तविकता जाँचें: - सुनिश्चित करता है कि आपका उपकरण असली है और नकली या क्लोन नहीं है।

* चक्षु – संदिग्ध धोखाधड़ी संचार की रिपोर्ट करें: - नागरिक स्पैम, फ़िशिंग, हानिकारक लिंक या संदिग्ध कॉल की रिपोर्ट कर सकते हैं।

* DoT को धोखेबाज़ों के खिलाफ कार्रवाई करने में मदद करता है।

- अन्य सेवाएँ:

- अपने वायरलाइन इंटरनेट सेवा प्रदाता की पहचान करें।

- ऐसे अंतरराष्ट्रीय कॉल की रिपोर्ट करें जो भारतीय नंबर दिखाते हैं (स्पूफिंग)।

- दूरसंचार से जुड़ी विश्वसनीय संपर्क जानकारी प्राप्त करें।

जोखिम और नागरिक लाभ

- धोखाधड़ी रोकथाम: चोरी हुए फोन और सिम कार्ड के दुरुपयोग को रोकता है।

- पहचान सुरक्षा: अपराधियों को आपके नाम पर सिम जारी करने से रोकता है।

- पारदर्शिता: नागरिक दूरसंचार सेवाओं की जाँच कर सकते हैं।

- साइबर सुरक्षा: फ़िशिंग, स्पैम और धोखाधड़ी कॉल को कम करने में मदद करता है।

कैसे पहुँचें आप आधिकारिक पोर्टल यहाँ देख सकते हैं: Sanchar Saathi Portal

मोबाइल कनेक्शन जाँचने के लिए TAFCOP अनुभाग का उपयोग करें: TAFCOP – Know Connections

संचार साथी एक शक्तिशाली उपकरण है। यह सीधे मोबाइल से जुड़ी धोखाधड़ी को संबोधित करता है, जो सबसे तेज़ी से बढ़ते साइबर अपराध क्षेत्रों में से एक है।

RAJNEESH GUPTA
Joint Commissioner of Police,
IFSO Delhi Police

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

OCD: वो छिपा दुश्मन जो आपके अपनों को निगल रहा है—जानें लक्षण, समझें इलाज! (अवश्य पढ़ें, क्योंकि हमारे आसपास ही कोई पीड़ित हो सकता है, बस हम समझ नहीं

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

OCD यानी ऑब्सेसिव-कंपल्सिव डिसऑर्डर एक आम मानसिक स्वास्थ्य स्थिति है, जिसमें व्यक्ति के दिमाग में बार-बार अवांछित विचार (ऑब्सेशन्स) घूमते रहते हैं। इनसे छुटकारा पाने के लिए वो दोहराव वाले कार्य (कंपल्शन्स) करने लगता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, दुनिया भर में करीब 2-3% लोग इससे प्रभावित हैं — भारत में भी लाखों लोग चुपचाप जूझ रहे हैं।

शुरू में ये सामान्य आदत लगती है, लेकिन अनदेखी करने पर ये जीवन को कष्टदायक बना देती है।

पहचानें ये प्रमुख लक्षण — कहीं आपके अपनों में तो नहीं?

*बार-बार हाथ धोना या साफ-सफाई की जिद।

*चीजों को बारीकियां से व्यवस्थित करना, जैसे किताबें या कपड़े।

*रात में उठ-उठकर दरवाजे-खिड़कियां या गैस चेक करना।

*पैसे या कीमती सामान बार-बार गिनना।

*बीमारी, चोरी या हादसे के डर से प्रार्थना या मंत्र जप दोहराना।

ये लक्षण भय से उपजते हैं— जैसे 'गंदगी से बीमार हो जाऊंगा' या 'कहीं चोरी न हो जाए'। अगर ये आदतें 1 घंटे से ज्यादा समय लें या रोजमर्रा की जिंदगी बाधित करें, तो तुरंत सतर्क हों।

वास्तविक उदाहरण: एक महिला की सच्ची कहानी मैं एक महिला को जानती हूं, जो हाथ धोने की लत में फंस गई। शुरू में 5 बार, फिर 10... अब 50 बार रोज! सर्दियों में साबुन से हाथ फट गए, लेकिन वो रुक नहीं पाई। परिवार को लगा 'ओवररिएक्टिंग' कर रही है, लेकिन ये OCD था। इलाज न मिलने पर ये और बिगड़ जाता। आपका कोई अपना ऐसा तो नहीं?

चिंता न करें—इलाज संभव है! मनोचिकित्सक से संपर्क: दवाइयां (जैसे SSRI) और कॉग्निटिव बिहेवियरल थेरेपी (CBT) से 70% मामलों में सुधार होता है।

जल्दी शुरूआत: शुरुआती चरण में इलाज आसान, देर होने पर गंभीर हो सकता है। अगर जानते हैं तो डॉक्टर दिखाएं—ये कोई कमजोरी नहीं, बल्कि इलाज योग्य बीमारी है।

जीवनशैली से मजबूत बनें—ये अपनाएं

*नियमित व्यायाम: रोज 30 मिनट वॉक या जॉगिंग तनाव घटाए।

*स्वस्थ नींद और आहार: 7-8 घंटे सोएं, फल-सब्जियां बढ़ाएं।

*योग-ध्यान: 10 मिनट की प्रैक्टिस से विचारों पर काबू पाएं।

*जनहित सुझाव: तनाव कम करने वाली गतिविधियां अपनाएं।

*मदद चाहिए? info@counsellingwali.com पर ईमेल करें या समय लेकर मनोचिकित्सक से मिलें।

जागरूकता ही सबसे बड़ा हथियार है—शेयर करें, बचाएं!

सूखे और खुरदरे हाथ

सूखे और खुरदरे हाथों को चिकित्सकीय भाषा में ज़ेरोसिस क्यूटिस (Xerosis Cutis) या साधारण शब्दों में ड्राई स्किन कहा जाता है। यह समस्या तब होती है जब त्वचा से नमी (moisture) और प्राकृतिक तेल (natural oils) अत्यधिक मात्रा में निकल जाते हैं। इससे त्वचा की सुरक्षात्मक परत (skin barrier) कमजोर हो जाती है। हाथों में यह समस्या बहुत आम है, क्योंकि:

*हम बार-बार हाथ धोते हैं

*केमिकल्स, साबुन और डिटर्जेंट के संपर्क में आते हैं

*मौसम और पर्यावरण का सीधा असर हाथों पर पड़ता है

अधिकांश मामलों में कारण बाहरी होते हैं, लेकिन कभी-कभी यह किसी अंदरूनी बीमारी या त्वचा रोग का संकेत भी हो सकता है।

यदि सामान्य मॉइस्चराइज़र से भी सुधार नहीं हो, तो यह हैंड एक्ज़िमा (Hand Eczema) हो सकता है, जिसका इलाज अलग तरीके से किया जाता है।

मुख्य कारण

1. पर्यावरण और जीवनशैली से जुड़े कारण (सबसे आम)

*ठंडा या शुष्क मौसम सर्दियों में या रेगिस्तानी क्षेत्रों में हवा की नमी कम हो जाती है, जिससे त्वचा से पानी खिंच जाता है। हीटर और एसी भी हवा को और अधिक सूखा बना देते हैं।

*गर्मी के स्रोत फायरप्लेस, रूम हीटर, या रेडिएटर त्वचा की नमी तेजी से खत्म कर देते हैं।

*गर्म पानी से नहाना या तैराकी गर्म पानी त्वचा के प्राकृतिक तेलों को हटा देता है। क्लोरीन युक्त स्विमिंग पूल त्वचा की परत को नुकसान पहुंचाते हैं।

*कठोर साबुन और डिटर्जेंट एंटीबैक्टीरियल और खुशबूदार साबुन त्वचा की सुरक्षा परत को नष्ट कर देते हैं।

*धूप में ज्यादा रहना UV किरणें त्वचा को डिहाइड्रेट करती हैं और उसे खुरदरा बनाती हैं।

*बार-बार हाथ धोना स्वच्छता के लिए ज़रूरी है, लेकिन बिना मॉइस्चराइज़ किए बार-बार हाथ धोने से त्वचा की लिपिड परत टूट जाती है।

2. अंदरूनी स्वास्थ्य कारण कुछ बीमारियाँ त्वचा को स्वाभाविक रूप से ज्यादा सूखा बना देती हैं, जैसे:

*एक्ज़िमा (Atopic Dermatitis)

*सोरायसिस (Psoriasis)

*डायबिटीज

*थायरॉइड विकार

*एलर्जी

*बढ़ती उम्र (तेल का उत्पादन कम हो जाता है)

हैंड एक्ज़िमा जीवनकाल में लगभग 15% लोगों को प्रभावित करता है और अक्सर साधारण ड्राई स्किन जैसा दिखता है, लेकिन लंबे समय तक बना रहता है।

लक्षण (Symptoms)

*हाथ धोने के बाद खिंचाव महसूस होना

*त्वचा का खुरदरा या बेजान दिखना

*खुजली, लालिमा या जलन

*पपड़ी पड़ना या छिलना

*बारीक रेखाएँ या गहरी दरारें (कभी-कभी खून आना)

*गहरे रंग की त्वचा में सफेद/ग्रे राख जैसा दिखना

घरेलू उपाय (Home Remedies) - (हल्के मामलों में बहुत प्रभावी)

1. ऑलिव ऑयल – फैटी एसिड से भरपूर, त्वचा को पोषण देता है
2. नारियल तेल / बादाम / जोजोबा ऑयल – गहराई से मॉइस्चराइज़ करता है
3. शहद – प्राकृतिक ह्यूमेक्टेंट और एंटीबैक्टीरियल
4. एलोवेरा – ठंडक देता है और स्किन बैरियर मजबूत करता है
5. मलाई या दही – लैक्टिक एसिड मृत त्वचा हटाता है
6. केला या एवोकाडो – विटामिन्स से भरपूर प्राकृतिक मॉइस्चराइज़र
7. ओटमील – खुजली और सूजन शांत करता है
8. वैसलीन या देसी घी – गहरी दरारों के लिए सबसे अच्छे
9. विटामिन E ऑयल – घाव भरने में सहायक
10. सोने से पहले लगाकर सूती दस्ताने पहनना बहुत लाभदायक है।

बचाव के उपाय (Prevention Tips)

1. हल्के, खुशबू-रहित साबुन का प्रयोग करें
2. हाथ धोते ही मॉइस्चराइज़र लगाएँ
3. बर्तन या सफाई करते समय दस्ताने पहनें
4. सर्दियों में ह्यूमिडिफायर का उपयोग करें
5. हाथों पर भी सनस्क्रीन लगाएँ
6. पर्याप्त पानी पिएँ और विटामिन A, C, E युक्त भोजन लें
7. हफ्ते में एक बार हल्का एक्सफोलिएशन करें

नवीनतम चिकित्सा प्रगति (Latest Developments – 2026 तक) आधुनिक शोध त्वचा की बैरियर रिपेयर थेरेपी पर ज़ोर देता है। आजकल के बेहतरीन क्रीम्स में पाए जाते हैं:

1. सेरामाइड्स (Ceramides)
2. ग्लिसरीन
3. नायसिनामाइड
4. हायल्यूरोनिक एसिड
5. शीया बटर

2025 की बड़ी सफलता FDA ने डेल्गोसिटिनिब क्रीम (Anzupgo) को मंज़ूरी दी –

1. यह पहला टॉपिकल JAK इनहिबिटर है, जो मध्यम से गंभीर क्रॉनिक हैंड एक्ज़िमा में प्रयोग होता है, जब सामान्य इलाज असफल हो जाए।

2. यह दवा सीधे सूजन (inflammation) को नियंत्रित करती है और लंबे समय से परेशान मरीजों के लिए एक क्रांतिकारी कदम है।

हालिया अध्ययनों से यह भी पता चला है कि हैंड एक्ज़िमा पहले की तुलना में ज्यादा लोगों को प्रभावित कर रहा है, इसलिए समय पर पहचान और इलाज बेहद ज़रूरी है। 1. अधिकतर मामलों में नियमित देखभाल और सही मॉइस्चराइजिंग से हाथ फिर से मुलायम, स्वस्थ और सुंदर बन सकते हैं।

2. यदि समस्या लंबे समय तक बनी रहे, दरारें गहरी हों या खुजली-सूजन ज्यादा हो, तो त्वचा विशेषज्ञ (Dermatologist) से परामर्श अवश्य लें।

3. सतत देखभाल ही सुंदर और स्वस्थ हाथों की कुंजी है!

हींग 45 तरह के रोगों को दूर करती हैं

पिंकी कुंडू

{१} हींग का तड़का सब्जी या दाल में लगते ही उसका स्वाद बदल जाता है। हींग वह मसाला है, जी सभी को क्रियाशील या एक्टिव कर देती है। इसके सेवन से दूषित वायु का पेट से निष्कासन होता रहता है।

【२】 आयुर्वेदिक निघण्टु में उल्लेख है कि-दांतों-मसूढ़ों में दर्द है, तो 20 mg हिंग, लौंग 10 नग, इलायची 5 नग एवं सेंधानमक 2 ग्राम 100 मिलीलीटर पानी में उबालकर आधा रहने पर गुनगुने पानी से गरारे करें।

【3】 सुबह शाम अमृतम डेन्ट की मंजन

सुबह-शाम दांतों में 3 मिनिट तक लगाकर कुल्ला करें।

【४】 वैद्य विशारद स्वानुभव पुस्तक के एक फार्मूले के अनुसार- 100 mg चोखी हींग को आम मिंगी 20 ग्राम, कपूर 3 ग्राम कूटकर उसे 20 ML पुदीने के रस, 2 ग्राम सेंधानमक, 2 ग्राम कालीमिर्च, 10 ग्राम, 1 ग्राम अजवायन, 1 ग्राम कालादाना गुड़ और नीबू रस के साथ मिलाकर छोटी-छोटी गोलियां बनाकर सूखा लेवें।

सुबह एक गोली सादे जल से लेवें और 2 घण्टे तक जल के अलावा कुछ न लेवें।

यह गोली पेट की अनेक समस्या का अंत कर देती है। अफारा, गैस की तकलीफ, हैजा की बीमारी में फायदेमंद है।

【५】 हींग का सेवन से रक्त में कोलेस्ट्रॉल व ट्राई ग्लिसराइड को कम होकर हृदयगत रोगों से रक्षा होती है।

【६】 हींग में पाया जाने वाला क्यूमेरिन नामक तत्व में खून को पतला करने में गुणकारी है, इससे खून का थक्का नहीं बनता।

【७】 पुराने वैद्य गण हृदयगत विकारों में हिंवाष्टक चूर्ण का निरन्तर उपयोग कराते थे, जिससे वायु विर्सजन होता रहता था।

【८】 भारत भैषज्य ग्रन्थ के मुताबिक- 10 mg हींग को गुड़ में मिलाकर खाने पर हिचकी आना बंद हो जाती है।

【९】 स्वास्थ्य विशेषांक के हिसाब से- पेशाब आने में दिक्कत हो या मधुमेह से अधिक पीड़ित हों तो 100 मिलीग्राम हींग को जीरा, सौंफ के अर्क के साथ मिलाकर सुबह खाली पेट लेने से काफी राहत मिलती है।

【१०】 एक गिलास गर्म पानी में हीग मिलाकर पीने से यौन शक्ति में इजाफा होता है। इससे पुरुष और महिला के यौन अंगों में खून का दौरा बढ़ जाता है और यौन सम्बन्ध में रुचि बढ़ जाती है।

【११】 कैंसर नाशक हींग–हींग के नियमित उपभोग से कैंसर का खतरा घट जाता है। इसमें पाए जाने वाले ताकतवर एंटीऑक्सीडेंट के कारण फ्री रेडिकल से होने वाले नुकसान से बचाव होता है और इस प्रकार कैंसर होने की संभावना कम होती है।

【१२】 कीड़े का काटना–मकड़ी या किसी कीड़े के काटने या डंक मारने पर पके केले के टुकड़े के साथ चुटकी भर हिंग निगलने से दर्द और सूजन में आराम आता है।

【13】 मधुमक्खी डंक मार दे तो हिंग को पानी में घिस पर गाढ़ा पेस्ट बना कर लगाने से आराम मिलता है।

【१४】 महर्षि चरक के अनुसार हींग का सब्जी, दाल में नित्य उपयोग दमा के रोगियों के लिए रामबाण औषधि है।

【१५】 स्त्री विकारों का असरकारक–महिलाओं के मासिकधर्म की तकलीफों का अंत-तुरन्त... 20 मिलीग्राम शुद्ध हींग भुजंकर, 10 मुनक्के, 5 छोटी हरड़, 5 ग्राम मेथीदाना, 3 ग्राम कस्तूरी मैथी, जीरा, सौंफ, मुलेठी 1-1 ग्राम व काला नमक सबको एक गिलास पानी में मिला कर रात्रि में किसी मिट्टी के पात्र में रात भर गलने दें।

सुबह इसे आधा रहने तक उबाले। एक महीने इस काढ़े को नियमित सुबह खाली पेट पीने से लिकोरिया, सफेद पानी की शिकायत, पीसीओडी जैसा भयंकर रोग भी जड़ से दूर हो जाता है।

【१६】 हींग से सेवन से अनेक अज्ञात मासिक धर्म सम्बंधित परेशानियाँ जैसे- माहवारी के समय होने वाला पेटू, पेट दर्द, कमरदर्द एवं अनियमितता आदि में कारगर चिकित्सा है।

【१७】 गजब की सुंदरता बढ़ाने के लिए यह घरेलू उपाय कारगर है। इसे 13 साल की बच्ची से 50 वर्ष तक महिलाओं को लेना हितकारी है।

" विशेष-जिन महिलाओं की योनि में ढ़ीलापन आ गया हो, उन्हें 100 mg हींग में 5 ग्राम मेथीदाना, नागकेशर 500 mg और 10 ग्राम मुल्तानी मिट्टी किसी कपड़े में बांधकर रात मको योन्य के अंदर रखें। इससे योनि की बदबू भी मिट जाती है। सुबह कपड़े को फेंक देंवें।

【१८】 शुद्ध हींग पानी में 4 से 5 घण्टे तक घोलने पर सफेद हो जाती है।

【१९】 माचिस की जलती हुई तीली हींग के पास लाने से चमकदार लौ निकलती है तथा यह पूरी तरह जल जाती है।

【२०】 आमतौर पर बाजार में मिलने वाली पिसी या खड़ी, दरदरी हींग में गोंद, चावल का आटा या स्टार्च, मिलाते हैं, ताकि कड़वापन कम हो सके।

【२१】 हींग को तेज गरम देशी घी में भुजंकर आयुर्वेदिक दवाओं में उपयोग किया जाता है।

【२२】 हींग पाचनतंत्र को ठीक करने में बहुत लाभकारी छोटे बच्चों के पेट फूलने पर या जब पेट में वायु की तकलीफ होती है, तो हींग को पानी में घोल कर पेट पर लेप लगाने से तुरन्त राहत मिलती है।

【23】 कफ-खासी की श्रेष्ठ ओषधि हींग–।।

छाती में जमा कफ निकालने के लिए हींग के साथ त्रिफला, सेंधानमक, शहद और अदरक का रस मिलाकर जल सहित मंदी आंच में पाककर सुबह खाली पेट लेने से कुकर खाँसी, अस्थमा तथा सूखी खांसी भी ठीक हो जाती है।

【२४】 जिद्दी खांसी का रामबाण फार्मूला–

पुरानी से पुरानी जिद्दी खांसी जड़ से मिटाने का एक अवधूत साधु द्वारा बताया गया एक टोटका या उपाय जरूर आजमाएं। तीन दिन करें यह

घरेलू उपाय-पहले मिट्टी का छोटा मटका लेकर उसकी बाहरी साथ पर हींग के पानी का लेप करके सूखा लें।

रात को सोने से एक घण्टे पहले तीन छुहारे कूटकर 200 ग्राम गुठली सहित लेकर दूध में इसी मिट्टी के मटके में अच्छी तरह ओटाएँ। गुनगुना रहने पर केवल दूध पीकर, बचे छुआरे को फ्रिज में रखें।

दूसरी रात इसी छुआरे में दूध डालकर फिर उबाले और दूध अकेला पीकर छुआरे फ्रिज में रख देंवें। तीसरी रात बचे छुआरों में फिर दूध मिलाकर उसी मटके में उबाले तथा छुआरे सहित दूध का सेवन करें।

तीनों दिन दूध पीने के बाद पानी नहीं पियें।

दूध उबालने के बाद मटके को रोज पानी से धोकर-साफ करके उल्टा करके रखें। दूसरे दिन पुनः हींग के पानी से लेप कर, दूध उबालें।

तीनों दिन दूध पीने के बाद पानी नहीं पीना है।

परहेज- रात में दही, अरहर की दाल नहीं खाएं।

【२५】 हींग दीपण, पाचन, वातानुलोमक होती है।

【२६】 कफ की दुगन्ध दूर करती है।

【२७】 सूखे कफ को ढिला कर बाहर निकाल कर फेफड़ों के संक्रमण को मिटा देती है।

【२८】 वात नाड़ियों को बलदायक है।

【२९】 हींग गर्भाशय संकोचक होती है।

【३०】 हींग पेट के सूक्ष्म कृमि, कीड़े का नाशकर खुजली, सफेद दाग, दाद में लाभकारी है।

【३१】 हींग मधुमेह जैसे रोगों को पसीने द्वारा निकालकर प्रतिहार करती है।

【३२】 हींग को देशी घी में भुजंकर लेने से कभी उल्टी जैसा मन नहीं होता।

{33} अमाशय (Stomach) आंतों की शिथिलता, कमजोरी, चिकनापन हींग के सेवन से कम होता है। हिंग्वाष्टक चूर्ण बहुत ही लाभकारी है।

【३४】 विषमज्वर में प्रतबन्धन कई दृष्टि से अन्न के साथ हींग का व्यवहार किया जाता है।

【३५】 महिलाओं को प्रसव के बाद इसके उपयोग से आर्तवशुद्धि होती है।

【३६】 बार बार होने वाले गर्भपात को रोकने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता था।

【३७】 गर्भ रुकते ही ६ग्राम हींग की ६० गोलियां बनाकर प्रारम्भ में एक गोली दिन में 2 बार देते थे। बाद में हर माह मात्रा बढ़ाते हुए 10 गोली रोज देते थे। और 6 महीने बाद इसकी मात्रा कम करते जाते थे।

【३८】 36 गढ़ के नागलोक, फुंकार आदि ग्रामीण नामक स्थान में नारियल के दूध में हींग को बहुत उबालकर सर्पदंश के स्थान पर लगाते हैं।

【३९】 किसी विषैले कीड़े के काटने पर ओझा लोग हींग का पानी नाक में टपकाते हैं।

【४०】 बिच्छू के काटने पर हींग लगाने से दर्द व जहर कम होता है।

【४१】 बच्चों के पेट फूलने पर हींग को पानी में उबालकर पेट में लगाने से आध्मान शूल दूर होता है।

【४२】 हींग को अफीम के साथ मिलकर उसे भयंकर दांत या मसूढ़ों पर लगाने से तुरन्त राहत मिलती है। इसे गड्ढे में रखें।

【४3】 हींग, सेंधानमक तथा लहसुन तीनों को मिलाकर तेल बनाकर कर्णरोग, बहरापन, कमसुनाई पड़ना आदि दूर होते हैं।

【४४】 नाक में फुंसी होने पर हींग के साथ गीला चुना मिलाकर लगाने से फुंसी बेथ जाती है।

【४५】 अघोरी की तिजोरी से बालों के लिए चमत्कारी उपाय–

घर में ही बनाएं...हींग हर्बल हेयर क्वाथ....

एक मिट्टी का नया मटका लेकर उस पर 10 दिन तक रोज हींग का अंदर-बाहर लेप लगाकर सुखाएं। यह पात्र शुद्ध हो जाएगा।

"इस मिट्टी के पात्र में 10 दिन बाद अमृतम आंवला चूर्ण, अमृतम बहेड़ा चूर्ण, अमृतम त्रिफला चूर्ण, अमृतम भृङ्गराज चूर्ण, सभी एक-एक चम्मच। शिकाकाई, अनंतमूल, निलिनी पत्ती सभी 20-20 ग्राम सबको मिलाकर लगभग 1 लीटर पानी में 12 घण्टे भिगोकर रखें। इसके बाद इसे एक चौथाई रहने तक उबालकर छान लेवें।

"छने हुए काढ़े में अलसी के बीज उबालकर उसका रस निकालें। निकले हुए रस में आधा चम्मच नारियल तेल, नीलगिरी तेल, हेम्प ऑयल सभी को मिलाकर अच्छी तरह फेंटकर बालों में लगाकर एक दिन सूखने देंवें। फिर सादे जल या अमृतम हेयर थेरेपी शेम्पू से बाल धोकर हल्की धूप में सुखाएं।

"हींग हर्बल क्वाथ के फायदे-

बालों का कोई भी रोग, कीड़ा लग्न, बाल पतले होना, झड़ना-टूटना, रंग फीका पड़ना, रफ होना, जूं, रूसी, खुजली आदि विकार इसके उपयोग से 7 से 10 बार लगाने पर ठीक हो जाते हैं।

कुन्तल केयर हर्बल मॉल्ट का तीन महीने सेवन करें, ताकि पाचनतंत्र की गड़बड़ी से उत्पन्न केशरोग ठीक हो सकें।

आस पराई जो करे, जो होतन ही मर जाये...

दुनिया को हींग देने वाला भारत अभी दूसरे देशों के भरोसे बैठा है। भारत की बहुत सी जनता "हींग खाकर केवल हिंगने के अलावा दूसरी चीजों पर ज्यादा ध्यान नहीं देती। यह दुःख का भी विषय है।

कभी बादाम केर्लीफोनिया से आयात होता था, अब भारत बहुत आत्म निर्भर हो रहा है। यहां मान्यता है कि बादाम खाने से अक्ल आती है, लेकिन गुरुजन बताते हैं कि-ठोकर, धोखा खाने से भी अक्ल आ जाती है। अच्छी गर्व की बात यह है कि-भारत के बादाम की अनेक देशों में मांग बढ़ रही है।

लोगों को शायद कम पता होगा कि हींग घर या किसी उद्योग में निर्मित नहीं जाती बल्कि यह हींग के वृक्षों से प्राप्त होता है। आपको यह जानकार आश्चर्य होगा कि दुनिया में सर्वाधिक हींग का प्रयोग भारत में सबसे ज्यादा होता है लेकिन उत्पादन न के बराबर.....? हींग भारत में बहुत ही कम मात्रा में पैदा होता है।

किसी जमाने में आगरा शहर हींग के कारोबार में विश्वविख्यात था। आज भी "आगरा में हींग की मंडी" के नाम से पूरा एक बाजार है लेकिन अब व्यापार उतना नहीं होता।

उत्तरप्रदेश के हापुड़-हाथरस की हींग वर्तमान में सबसे सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। हाथरस के लोहट बाजार अकेले में हींग को साफ-शुद्ध, प्रॉसेस करने वाली करीब 65 से अधिक यूनिट स्थापित है। यहां लगभग 1000 करोड़ का कारोबार हिंग से होता है।

हींग के धंधे का बहुत बड़ा बाजार है- देश की राजधानी दिल्ली। यहां खारी बाबड़ी इलाका बहुत बड़ी मंडी बन चुका है।

हींग तेरे नाम अनेक....

हिंदी- हींग, बंगाली- हिंगु।

मराठी- हिंग। तेलगु- इङ्गव, इंगुरा।

ता.- पेरूँगीयम, पेरुग्यम,

कन्नड़- हिंगु।

फारसी- अंगुजह, अंगुजा, अंधुजेह-इलरी।

गुजराती- हिंगड़ो, वधारणी, हिंग वधारणी।

अरबी- हिल तीत, हिलतीस।

अंग्रेजी में हींग को असेफीटिडा (Asafoetida)

कहते हैं। हिंग लेटिन भाषा में नाम –फेरूला नार्थेक्स (Ferula foetida Regel) है।

बाजार में बिक्रय होने वाली हिंग के नाम...

चोखी हींग, हीरा हींग, राब हींग, तलाव हींग अच्छी मानी जाती है।

हींग सर्वप्रसिद्ध वस्तु एक मुस्लिम विदेशी पेड़ का निर्यास यानि रस है। हिंग की अनेक जातियां है और विभिन्न स्थानों पर होती हैं।

देश दुनिया में सही हिंग की जानकारी न होने पर 90 फीसदी मिलावटी हिंग बिकती है। शुद्ध हींग की कीमत लगभग 40 से 50000/- रुपये किलो है। अमृतम के सभी उत्पादों में शुद्ध हिंग का ही उपयोग या मिश्रण किया जाता है।

हींग में कई तरह के विटामिन, खनिज जैसे कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, केरोटीन, राइबोफ्लेविन, और नियासिन आदि होते हैं।

हींग में फेरूलिक एसिड नामक फीटो केमिकल की अधिक मात्रा का होना इसके औषधीय गुण का मुख्य कारण होता है।

फेरूलिक एसिड में एंटी कैंसर, एंटी इंफ्लेमटरी, एंटी ट्यूमर, एंटी वायरल, एंटी बेक्टिरियल, एंटी स्पास्मोडिक, तथा एंटीऑक्सीडेंट गुण समाहित रहते है।

प्रत्येक वृक्ष से ०० से ५०० ग्राम हींग मिल सकती है। देशी हींग की अपेक्षा काबुली हींग सर्वश्रेष्ठ होती है।

हींग के दो प्रकार हैं- एक हींग काबूली सुफाइद (दुधिया सफेद हींग) और दूसरी हींग लाल। हींग का तीखा व कटु स्वाद है और उसमें सल्फर की मौजूदगी के कारण एक अरुचिकर तीक्ष्ण गन्ध निकलता है।

मिलावटी हींग के बारे में जाने,,,,,

हींग में कंकड़, बालू, मिट्टी, मूल के टुकड़े, गोदन्ती, बबूल गोंद, आटा आदि मिलाया जाता है। कभी-कभा जिन के कपड़े को वार्निश लगाकर डली बनाकर बेचते हैं।

हींग के वृक्ष से दूधिया रंग रबड़ की तरह जैसा पदार्थ निकलता है, जिसे धूप में सुखाने के बाद जो गोंद बन जाता है यही हींग है।

बंधानी हींग (Compounded Asafoetida) शुद्ध हींग न होकर निम्नलिखित घटको का मिश्रण होती है:

हींग 30%, मैदा, चावल का आटा, अरबी गोंद।

शुद्ध हींग बहुत तीक्ष्ण होता हे अतः इसे गेहूं के आटे मे मिलाकर तैयार करते हे।

हींग का महत्व व मसाले की कुछ विचित्र बातें...

जिस प्रकार रिश्तों में धर्मपत्नी के भाई अर्थात साले का योगदान होता है, वैसे ही मसाले में हींग का है। बस, हिंग का महत्व थोड़ा कम है और साले का दम से है। हींग गुम पेट में तहलका मचा देता है और साला कभी-कभा खुशी में गम ला देता है। कई बार दुःख में साथ भी निभाता है।

बुजुर्ग लोग कहते थे- हींग रखने वाला, ...आला गन्ध से महकता बहुत है और दीवाल खराब कर देता है। सालों के लिए यह कहावत सबने सुनी ही होगी कि-

दीवार बिगाड़ी आलों ने, घर बिगाड़ा सालों ने।

इसका मतलब या अर्थ वही बता पायेगा, जिसने अनुभव लिया होगा।

हजारों वर्ष पूर्व भारत में सर्वाधिक हींग उत्पादक देश था, लेकिन लुटेरे सिकन्दर ने भारत में बहुत तबाही मचाकर अनेक संस्कृतियों को जड़ मूल से नष्ट कर दिया था।

इन हींग पौधों को जड़मूल से नष्ट कर बहुत से पौधे अपने साथ ले गया था। अधिकांश मुस्लिम लुटेरों को भारत के इतिहास में महान बताया, पढ़ाया जाता है जबकि उसने भारत को जमकर लुटा। उत्पात मचाया। बलात्कार किये। मन्दिर तोड़े और जाने कितना अनिष्ट किया। फिर कहते हैं सिकन्दर महान था।

हींग मुख्यतः काबुल, हिरात, खुरासान, फारस एवं अफगानिस्तान और ईरान में पैदा होता हैं। इस पेड़ से एक भयंकर गन्ध युक्त गाढा दूध निकलता है, जो रबड़ की तरह खिंचता से महसूस होता है। हींग के बारे में एक रोचक तथ्य यह भी है कि हींग की तीक्ष्ण गंध के कारण इसे शैतान की लीद (डेविल्स डुंग/Devil's Dung) भी कहा जाता है।

हींग के पौधे 2 से 3 सेंटीमीटर तक ऊंचा होता है। पत्ते अनेक भागों में विभक्त, अजमोद या अजवायन के पत्तों के समान कटे किनारे वाले तथा 30 से 60 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। इन पौधों से निकला दूध इसे रेज़ीन कहते हैं।

हींग एक बारहमासी शाक है। इस पौधे के विभिन्न वर्गों के भूमिगत प्रकन्दों व ऊपरी जडों से रिसनेवाले शुष्क वानस्पतिक दूध को हींग के रूप में प्रयोग किया जाता है।

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंकज्योतिष, रंग और ग्रह ऊर्जा: रंगों द्वारा भाग्य को सक्रिय करने की कला

डॉ. पूजाप्रसून एन
गोल्ड मेडलिस्ट
09599101326, 07303855446

अंकज्योतिष एक प्राचीन रहस्य विज्ञान है, जो यह बताता है कि किस प्रकार संख्याएँ और ग्रह मानव जीवन को सूक्ष्म ऊर्जा तरंगों के माध्यम से प्रभावित करते हैं। जैसे प्रत्येक अंक की अपनी एक विशिष्ट कंपन शक्ति होती है, वैसे ही हर रंग भी एक विशेष ऊर्जा और प्रभाव लेकर आता है।

जब अंक, ग्रह और रंग एक सही सामंजस्य में आते हैं, तो वे जीवन में संतुलन, सफलता और सुख लाने वाले शक्तिशाली साधन बन जाते हैं।

अंकज्योतिष में शुभ रंगों का चयन संयोग से नहीं होता। प्रत्येक अंक किसी न किसी ग्रह द्वारा शासित होता है और हर ग्रह की अपनी विशिष्ट रंग-तरंग होती है।

इन रंगों का सचेत उपयोग करके

* हम अपने अनुकूल ग्रहों को मजबूत कर सकते हैं,
* कमजोर ग्रहों की बाधाओं को शांत कर सकते हैं और
* जीवन में सकारात्मकता आकर्षित कर सकते हैं।

अंक ज्योतिष में रंगों का कार्य सिद्धांत:- रंग हमारे जीवन को तीन स्तरों पर प्रभावित करते हैं:

1. शारीरिक स्तर – स्वास्थ्य, ऊर्जा और शक्ति पर प्रभाव

2. मानसिक स्तर – विचार, आत्मविश्वास और भावनाओं पर प्रभाव

3. ऊर्जा स्तर – जन्मांक से जुड़े ग्रहों को सक्रिय करना

जब कोई व्यक्ति अपने शुभ रंगों को वस्त्र, सजावट या दैनिक उपयोग की वस्तुओं में अपनाता है, तो उसका अवचेतन मन उस ऊर्जा से तालमेल बिठा लेता है।

समय के साथ यह प्रक्रिया * व्यक्तिगत शक्तियों को जागृत करती है और * ग्रह दोषों से उत्पन्न समस्याओं को कम करती है।

ग्रहों के उपाय के रूप में रंग अंकज्योतिष में ग्रह केवल आकाशीय पिंड नहीं, बल्कि ऊर्जा के जीवंत स्रोत हैं।

जब कोई ग्रह कमजोर या असंतुलित होता है, तो उसका प्रभाव

* जीवन में विलंब,
* तनाव,
* स्वास्थ्य समस्या या
* संबंधों में कठिनाई के रूप में दिखाई देता है।

*** ऐसे में रंग प्रभावशाली उपाय का कार्य करते हैं।**

*** रंग उपायों की विशेषता यह है कि**

* ये सुरक्षित और सरल होते हैं
* रोजमर्रा के जीवन में आसानी से अपनाए जा सकते हैं
* हर आयु वर्ग के लिए उपयुक्त होते हैं
* सूक्ष्म ऊर्जा स्तर पर प्रभाव डालते हैं

ग्रह अनुसार शुभ रंग और उनका प्रभाव:-

1. सूर्य (अंक 1) – नेतृत्व, आत्मबल, सफलता

*** रंग:** लाल, नारंगी, सुनहरा
*** उपयोग:-**
1. रविवार को लाल या नारंगी वस्त्र पहनें,
2. केसर का तिलक लगायें और
3. खाने में भी केसर एवं अन्य सूर्य ग्रह के रंगों से संबंधित खाद्य पदार्थ का प्रयोग कर सकते है।
4. सुनहरे रंग के आभूषण अपनाएँ
5. कार्यस्थल में इन रंगों का प्रयोग करें,
6. पूर्व दिशा में इन रंगों का इस्तेमाल कर सकते हैं।
*** लाभ:** आत्मविश्वास, मान-सम्मान और नेतृत्व शक्ति में वृद्धि।

2. चंद्र (अंक 2) – भावनाएँ, शांति, मन की स्थिरता

*** रंग:** सफेद, चाँदी, मोती रंग
*** उपयोग:**
1. सोमवार को सफेद वस्त्र धारण करें,
2. चाँदी धारण करें तथा
3. सफेद रंग के खाद्य पदार्थ जैसे दूध इत्यादि का सेवन करें एवं दान करें।
4. हल्के रंगों की चादरें सफेद और सिल्वर रंगों की वस्तुओं का प्रयोग।
5. ध्यान स्थल में सफेद सजावट।
*** लाभ:** मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन।

3. गुरु (अंक 3) – ज्ञान, विस्तार, समृद्धि

*** रंग:** पीला, केसरिया और परपल रंग
*** उपयोग:-**
1. गुरुवार को पीला पहनें,
2. केसर का तिलक लगायें और
3. खाने में भी केसर एवं अन्य गुरु ग्रह के रंगों से संबंधित खाद्य पदार्थ का प्रयोग कर सकते है।
4. अध्ययन सामग्री में पीला रंग का इस्तेमाल करें।
5. पीले फूलों का प्रयोग करें।
*** लाभ:** शिक्षा, धन और सकारात्मक सोच में वृद्धि।

4. राहु (अंक 4) – स्थिरता, नवाचार, नई सोच

*** रंग:** इलेक्ट्रिक नीला, स्लेटी
*** उपयोग:**
1. ऑफिस में नीले रंग का प्रयोग करें एवं नीली वस्तुओं का दान कर सकते हैं जैसे नीले कंबल इत्यादि।
2. महत्वपूर्ण बैठकों में स्लेटी रंग का इस्तेमाल कर सकते हैं।
*** लाभ:** फोकस, मौलिकता और व्यवहारिक बुद्धि

5. बुध (अंक 5) – बुद्धि, व्यापार, संवाद

*** रंग:** हरा, हल्का हरा
*** उपयोग:-**
1. बुधवार को हरे वस्त्र धारण करें।
2. हरे पौधे लगाये।
3. हरी स्टेशनरी का प्रयोग करें, हरे रंग की कलम इत्यादि।
4. हरी वस्तुओं का दान और
5. खाने में हरे खाद्य पदार्थों का प्रयोग करें जैसे हरी सब्जियाँ फल इत्यादि।
*** लाभ:** व्यापार, संवाद और निर्णय क्षमता में सुधार

6. शुक्र (अंक 6) – प्रेम, सौंदर्य, संतुलन

*** रंग:** गुलाबी, हल्का नीला, सफेद
*** उपयोग:-**
1. शुक्रवार को शुक्र के रंगों का प्रयोग करें।
2. शयनकक्ष में पेस्टल शेड कर सकते हैं
3. अपने आस पास ताजे सुगंधित फूलों को रख सकते हैं।
*** लाभ:** रिश्तों में मधुरता और ऐश्वर्य।

7. केतु (अंक 7) – आध्यात्म, अंतर्ज्ञान

*** रंग:** स्मोकी ग्रे, हल्का पीला, ब्राउन, काला सफेद
*** उपयोग:-**
1. ध्यान के समय हल्के रंग का प्रयोग करें।
2. पूजा स्थल में शांत रंगों का प्रयोग करें
3. केतु संबंधित रंगों का दान करें जैसे काला सफेद कंबल, काला सफेद तिल का दान इत्यादी
*** लाभ:** आत्मिक स्पष्टता और गहन अंतर्ज्ञान।

8. शनि (अंक 8) – कर्म, अनुशासन, स्थायित्व

*** रंग:** गहरा नीला, काला
*** उपयोग:-**
1. शनिवार को गहरा नीला रंग का प्रयोग करें, नीले रंग के वस्त्र धारण कर सकते हैं
2. काले रंग की वस्तुओं का दान करें।
*** लाभ:** धैर्य, कर्म शक्ति और दीर्घकालिक सफलता।

9. मंगल (अंक 9) – ऊर्जा, साहस, क्रिया

*** रंग:** लाल, गहरा लाल
*** उपयोग:-**
1. मंगलवार को लाल वस्त्र धारण करे,
2. व्यायाम या प्रतिस्पर्धा के समय लाल रंग का प्रयोग करें
3. लाल रंग की वस्तुओं का दान एवं रक्त दान करें
4. लाल तिलक लगायें।
*** लाभ:** साहस, शक्ति और आत्मबल।

दैनिक जीवन में रंगों का प्रयोग कैसे करें:-

1. वस्त्र और आभूषण
2. घर व ऑफिस की सजावट
3. मोबाइल वॉलपेपर
4. अध्ययन और कार्य सामग्री
5. बिस्तर, परदे और कुशन

नियमित और सजग उपयोग से रंग ऊर्जा को सक्रिय करने लगते हैं।

मजबूत और कमजोर ग्रहों का संतुलन:-

1. कमजोर ग्रह: उसके रंग का अधिक प्रयोग,

2. अत्यधिक सक्रिय ग्रह: उसी रंग का हल्का शेड का प्रयोग और उन्ही रंगों की वस्तुओं का दान,

3. विरोधी ग्रह: अलग-अलग दिनों में रंगों का प्रयोग।

निष्कर्ष:- अंकज्योतिष हमें सिखाता है कि जीवन कंपन ऊर्जा का खेल है और रंग उन कंपन को संतुलित करने का सबसे सरल साधन हैं। जब हम अपने शुभ रंगों और ग्रहों की ऊर्जा को समझकर जीवन में अपनाते हैं, तो परिस्थितियाँ धीरे-धीरे हमारे पक्ष में होने लगती हैं।

सही तरीके से उपयोग किए गए रंग सिर्फ देखने की वस्तु नहीं रहते बल्कि जीवंत उपाय बन जाते हैं, जो हमें सफलता, सुख, शांति और आध्यात्मिक पूर्णता की ओर ले जाते हैं।

युगों का वचन: जब हनुमान जी ने उठाया था गोवर्धन

पिंकी कुंडू

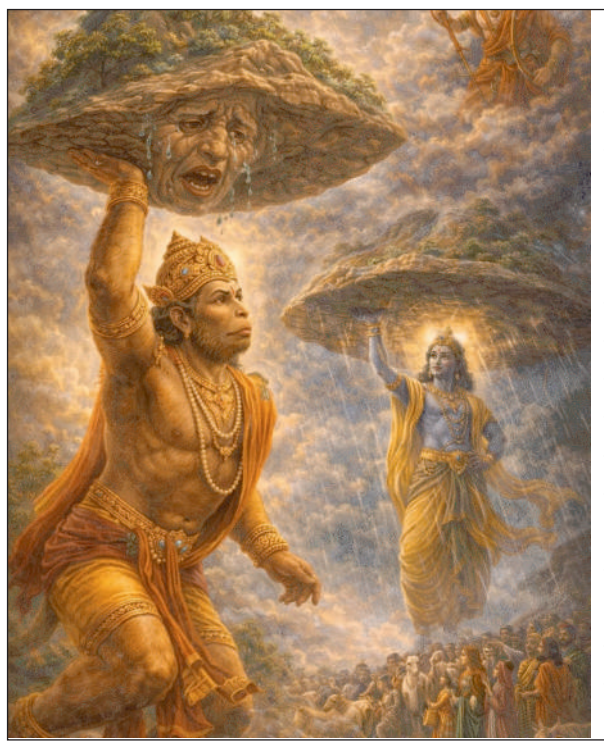

गोवर्धन को छूते ही हनुमान जी का आधा शरीर पाषाण (पत्थर) जैसा कठोर और सुन्न होने लगा। उसी क्षण पर्वतराज गोवर्धन ने गंभीर वाणी में कहा:
"हे वानर! तुम्हारी यह धृष्टता कैसे हुई? मैं कोई साधारण शिला नहीं हूँ। देवगण भी मुझे नमन करते हैं। मुझे बिना अनुमति स्पर्श करने का साहस तुमने कैसे किया?"
हनुमान जी, जो स्वयं रुद्रावतार हैं, मुस्कुराए। उनका शरीर वज्र का था, वे चाहते तो अपनी शक्ति से पर्वत को चकनाचूर कर सकते थे या बलपूर्वक ले जा सकते थे। पर वे रामदूत थे, विनय उनकी शक्ति थी।

त्रेता का अधूरा वचन, द्वापर में हुआ पूरा

हम सभी जानते हैं कि भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी कनिष्ठा (छोटी) उंगली पर गोवर्धन पर्वत को धारण किया था। किन्तु, बहुत कम लोग जानते हैं कि श्रीकृष्ण से पहले, त्रेतायुग में पवनपुत्र हनुमान जी ने भी गोवर्धन पर्वत को उठाया था।

यह कथा उस 'वचन' की है, जिसने भगवान को एक युग बाद वापस आने पर विवश कर दिया।

1. रामसेतु निर्माण की चुनौती

त्रेतायुग का समय था। प्रभु श्रीराम की वानर सेना रामेश्वरम के तट पर खड़ी थी। समुद्र पर सेतु (पुल) बनाने का कार्य जोरों पर था। नल और नील के नेतृत्व में वानर और भालू छोटे-बड़े पत्थर ला रहे थे।

* तभी वानर सेना में एक चर्चा छिड़ी—"यह महासागर इतना विशाल और गहरा है। छोटे-छोटे पत्थरों से इसे पाटने में तो वर्षों लग जाएंगे। यदि हमें लंका शीघ्र पहुँचना है, तो हमें विशालकाय पर्वतों की आवश्यकता है।"

* यह सुनते ही संकटमोचन हनुमान जी ने विचार किया, ₹प्रभु का कार्य रुकना नहीं चाहिए।₹ उन्होंने उत्तर दिशा की ओर उड़ान भरी, ज9हाँ विशाल पर्वतों का राजा 'गोवर्धन' स्थित था।

2. हनुमान जी और गोवर्धन का संवाद

हनुमान जी वायु वेग से द्रोणाचल पर्वत की श्रृंखलाओं में पहुंचे। वहां उन्होंने परम तेजस्वी और विशाल गोवर्धन पर्वत को देखा। समय कम था, इसलिए हनुमान जी ने तुरंत गोवर्धन को उठाने के लिए जैसे ही स्पर्श किया, एक अद्भुत घटना घटी।

*** शाप या परीक्षा?**

* गोवर्धन को छूते ही हनुमान जी का आधा शरीर पाषाण (पत्थर) जैसा कठोर और सुन्न होने लगा। उसी क्षण पर्वतराज गोवर्धन ने गंभीर वाणी में कहा:

* "हे वानर! तुम्हारी यह धृष्टता कैसे हुई? मैं कोई साधारण शिला नहीं हूँ। देवगण भी मुझे नमन करते हैं। मुझे बिना अनुमति स्पर्श करने का साहस तुमने कैसे किया?"

* हनुमान जी, जो स्वयं रुद्रावतार हैं, मुस्कुराए। उनका शरीर वज्र का था, वे चाहते तो अपनी शक्ति से पर्वत को चकनाचूर कर सकते थे या बलपूर्वक ले जा सकते थे। पर वे रामदूत थे, विनय उनकी शक्ति थी।

* हनुमान जी ने हाथ जोड़कर विनम्रता से कहा:

* ₹हे गिरिराज! मैं अपनी शक्ति के प्रदर्शन के लिए नहीं आया हूँ। मैं तो रघुकुल शिरोमणि प्रभु श्रीराम का सेवक हूँ। मैं चाहूँ तो आपको जबरन ले जा सकता हूँ, किन्तु मैं आपसे भिक्षा मांगता हूँ। प्रभु का कार्य रुका हुआ है, कृपया मेरे साथ चलिए और सेतु का हिस्सा बनकर धन्य हो जाइए।₹

3. गोवर्धन की शर्त और हनुमान का वचन 'श्रीराम' का नाम सुनते ही गोवर्धन का क्रोध कपूर की तरह उड़ गया। उनका मन द्रवित हो गया। वे बोले: "हनुमान! यदि कार्य प्रभु श्रीराम का है, तो मैं चलने को तैयार हूँ। मेरा जन्म ही शायद इसीलिए हुआ है। परन्तु, मेरी एक शर्त है।"

* हनुमान जी ने पूछा—"क्या शर्त है पर्वतराज?"

* गोवर्धन ने कहा—"मैं तुम्हारे साथ तभी चलूंगा जब तुम मुझे वचन दोगे कि स्वयं प्रभु श्रीराम अपने कर-कमलों से मेरा स्पर्श करेंगे। मैं उनके चरणों की धूलि और उनके हाथों का स्पर्श पाना चाहता हूँ।"

* हनुमान जी ने तुरंत वचन दिया—"मैं वचन देता हूँ गिरिराज! प्रभु आपको अवश्य स्पर्श करेंगे।" और फिर हनुमान जी ने उस विशाल पर्वत को अपनी हथेली पर उठा लिया और आकाश मार्ग से दक्षिण की ओर उड़ चले।

4. विधि का विधान और अधूरा सफर

हनुमान जी गोवर्धन को लेकर उड़ ही रहे थे कि रास्ते में (ब्रज मंडल के ऊपर) उन्हें एक आकाशवाणी सुनाई दी या विभीषण जी का संदेश मिला: ₹सेतु बंध गया है! अब और पर्वतों की आवश्यकता नहीं है।₹

* हनुमान जी धर्मसंकट में पड़ गए। यदि वे पर्वत को रामेश्वरम ले जाते हैं, तो उसका उपयोग नहीं होगा। और यदि यहीं छोड़ते हैं, तो वचन का क्या होगा?

* विवश होकर हनुमान जी ने गोवर्धन पर्वत को वहीं ब्रज भूमि पर धीरे से रख दिया।

* गोवर्धन पर्वत फूट-फूट कर रोने लगे। उन्होंने कहा—"हनुमान! तुमने तो मुझे धोखा दिया। न मैं अपने घर (उत्तर) का रहा, न प्रभु के काम (दक्षिण) आ सका। और मेरा वह वचन? क्या मुझे प्रभु का स्पर्श कभी नहीं मिलेगा?"

5. प्रतीक्षा और श्रीकृष्ण अवतार

गोवर्धन की पीड़ा देखकर हनुमान जी का हृदय भर आया। उन्होंने गोवर्धन को ढांढस बंधाते हुए एक भविष्यवाणी की: "हे गिरिराज! निराश मत होइए। रघुकुल की रीति है—'प्राण जाए पर वचन न जाए'। मेरा वचन खाली नहीं जाएगा। त्रेतायुग में सेतु का काम पूरा हो चुका है, इसलिए प्रभु अभी आपको स्पर्श नहीं कर सकते। लेकिन आप यहीं प्रतीक्षा करें।"

* "द्वापर युग में जब प्रभु श्रीराम 'कृष्ण' के रूप में अवतार लेंगे, तब वे केवल आपको स्पर्श ही नहीं करेंगे, बल्कि सात दिनों तक अपनी उंगली पर उठाकर रखेंगे। आपको देवों के राजा इंद्र के प्रकोप से ब्रज की रक्षा करने का गौरव मिलेगा और आप 'गिरिराज महाराज' के नाम से पूजे जाएंगे।"

6. वचन की पूर्ति युग बीते। द्वापर आया। भगवान श्रीकृष्ण ने ब्रज में लीलाएं रचीं। जब इंद्र ने ब्रज को डुबोने के लिए प्रलयंकारी वर्षा की, तब भगवान श्रीकृष्ण ने उसी गोवर्धन पर्वत को अपनी कनिष्ठा उंगली पर उठा लिया।

हनुमान जी का वह वचन सत्य सिद्ध हुआ। श्रीराम ने केवल एक बार छूने का वचन दिया था, लेकिन श्रीकृष्ण रूप में उन्होंने गोवर्धन को सात दिन और सात रात तक लगातार स्पर्श किए रखा। त्रेता का वह अधूरा पत्थर, द्वापर में भगवान का 'छत्र' बन गया।

सार: यह कथा सिखाती है कि ईश्वर के कार्य में की गई प्रतीक्षा कभी व्यर्थ नहीं जाती। गोवर्धन पर्वत को युगों तक धूप और बारिश सहनी पड़ी, लेकिन अंत में उन्हें वह स्थान मिला जो देवताओं को भी दुर्लभ है—साक्षात भगवान के हाथों का स्पर्श।

।। जय श्री राम ।। ।। जय श्री कृष्ण ।।

बालों का ऊर्जात्मक महत्व

पिंकी कुंडू

जिस प्रकार पेड़ की जड़ें भूमि से ऊर्जा खींचती हैं, उसी प्रकार मानव शरीर के बाल ब्रह्मांडीय ऊर्जा को ग्रहण करने का माध्यम हैं। हमारे बाल सूक्ष्म एंटेना की तरह कार्य करते हैं, जो ब्रह्मांड में व्याप्त दिव्य ऊर्जा को अवशोषित कर शरीर में प्रवाहित करते हैं।

स्त्री तत्व में यह क्षमता पुरुषों की तुलना में कहीं अधिक होती है, क्योंकि स्त्रियों के भीतर स्वाभाविक रूप से ऋणात्मक ऊर्जा (receptive energy) विद्यमान होती है। यही कारण है कि स्त्रियों के लंबे बाल रखने का प्रचलन प्राचीन काल से चला आ रहा है। उनके बाल ब्रह्मांडीय ऊर्जा को अधिक मात्रा में ग्रहण कर उसे सहेजने का कार्य करते हैं।

पुरुष जब साधना मार्ग पर प्रवेश करता है, तो वह भी अपने बालों को बढ़ने देता है। धीरे-धीरे वे जटाओं का रूप ले लेते हैं। जितने अधिक घने और लंबे बाल होते हैं, उतनी ही अधिक ऊर्जा को संग्रह और संचय करने की क्षमता विकसित होती है।

वेदों में भी बालों का विशेष महत्व बताया गया है। ब्राह्मण परंपरा में चोटी (शिखा) को काटा नहीं जाता, क्योंकि इसे ब्रह्मांडीय ऊर्जा से सीधा संबंध माना गया है। यह शिखा उस केंद्र का प्रतीक है जिसके माध्यम से साधक अपनी चेतना को ऊर्ध्वगामी कर ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ता है।

जो नकली बाल और जटाएं लगाकर घूम रहे है वो सिर्फ अपना ऊर्जा मंडल खराब कर रहे है लोगो को प्रभावित करने के लिए।

अतः बाल केवल सौंदर्य का प्रतीक नहीं, बल्कि वे हमारे ऊर्जातंत्र का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग हैं — जो साधक को ब्रह्मांड से जोड़ने वाला सूक्ष्म माध्यम बनते हैं।

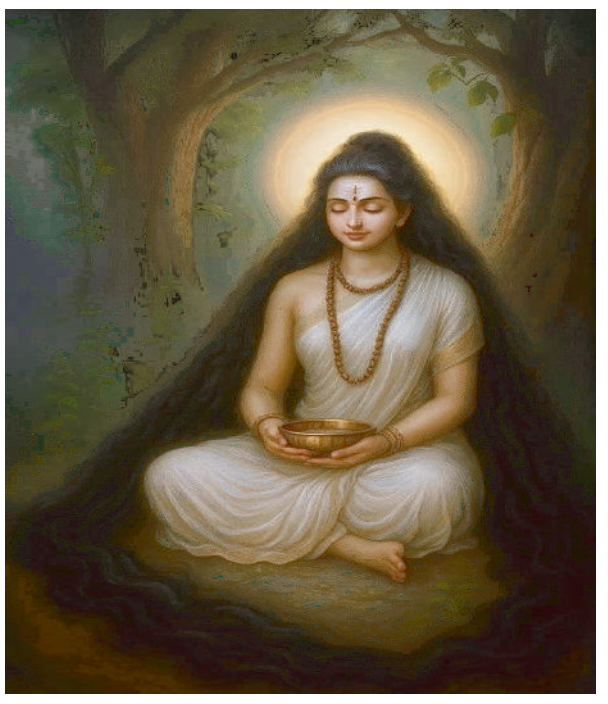

विश्व धर्म : वसुधैव कुटुम्बकम

विश्व धर्म क्या कहता हैं ?

01. विश्व धर्म कहता है, सूर्य उदय से पहले उठो।
02. विश्व धर्म कहता है, नशा और मद्यपान मत करो।
03. विश्व धर्म कहता है, गुरुकुल में विद्या अध्ययन करो।
04. विश्व धर्म कहता है, 21वें वर्ष में लड़के और 18वें वर्ष में लड़की का विवाह हो जाना चाहिए।
05. विश्व धर्म कहता है, संतान उत्पत्ति समय पर करें।
06. विश्व धर्म कहता है, संतान उत्पत्ति स्वाभाविक प्रक्रिया है, उसे ना रोकें।
07. विश्व धर्म कहता है, संतान को सनातन वैदिक संस्कार दें।
08. विश्व धर्म कहता है, जीव हत्या ना करें और शाकाहारी बनें।
09. विश्व धर्म कहता है, दुःखी व्यक्ति की सहायता करो।
10. विश्व धर्म कहता है, मंदिर एवं आश्रम नियमित जाएं।
11. विश्व धर्म कहता है, गौ सेवा करो।
12. विश्व धर्म कहता है, गांव और कृषि से जुड़े रहो।
13. विश्व धर्म कहता है, योग और यज्ञ करो।
14. विश्व धर्म कहता है, सनातन वैदिक धर्म ग्रंथ पढ़ों।
15. विश्व धर्म कहता है, मातृभाषा और संस्कृत का सम्मान करो।
16. विश्व धर्म कहता है, संतों का सम्मान करो।
17. विश्व धर्म कहता है, पशु-पक्षियों तथा वृक्षों को संरक्षण दो।
18. विश्व धर्म कहता है, दान करो, धर्म की वृद्धि के लिए तप करो और निरंतर पुरुषार्थ करो।
19. विश्व धर्म कहता है, व्यर्थ मत बैठो, सद्कर्म करो।
20. विश्व धर्म कहता है, भवन उतना ही बड़ा बनाओ जितना आवश्यक हो।
21. विश्व धर्म कहता है, संगठित रहो।
22. विश्व धर्म कहता है, घर के बड़े बुजुर्गों को सम्मान दो।
23. विश्व धर्म कहता है, शरीर और घर को स्वच्छ रखो।
24. विश्व धर्म कहता है, सात्विक और शुद्ध भोजन करो।
25. विश्व धर्म कहता है, नारी का सम्मान और रक्षा करो।
26. विश्व धर्म कहता है, अन्न का संचय करो।
27. विश्व धर्म कहता है, धार्मिक स्थल का तीर्थाटन करो और साधुओं से वार्तालाप करो।
28. विश्व धर्म कहता है, कन्या की भ्रूण हत्या मत करो।
29. विश्व धर्म कहता है, वैदिक मंत्र जाप करो।
30. विश्व धर्म कहता है, सभी के भीतर ईश्वर की शक्ति देखो।
31. विश्व धर्म कहता है, अतिथि का सम्मान करो।
32. विश्व धर्म कहता है, शुभ कार्य में विलम्ब मत करो।
33. विश्व धर्म कहता है, राष्ट्र की रक्षा करो।
34. विश्व धर्म कहता है, राष्ट्र के शत्रुओं का सर्वनाश करो।
35. विश्व धर्म कहता है, राष्ट्र की नदिया स्वच्छ रखो।
36. विश्व धर्म कहता है, वाणी और क्रोध पर नियंत्रण रखो।
37. विश्व धर्म कहता है, स्वंय प्रयत्न करो और विवेक से काम लो।
38. विश्व धर्म कहता है, आत्मरक्षा का अधिकार सबको है।
39. विश्व धर्म कहता है, स्वदेशी परिधान एवं वस्तुएं अपनाओं।
40. विश्व धर्म कहता है, प्राकृतिक कृषि करो।
41. विश्व धर्म कहता है, कर्तव्यों का निर्वहन करो।
42. विश्व धर्म कहता है, प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करो।
43. विश्व धर्म कहता है, आयुर्वेद अपनाओं।
44. विश्व धर्म कहता है, सोलह संस्कार अपनाओं।
45. विश्व धर्म कहता है, मनुष्य को लोक और परलोक सुलभ बनाने का प्रयास करते रहना चाहिए।

क्या आप उपरोक्त बतायी गई एक भी बात का अनुसरण करते हो ? इसलिए आज से सनातन वैदिक शास्त्रों को नियमित रूप से अवश्य पढ़ो।

नववर्ष पर 'संवाद' कार्यक्रम के तहत भारतीय जाटव समाज की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

बैठक का समापन सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने, संगठन को और अधिक मजबूत बनाने तथा भविष्य की कार्ययोजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के संकल्प के साथ किया

आगरा,संजय सिंह। नववर्ष के पावन अवसर पर सामाजिक सरोकारों को समर्पित संस्था भारतीय जाटव समाज (BJS) द्वारा "संवाद" कार्यक्रम के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष उपेन्द्र सिंह ने की। इस अवसर पर समाज के प्रबुद्धजनों, बुद्धिजीवियों एवं संगठन से जुड़े प्रमुख पदाधिकारियों की उल्लेखनीय सहभागिता रही।

बैठक में नववर्ष के दौरान प्रस्तावित सामाजिक, शैक्षिक एवं संगठनात्मक कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की गई। साथ ही गत वर्ष संस्था द्वारा किए गए कार्यों की गहन समीक्षा करते हुए उपलब्धियों एवं चुनौतियों पर सार्थक विमर्श किया गया। इस अवसर पर पत्रकारिता जगत में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले तथा संस्था से जुड़े प्रमुख साथियों को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया, जिससे उपस्थित जनसमूह में उत्साह एवं प्रेरणा का वातावरण बना।

बैठक में निकट भविष्य में दिल्ली एवं भरतपुर (राजस्थान) में आयोजित होने वाली बैठकों को लेकर भी विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान जानकारी दी गई कि 3 अगस्त 2025 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात कर आगरा में बुद्धा पार्क के जीर्णोद्धार, निजी क्षेत्र में आरक्षण तथा धनौली क्षेत्र में टूटने वाले 70 से अधिक घरों को बचाने संबंधी मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा गया था। मुख्यमंत्री द्वारा दिए गए आश्वासन के अनुरूप ये कार्य अब धरातल पर उतर चुके हैं, जो संस्था की प्रभावी पहल का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इसके अतिरिक्त बताया गया कि 7 सितंबर 2025 को आगरा के धनौली में संस्था का राष्ट्रीय अधिवेशन सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। वहीं 7 दिसंबर 2025 को राजस्थान के महुआ में आयोजित प्रदेश स्तरीय सम्मेलन में राजस्थान के उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने सहभागिता की, जहाँ संस्था की मांग पर दौसा में आयुर्वेदिक अस्पताल की स्वीकृति प्रदान की गई।

बैठक का समापन सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने, संगठन को और अधिक मजबूत बनाने तथा भविष्य की कार्ययोजना को प्रभावी ढंग से लागू करने के संकल्प के साथ किया गया। इस दौरान नेत्रपाल सिंह (प्रदेश अध्यक्ष), एस.पी. सिंह (महाप्रबंधक, गेल इंडिया), लायक सिंह, डॉ. मुन्नालाल भारतीय, भारत सिंह (एडवोकेट), अर्जुन सिंह (एडवोकेट), प्रवीण कुमार, ए. सिंह, रविंद्र सिंह, तेज कपूर, वीरेंद्र सिंह सहित अनेक गणमान्यजन प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

उत्तर प्रदेश दिवस 2026 के उपलक्ष्य में ब्लैक आऊट को लेकर सिविल डिफेंस मथुरा ने की बैठक

अशोक यादव

मथुराः नागरिक सुरक्षा विभाग मथुरा के प्रभारी अधिकारी अपर जिला अधिकारी राजेश कुमार यादव एवं सहायक उप नियंत्रक नीरज श्रीवास्तव ने सिविल डिफेंस की बैठक कलेक्ट्रेट स्थित नागरिक सुरक्षा कार्यालय पर बैठक का आयोजन किया गया जिसमें शासन द्वारा उत्तर प्रदेश के समस्त जनपदों में उत्तर प्रदेश दिवस 2026 के अवसर पर नागरिक सुरक्षा मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आऊट दिनांक 23 जनवरी 2026 को शाम 6 बजे मथुरा जनपद में कराई जानी है एवं क्षमता निर्माण योजना प्रशिक्षण को लेकर चर्चा की गई साथ ही सिविल डिफेंस मथुरा में भर्ती अभियान चलाए जाने को लेकर भी चर्चा की गई। साथ ही सिविल डिफेंस मथुरा के डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल एवं डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी ने वार्डन एवं स्वयंसेवको को मॉक ड्रिल एवं ब्लैक आऊट में अधिक से अधिक संख्या में पहुंचने के लिए कहा साथ ही एन डी आर एफ नागपुर एवं एस डी आर एफ से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके सिविल डिफेंस मथुरा के मास्टर ट्रेनर एवं पोस्ट वार्डन इंजि अशोक यादव ने क्षमता निर्माण योजना प्रशिक्षण में ज्यादा से ज्यादा लोगों को प्रशिक्षत करने के लिए कहा बैठक में डिप्टी चीफ वार्डन कल्याण दास अग्रवाल डिविजनल वार्डन भारत भूषण तिवारी, पोस्ट वार्डन अशोक यादव, रवेंद्र बंसल,, गिरीश वार्ष्णेय, महेश शर्मा, विकाश सोनी सतीश, राम सैनी, पंकज गर्ग, पवन प्रकाश, राजेश, देवेन्द्र, प्रमोद, सुनेना, यतेन्द्र, गोविंद, पिंकी शर्मा, सुनीता, रोहतास, नरेंद्र मेहता, जितेन्द्र, आदि वार्डन एवं स्वयंसेवक बैठक में उपस्थित रहे।

ठाकुर श्री प्रिया वल्लभ कुंज में धूमधाम से सम्पन्न हुआ द्वादश दिवसीय 212 वां पाटोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। छीपी गली/पुराना बजाज स्थित ठाकुर श्रीप्रियावल्लभ कुँज में श्रीहित परमानंद शोध संस्थान एवं श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा चल रहा है द्वादश दिवसीय 212 वां पाटोत्सव विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।जिसके अन्तर्गत प्रातः काल 05:30 खिचड़ी महोत्सव आयोजित किया गया।साथ ही ठाकुर विग्रहों का पंचामृत से महाभिषेक कर अंगसेवी आचार्य रसिक वल्लभ नागार्च के द्वारा नवीन पोषक धारण कराकर उनकी श्रृंगार आरती की गई।तत्पश्चात रस भारती संस्थान, वृन्दावन के तत्वावधान में श्रीहित जस अलि शरण महाराज की मुखियायी में मंगल बधाई समाज गायन किया गया।जिसके अन्तर्गत श्रीहित परमानंद दास महाराज द्वारा रचित प्रिया वल्लभ अष्टक का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया गया।

इस अवसर पर ₹श्रीहित वाणी चिन्तन₹ व ₹श्रीहित परमानंद वाणी चिन्तन₹ विषय पर आयोजित सन्त-विद्वत सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए घमंड देवाचार्य पीठ के (चैन बिहारी कुंज) के अध्यक्ष जगतगुरु स्वामी वेणुगोपाल शरण देवाचार्य महाराज एवं प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि प्रिया सखी की छाप जिन पदों में आई है, वह भेंट के पद माने जाते हैं।दतिया की महारानी बख्त कुंवरि (प्रिया सखी) रससिद्ध सन्त श्रीहित परमानंद दास महाराज की शिष्या थीं। जैसा कि ₹गुरु भक्ति विलास₹ नामक ग्रंथ में वर्णित है - ₹प्रिया सखि सेवक भई परमानंद की आय, राधा वल्लभ बस किए अद्भुत लाड लड़ाए।₹

श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के संरक्षक आचार्य विष्णु मोहन नागार्च एवं अध्यक्ष श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च ने कहा कि ठाकुर श्री प्रिया वल्लभ कुंज में प्रथम पाटोत्सव विक्रम संवत 1870 में श्रीहित परमानंद नागार्च के द्वारा आयोजित किया गया था।उस समय उनके द्वारा जो समाज श्रृंगाला तैयार की गई थी, उसी परंपरा का निर्वाह करते हुए आज भी उन्हीं पदों का संगीतमय गायन होता है।

सन्त-विद्वत सम्मेलन में आचार्य विवेक भारद्वाज, परम्-हितधर्मी डॉ. चन्द्र प्रकाश शर्मा, डॉ. राजेश शर्मा, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा एवं महंत मधुमंगल शरण शुक्ला आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने किया।

महोत्सव के अंतर्गत श्रीहित परमानंद शोध संस्थान एवं श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में समाज गायन परंपरा के मृदंग वादकों को सम्मानित किया गया।जिसमें गणेश शर्मा, कृष्ण गोपाल शर्मा, बाबा गोपाल दास, जनार्धन, कन्हैया शर्मा, किशोरी शरण भक्तमाली, बाबा लाल बिहारी, मोहन श्याम दीक्षित, जुगल किशोर चौबे, नटवर भरद्वाज, बाबा प्रियाशरण दास, हर्ष, बाबा राधारमण, बाबा राधामोहन दास, को श्रीहित परमानंद शोध संस्थान के अध्यक्ष आचार्य विष्णुमोहन नागार्च और श्रीहित उत्सव चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्रीहित ललित वल्लभ नागार्च ने अभिनंदन पत्र भेंट कर, उत्तरीय ओढ़ा कर व सेवा राशि प्रदान कर स्वागत किया।

इस अवसर पर महामंडलेश्वर स्वामी रामदास महाराज (अयोध्या), बाबा हित शरण, चंद्र मोहन नागार्च, पण्डित रासबिहारी मिश्र, पंडित जुगल किशोर शर्मा, रासाचार्य स्वामी राधाकांत शर्मा (छोटे स्वामी), तरुण मिश्र, भरत शर्मा, श्रीमती कमला नागार्च, बाबा राधावल्लभ शरण, बाद ग्राम के समाज मुखिया खेलन बिहारी, भरत शर्मा (मथुरा वाले), सतीश रस्तोगी, छैल बिहारी खंडेलवाल, श्रीमती ऋचा नागार्च, कीर्ति नागार्च, शेषाद्री नागार्च, दिव्या खंडेलवाल, गोविन्द खंडेलवाल, किशोरी खंडेलवाल, शिव शंकर वशिष्ठ, हित वल्लभ नागार्च, हितानन्द, रसानंद, प्रेमानंद, दिव्यानंद आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।महोत्सव का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ त्रिदिवसीय श्रीललित महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। श्रीहरिदासबिहारी फाउंडेशन भारत ट्रस्ट (रजि.) द्वारा आचार्य प्रह्लाद वल्लभ गोस्वामी महाराज के पावन सानिध्य में चल रहा त्रिदिवसीय श्रीललित महोत्सव (शीतकालीन सेवा सत्र) अत्यंत भावपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।जिसके अन्तर्गत संस्था के पदाधिकारियों द्वारा वृन्दावन के परिक्रमा मार्ग, ग्राम अक्रूर एवं अनाथालय में जरूरतमंद लोगों को ऊनी वस्त्र व कंबल आदि वितरित किए गए। महोत्सव के समापन पर सभी सदस्यों को साधुवाद देते हुए फाउंडेशन के अध्यक्ष पवन अग्रवाल ने कहा कि पूर्व जन्मों के सत्कर्म ही सेवाकार्यों से संलग्नता प्रदान करते हैं। हमें मानव तन की सार्थकता बनाए रखने हेतु निरंतर सेवार्थ समर्पित रहना चाहिए। संस्था के निदेशक विजय कुमार गर्ग ने कहा कि ट्रस्ट के संस्थापक श्रीहरिदास पीठाधीश्वर आचार्य प्रह्लाद वल्लभ गोस्वामी महाराज के सानिध्य में श्रीहरिदासबिहारी फाउंडेशन के सभी सदस्यों द्वारा जिम्मेदारी पूर्वक की जा रही सेवा से ट्रस्ट परिवार भगवान एवं भक्त सेवा के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर सहभागिता प्रदत्त कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। इस अवसर पर गणेश प्रसाद काबरा, अमित भटनागर, रविंद्र तंवर, गौरव अग्रवाल, सुमेश भटनागर, रोहित सहगल, अम्बिका बैद, डॉ. चंद्रलता सिंह तथा सरला अरोड़ा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

श्रीहरिदास धाम में श्रीहनुमद आराधन मंडल के द्वारा किया गया सुंदरकांड का संगीतमय सामूहिक पाठ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोधुलि पुरम स्थित श्रीहरिदास धाम में श्रीहनुमद आराधन मंडल के द्वारा संगीतमय सामूहिक सुंदरकांड का पाठ कई प्रख्यात संतों, विद्वानों व धर्माचार्यों के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।जिसके अंतर्गत श्रीहनुमानजी महाराज का दिव्य व भव्य श्रृंगार किया गया।साथ ही उनकी विशेष आरती की गई।इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत सम्मेलन में अपने विचार व्यक्त करते हुए अघोर शक्ति पीठाधीश्वर स्वामी बाल योगेश्वरानंद महाराज एवं प्रख्यात साहित्यकार "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि सुंदरकांड का पाठ सभी बाधाओं को दूर करने वाला है।इस पाठ को करने से श्रीहनुमानजी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं।

ठाकुर बांके बिहारी मन्दिर के सेवाधिकारी व प्रख्यात भागवताचार्य आनंद वल्लभ गोस्वामी एवं चिंतन वल्लभ गोस्वामी ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज समस्त सद्गुणों की खान हैं। उनमें वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि का भंडार है।जो व्यक्ति जिस कामना से उनकी पूजा-अर्चना करता है,उसकी कामना वे निश्चित ही पूर्ण करते हैं। श्रीहनुमद आराधन मंडल के संरक्षक पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री एवं अध्यक्ष अशोक व्यास महाराज ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्ति शिरोमणि हैं।कलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है।

इस अवसर पर मथुरा-वृन्दावन नगर निगम के उप-सभापति मुकेश सारस्वत, पण्डित चंद्र लाल शर्मा, पण्डित सुरेश चन्द्र शर्मा, भागवताचार्य विपिन बापू महाराज, पण्डित आर.एन. द्विवेदी (राजू भैया), आचार्य विमल चैतन्य महाराज, भागवत विदुषी श्रीहरि वर्षा कौशल, पण्डित मुकेश मोहन शास्त्री, डॉ. राधाकांत शर्मा, स्वामी रामशरण शर्मा, पण्डित महेश भारद्वाज, आचार्य युगल किशोर कठारे, आचार्य विमल कृष्ण पाठक, पण्डित राजेश कृष्ण महाराज, चेतन किशोर कठारे, आचार्य प्रदीप मणि महाराज, आचार्य देवांशु गोस्वामी, सुभाष गौड़ उर्फ लाला पहलवान, पण्डित लीला गौतम, प्रदीप बनर्जी, आचार्य भूति कृष्ण महाराज, आचार्य ब्रह्मदेव द्विवेदी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन आचार्य विपिन बापू ने किया।कार्यक्रम के मनोरथी श्रीमती गीतांजलि एवं अवि शर्मा ने सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागत-सत्कार एवं धन्यवाद व्यापित किया।कार्यक्रम का समापन संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

नक्सलवाद फ्री इंडिया@2026 के बाद ड्रग फ्री इंडिया @2029: भारत की आंतरिक सुरक्षा, युवा भविष्य और वैश्विक जिम्मेदारी का निर्णायक चरण

नार्को-टेरर-मिशन ड्रग फ्री इंडिया @2029:नशे के खिलाफ़ भारत की निर्णायक लड़ाई

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

ड्रग फ्री इंडिया @2029 का लक्ष्य केवल एक सरकारी नारा नहीं बल्कि भारत की आने वाली पीढ़ियों सामाजिक स्थिरता और आर्थिक क्षमता को सुरक्षित रखने की एक व्यापक राष्ट्रीय रणनीति है -

वैश्विक स्तरपर भारत ने पिछले एक दशक में आंतरिक सुरक्षा के मोर्चे पर जिस प्रकार का निर्णायक बदलाव देखा है, वह न केवल राष्ट्रीय राजनीति बल्कि अंतरराष्ट्रीय रणनीतिक समुदाय के लिए भी अध्ययन का विषय बन गया है। नक्सलवाद, जिसे लंबे समय तक भारत की सबसे गंभीर आंतरिक सुरक्षा चुनौती माना गया, उसके विरुद्ध 31 मार्च 2026 तक समाप्ति का लक्ष्य तय कर जिस तरह ठोस, बहु-स्तरीय और निरंतर अभियान चलाया गया, उसने यह स्पष्ट कर दिया कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, संस्थागत समन्वय और सुरक्षा बलों की पेशेवर क्षमता के साथ असंभव माने जाने वाले लक्ष्य भी हासिल किए जा सकते हैं। इसी आत्मविश्वास के साथ भारत सरकार अब दूसरी, कहीं अधिक जटिल और वैश्विक जड़ों वाली चुनौती, ड्रग्स और नशा तस्करी के खिलाफ निर्णायक लड़ाई के चरण में प्रवेश कर चुकी है। ड्रग फ्री इंडिया @2029 का लक्ष्य केवल एक सरकारी नारा नहीं, बल्कि भारत की आने वाली पीढ़ियों सामाजिक स्थिरता और आर्थिक क्षमता को सुरक्षित रखने की एक व्यापक राष्ट्रीय रणनीति है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि नक्सलवाद के खिलाफ अभियान की सफलता ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत अब प्रतिक्रियात्मक नीति से आगे बढ़कर समयबद्ध, परिणाम- आधारित और मिशन मोड में काम करने में सक्षम है।दशकों तक नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में समानांतर सत्ता, हिंसा, विकास अवरोध और मानवाधिकार संकट की स्थिति बनी रही। परंतु पिछले वर्षों में सुरक्षा बलों के आधुनिकीकरण, खुफिया तंत्र की मजबूती, स्थानीय विकास योजनाओं और राजनीतिक संकल्प ने इस चुनौती की कमर तोड़ दी। यही मॉडल अब ड्रग्स के खिलाफ़ अपनाने की तैयारी है लेकिन अंतर यह है कि नशा केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा बहुआयामी संकट है। केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा इसे नार्को- टेरर की संज्ञा देना इस खतरे की गंभीरता को रेखांकित करता है, क्योंकि ड्रग्स का पैसा आतंकवाद संगठित अपराध और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पोषित करता है।ड्रग फ्री इंडिया @2029 का लक्ष्य इसलिए भी ऐतिहासिक है क्योंकि यह पहली बार है जब भारत ने नशा मुक्त समाज की दिशा में एक स्पष्ट समय-सीमा, संस्थागत रोडमैप और बहु-विभागीय उत्तरदायित्व तय किया है।

साथियों बात अगर हम नई दिल्ली में आयोजित एनकोर्ड की 9वीं उच्च स्तरीय बैठक को समझने की करें तो, यह इसी रणनीतिक बदलाव का प्रतीक है। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो द्वारा हाइब्रिड मोड में आयोजित इस बैठक में केंद्र सरकार के मंत्रालयों, राज्य सरकारों और ड्रगकानून प्रवर्तन एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारियों की भागीदारी ने यह संदेश दिया कि यह लड़ाई किसी एक एजेंसी या राज्य की नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र की साझा जिम्मेदारी है।बैठक का मुख्य उद्देश्य केवल आंकड़ों की समीक्षा नहीं, बल्कि नशा तस्करी नेटवर्क और गैंग को जड़ से तोड़ने, संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान और भविष्य की तकनीकी चुनौतियों से निपटने की रणनीति तैयार करना था।ड्रग्स के खिलाफ इस नए अभियान की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसका 360- डिग्री दृष्टिकोण है।पारंपरिक रूप से ड्रग्स को सीमा सुरक्षा या पुलिसिंग की समस्या के रूप में देखा जाता रहा है, लेकिन अब इसे एक पूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र के रूप में समझा जा रहा है, जहां उत्पादन, तस्करी, फाइनेंसिंग तकनीक उपभोक्ता मांग और सामाजिक कमजोरियां आपस में गहराई से जुड़ी हैं। केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा सभी विभागों को 2029 तक का स्पष्ट रोडमैप और समयबद्ध निगरानी तंत्र तैयार करने का निर्देश इसी सोच को दर्शाता है। यह स्पष्ट किया गया है कि केवल ड्रग्स पकड़ना पर्याप्त नहीं, बल्कि पूरे नेटवर्क, किंगपिन, फाइनेंसर, लॉजिस्टिक्स हवाला चैनल और डिजिटल प्लेटफॉर्म, को ध्वस्त करना लक्ष्य होना चाहिए।डार्कनेट क्रिप्टोकरेंसी और डिजिटल भुगतान जैसी नई तकनीकों ने ड्रग्स के व्यापार को पहले से कहीं अधिक जटिल बना दिया है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ड्रग माफिया अब पारंपरिक तस्करी मार्गों के साथ-साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिससे कानून प्रवर्तन एजेंसियों के सामने नई चुनौतियां खड़ी हो गई हैं। इसी कारण एनकोर्ड बैठक में डार्कनेट और अवैध डिजिटल लेन-देन पर विशेष जोर दिया गया। यह संकेत है कि भारत की रणनीति केवल वर्तमान खतरों तक सीमित नहीं, बल्कि भविष्य की चुनौतियों को ध्यान में रखकर तैयार की जा रही है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग, साइबर फॉरेंसिक्स और वित्तीय खुफिया इकाइयों की भूमिका इस अभियान में निर्णायक होगी।

साथियों बात अगर हम ड्रग्स की समस्या को समझने की करें तो, केंद्रीय गृह मंत्री ने सही ही कानून -व्यवस्था से अधिक नार्को-टेरर और आने वाली नस्लों को बर्बाद करने के षड्यंत्र के रूप में परिभाषित किया है।नशा केवल अपराध नहीं बढ़ाता, बल्कि युवाओं के स्वास्थ्य, मानसिक क्षमता, उत्पादकता और सामाजिक मूल्यों को भी नष्ट करता है। जब किसी देश की युवा पीढ़ी नशे की गिरफ्त में आती है, तो उसका सीधा असर आर्थिक विकास, नवाचार क्षमता और सामाजिक स्थिरता पर पड़ता है। भारत जैसे युवा आबादी वाले देश के लिए यह खतरा और भी गंभीर है। इसलिए ड्रग फ्री इंडिया @2029 का लक्ष्य वस्तुतः भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को सुरक्षित रखने की रणनीति भी है।31 मार्च 2026 के बाद शुरू होने वाला तीन वर्षीय सामूहिक अभियान इस रणनीति की रीढ़ होगा। इसमें नशे के खिलाफ सभी स्तंभों, कानून प्रवर्तन, खुफिया, वित्तीय जांच, सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य सेवाएं और पुनर्वास की भूमिका स्पष्ट रूप से परिभाषित की जाएगी। लक्षांक तय कर उनकी समयबद्ध समीक्षा होगी, ताकि यह अभियान केवल घोषणाओं तक सीमित न रह जाए। यह दृष्टिकोण नक्सलवाद केखिलाफ अपनाई गई रणनीति से मिलता- जुलता है, जहां नियमित समीक्षा और परिणाम-आधारित मूल्यांकन ने सफलता सुनिश्चित की।

साथियों बात अगर हम ड्रग फ्री इंडिया अभियान का तीन सूत्रीय प्लान ऑफ एक्शन को समझने की करें तो इस पूरी रणनीति को व्यवहारिक आधार देता है।पहला सप्लाई चेन के खिलाफ सामूहिक और रूथलेस अप्रोच, अर्थात ड्रग्स के उत्पादन, तस्करी और वितरण के हर चरण पर बिना किसी नरमी के कार्रवाई। दूसरा, डिमांड रिडक्शन के लिए स्ट्रेटेजिक अप्रोच, यानी नशे की मांग को कम करने के लिए शिक्षा, जागरूकता, सामुदायिक भागीदारी और सामाजिक हस्तक्षेप। तीसरा, हार्म रिडक्शन के लिए ह्यूमन अप्रोच, जिसमें नशे के आदी लोगों को अपराधी नहीं, बल्कि उपचार और पुनर्वास की आवश्यकता वाले व्यक्ति के रूप में देखा जाए। यह संतुलित दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप है और इसे भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार ढाला गया है।ड्रग्स के व्यापार में किंगपिन, फाइनेंसर और लॉजिस्टिक्स नेटवर्क की भूमिका को केंद्र में लाना इस अभियान की सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक शिफ्ट है। अतीत में अक्सर छोटे तस्करों या उपभोक्ताओं पर कार्रवाई तक सीमित रहकर बड़ी मछलियां बच निकलती थीं। अब स्पष्ट किया गया है कि समीक्षा का मुख्य मुद्दा यही होगा कि ड्रग्स के पीछे खड़े आर्थिक और संगठित ढांचे को कितना नुकसान पहुंचाया गया। हवाला और अवैध वित्तीय लेन-देन की जांच इसीलिए प्राथमिकता में है, क्योंकि पैसा ही ड्रग्स और आतंक के गठजोड़ को जीवित रखता है।

साथियों बात अगर हम फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी के बेहतर उपयोग और समय पर चार्जशीट दाखिल कर सजा की दर बढ़ाने पर दिया गया जोर को समझने की करें तो, यह दर्शाता है कि सरकार केवल गिरफ्तारी नहीं, बल्कि न्यायिक परिणामों पर भी ध्यान केंद्रित कर रही है। भारत में ड्रग्स मामलों में लंबे समय तक चलने वाले मुकदमे और कम सजा दर एक बड़ी चुनौती रही है। यदि जांच, फॉरेंसिक साक्ष्य और अभियोजन मजबूत हों, तो न केवल दोषियों को सजा मिलेगी, बल्कि निवारक प्रभाव भी पड़ेगा। टॉप-टू-बॉटम और बॉटम-टू-टॉप अप्रोच का उल्लेख इस बात का संकेत है कि पूरे नेटवर्क की जांच में किसी भी स्तर को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा।

साथियों बात कर हम ड्रग्स के खिलाफ भारत की मौजूदा मुहिम के आंकड़े इस अभियान की गंभीरता और उपलब्धियों दोनों को दर्शाते हैं, इसको समझने की करें तो 2004 से 2013 के बीच जहां लगभग 40 हजार करोड़ रुपये मूल्य की 26 लाख किलोग्राम ड्रग्स जब्त की गई थी, वहीं 2014 से 2025 के दौरान यह आंकड़ा बढ़कर 1 लाख 71 हजार करोड़ रुपये मूल्य की 1 करोड़ 11 लाख किलोग्राम तक पहुंच गया।यह केवल तस्करी में वृद्धि का संकेत नहीं, बल्कि कानून प्रवर्तन की क्षमता, खुफिया तंत्र और अंतर-एजेंसी समन्वय में आए व्यापक सुधार को भी दर्शाता है।सिंथेटिक ड्रग्स के खिलाफ अभियान को उत्साहजनक बताना इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह क्षेत्र भविष्य में सबसे बड़ा खतरा माना जा रहा है।ड्रग्स के डिस्पोज़ल में 11 गुना वृद्धि और अफीम की फसल नष्ट करने के आंकड़े भी इस अभियान की गहराई को दर्शाते हैं। 2020 में जहां 10,770 एकड़ भूमि पर अफीम की फसल नष्ट की गई थी, वहीं नवंबर 2025 तक यह आंकड़ा 40 हजार एकड़ तक पहुंच गया। यह संकेत है कि सरकार केवल तस्करी के अंतिम चरण पर नहीं, बल्कि स्रोत स्तर पर भी निर्णायक कार्रवाई कर रही है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ड्रग्स नियंत्रण में सोर्स कंट्रोल को सबसे प्रभावी रणनीतियों में माना जाता है, और भारत इस दिशा में स्पष्ट प्रगति कर रहा है।

साथियों बात अगर हम ड्रग फ्री इंडिया@2029 का लक्ष्य वैश्विक संदर्भ में समझने की करें तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण है।दक्षिण एशिया दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य एशिया के ड्रग्स रूट्स लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय चिंता का विषय रहे हैं। भारत का भौगोलिक स्थान इसे ट्रांजिट और टारगेट, दोनों के रूप में संवेदनशील बनाता है। यदि भारत इस चुनौती से प्रभावी ढंग से निपटता है, तो इसका सकारात्मक प्रभाव न केवल घरेलू सुरक्षा पर, बल्कि क्षेत्रीय और वैश्विक ड्रग्स नियंत्रण प्रयासों पर भी पड़ेगा। यह भारत को अंतरराष्ट्रीय सहयोग और नीति निर्माण में एक मजबूत नेतृत्वकारी भूमिका प्रदान करेगा। भारतीय पीएम द्वारा 2047 में स्वतंत्रता की शताब्दी पर भारत को हर क्षेत्र में विश्व में अग्रणी बनाने का लक्ष्य तभी संभव है, जब युवा पीढ़ी स्वस्थ, सक्षम और नशामुक्त हो। ड्रग फ्री इंडिया अभियान इसी दीर्घकालिक दृष्टि का एक अनिवार्य हिस्सा है। केंद्रीय गृह मंत्री द्वारा यह कहना कि अभी यह लड़ाई ऐसे मुकाम पर है कि हम इसे जीत सकते हैं, केवल आशावाद नहीं, बल्कि पिछले वर्षों की उपलब्धियों पर आधारित आत्मविश्वास है।नक्सलवाद के खिलाफ सफलता ने यह विश्वास पैदा किया है कि यदि रणनीति स्पष्ट हो, संसाधन समर्पित हों और राजनीतिक इच्छाशक्ति अडिग हो, तो सबसे जटिल आंतरिकचुनौतियों से भी निपटा जा सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि अंततः, ड्रग फ्री इंडिया @2029 केवल सरकार का कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज, परिवार, शैक्षणिक संस्थानों, नागरिक संगठनों और मीडिया की सामूहिक जिम्मेदारी है।अंतरराष्ट्रीय अनुभव बताते हैं कि नशे के खिलाफ लड़ाई तभी सफल होती है, जब कानून प्रवर्तन और सामाजिक जागरूकता एक-दूसरे के पूरक हों। भारत ने अब इस दिशा में स्पष्ट कदम बढ़ा दिया है। यदि घोषित रोडमैप, समयबद्ध समीक्षा और बहु-स्तरीय कार्रवाई ईमानदारी से लागू होती है, तो 2029 तक नशा मुक्त भारत का सपना केवल एक राजनीतिक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक वास्तविकता बन सकता है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित, स्वस्थ और सशक्त भविष्य की नींव रखेगा।

शिक्षा डिग्री नहीं, व्यक्तित्व निर्माण का माध्यम होनी चाहिए: डॉ. परमेश्वरी

यूथ 2026 राज्य स्तरीय टेक समिट का आयोजन, छात्रों को मिला कैरियर गाइडेंस

कोडक्राफ्ट व एच .डी . शेफर फाउंडेशन की पहल, इंडस्ट्री ओरिएंटेड कोर्स व इंटर्नशिप की दी जानकारी

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। कोडक्राफ्ट एवं एच.डी. शेफर फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में यूथ 2026 राज्य स्तरीय टेक समिट का आयोजन कुडूडंड स्थित चर्च में किया गया। समिट में देश के वरिष्ठ शिक्षाविदों ने छात्रों एवं अभिभावकों को कैरियर गाइडेंस से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां दीं।

कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन रेव. निखिल पॉल ने किया, साथ ही कोडक्राफ्ट को औपचारिक रूप से लॉन्च किया गया। समिति के फाउंडर अप्रतिम सैम्यूल एवं कपिल वर्मा ने बताया कि समिट के माध्यम से स्कूल व कॉलेज के छात्रों को इंडस्ट्री ओरिएंटेड कोर्स कराए जाएंगे। इसके साथ ही प्रोजेक्ट्स एवं इंटर्नशिप की सुविधा भी प्रदान की जाएगी, जिससे विद्यार्थी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर सकें।

सेमिनार के प्रथम सत्र में कोयंबटूर की विदुषी शिक्षाविद डॉ. परमेश्वरी अरुण ने छात्रों व अभिभावकों को कैरियर गाइडेंस के क्षेत्र में उपयोगी टिप्स दिए। डॉ. परमेश्वरी अरुण चार पुस्तकों की लेखिका हैं तथा उनके 31 से अधिक शोधपत्र प्रकाशित हो चुके हैं। विज्ञान के क्षेत्र में उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उनके अकादमिक योगदान, शोध अभिरुचि और विद्यार्थियों के मार्गदर्शन के लिए वे विशेष रूप से जानी जाती हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल डिग्री तक सीमित न रहकर समाज और व्यक्तित्व निर्माण का सशक्त माध्यम होनी चाहिए।

इसी क्रम में गूगल में कार्यरत विशाख मैथ्यू ने ऐसे कैरियर विकल्पों की जानकारी दी, जिनके बारे में आमतौर पर लोग कम जानते हैं। वहीं प्रदीप्ती गिरवाल, डॉ. अर्पित लाल, डॉ. अरुण पटनायक एवं डॉ. आयुश लाल ने भी बच्चों एवं अभिभावकों का मार्गदर्शन किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में एच.डी. शेफर फाउंडेशन के डायरेक्टर एवं सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता डॉ. अर्पित लाल की उल्लेखनीय भूमिका रही। सेमिनार के सफल आयोजन में संजय विल्सन एवं मनोरंजन अलकाना का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन सना पॉल ने किया।

इस अवसर पर विभिन्न कॉलेजों के विभागाध्यक्ष, छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में आलोक विल्सन, के.एम.के. पॉल, आर.डी. नंद, विनय जेम्स, संजना लाल, अंकित गिरवाल, रुचि जेम्स, निलेश लाल, विशाल राज, रिया तिरकी, मुनु आकृति, अनोश सहित युवा टीम की सक्रिय भूमिका रही। केन मेमोरियल इंग्लिश मीडियम स्कूल के प्रिंसिपल एरिक जोसेफ एवं शेफर स्कूल की प्रिंसिपल नूतन रश्मि सामुएल सहित विभिन्न संस्थानों से आए शिक्षाविद भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान सामाजिक सरोकार के तहत दस यूनिट रक्तदान भी किया गया, जिसकी सभी ने सराहना की।

कानपुर में अचल गुप्ता के नामांकन में उमड़ा व्यापारियों का जनसैलाब, दिखाई एकजुटता

सुनील बाजपेई

कानपुर। शहर के दो हिस्सों—उत्तर और दक्षिण—में विभाजन के बाद हो रहे कानपुर दक्षिण उद्योग व्यापार मंडल के चुनाव में आज रविवार को जबरदस्त उत्साह देखने को मिला। नामांकन के अंतिम दिन अध्यक्ष पद के प्रत्याशी अचल गुप्ता, महामंत्री पवन तिवारी और कोषाध्यक्ष अशोक अग्रवाल ने अपने समर्थकों के साथ भव्य जुलूस निकालते हुए नामांकन दाखिल किया।

कानपुर दक्षिण उद्योग व्यापार मंडल के लिए आगामी 18 जनवरी को मतदान होना है। बारहदेवी स्थित बारहदेवी मंदिर परिसर से निकला यह जुलूस देखते-ही-देखते विशाल जनसैलाब में बदल गया। दक्षिण कानपुर के सैकड़ों व्यापारी ढोल-नगाड़ों, बैंड-बाजों और गगनभेदी नारों के साथ आगे बढ़ते रहे। पूरे मार्ग में जगह-जगह व्यापारियों ने फूल-मालाएं पहनाकर प्रत्याशियों का जोरदार स्वागत किया। व्यापारियों की इस अभूतपूर्व एकजुटता से चुनावी माहौल पूरी तरह गरमा गया है।

जुलूस के दौरान पूरे क्षेत्र में व्यापार और व्यापारी हितों से जुड़े नारे गूंजते रहे — "व्यापारियों की एक आवाज — मजबूत संगठन, मजबूत समाज!" "व्यापार बचेगा तो देश बढ़ेगा!" "व्यापारी एकता जिंदाबाद!" "सम्मान, सुरक्षा और स्वाभिमान -यही व्यापारी की पहचान!" "शोषण नहीं, समाधान चाहिए!" "एकजुट व्यापारी — सशक्त व्यापार!"और सबसे प्रमुख नारा रहा —

"व्यापारी एकता ज़िंदाबाद — सम्मान, सुरक्षा, स्वाभिमान और मजबूत व्यापार!" जुलूस बारहदेवी चौराहा होते हुए भगत नामदेव गुरुद्वारा परिसर पहुंचा, जहां मुख्य चुनाव अधिकारी रामेश्वर गुप्ता एवं चुनाव अधिकारी प्रकाश पाण्डेय की मौजूदगी में तीनों प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया।

इस अवसर पर अध्यक्ष पद के प्रत्याशी अचल गुप्ता ने कहा कि व्यापारी हितों की रक्षा, व्यापार की सुरक्षा और संगठन की मजबूती के लिए वह हर संघर्ष के लिए तैयार हैं और व्यापारियों की आवाज को मजबूती से उठाया जाएगा।

इस जूलूस की एक खास बात यह रही कि इसमे बडी संख्या में दक्षिण के भाजपाई शामिल रहे। चर्चा रही कि भाजपा का समर्थन भी परोक्ष रूप से इसी पैनल के प्रत्याशियों को रहेगा।

इस भव्य जुलूस में प्रमुख रूप से प्रकाश वीर आर्य, शम्मी मल्होत्रा, रोमी सिंह, विजय गुप्ता, डबली गुप्ता, अरुण कुमार बाजपेयी, बल्देवराज मल्होत्रा, वंदना गुप्ता सहित बड़ी संख्या में व्यापारी नेता और कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

व्यापारियों की इस ऐतिहासिक एकजुटता ने साफ संकेत दे दिया है कि कानपुर दक्षिण उद्योग व्यापार मंडल का यह चुनाव बेहद रोचक और निर्णायक होने जा रहा है।

समन्वय व आपसी तालमेल से फिर आगे बढ़ेगा - हमारा इन्दौर

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

जिस तरह मुंबई कभी भी थकता नहीं उसी प्रकार मिनि मुंबई इन्दौर है जो एक जगह ठहरता नहीं रुकता नहीं। क्योंकि अहिल्या बाई होलकर के पुण्य प्रताप से हर परेशानी दुःख तकलीफ के बाद फिर नई सुबह नई आशाएं लेकर आती है। लेकिन जो भी घटनाक्रम हुआ उसके बाद हर कोई ऐसा ही चाहता है कि जनसेवक व जनप्रतिनिधि गणों को यहां बात ध्यान रखना चाहिए कि ₹ ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए, औरन को शीतल करे, आपहू शीतल होय₹ संत कबीर दास जी ने जो बात कही वह हर समय सो आने सच है। क्योंकि यह मानवीय मूल्यों के लिए बहुत जरूरी है। अहंकार तो राजा रावण का नहीं रहा, राजनेताओं को मन वाणी व वचन पर ध्यान देना चाहिए। आपा खोने से परेशानी अपनी ही होती है। आपने व्यावहार के साथ साथ आपके व्यक्तित्व के लिए भी शुभ नहीं कहा जा सकता है, यहां बहुत हानिकारक है। मानव जीवन में गुस्सा बुराई का प्रतीक माना गया है, इस लिए बड़े धैर्य से व विवेकपूर्ण तरीके से अपनी बात रखना चाहिए। हर एक जिम्मेदार जनप्रतिनिधि गणों का कार्य है, सेवा करना आप का कार्यक्षेत्र में आप अपने शहर गांव के लिए हर समय जब खड़े रहते हो तो दुख-सुख के सारथी बनकर आप अपनी राजनीतिक को चला पाते हो। तो फिर इस तरह का बोलबाला क्यों। आपकी टिप्पणी से तो अपनों को भी दूर कर दिया जो हमेशा आप के ईर्द-गिर्द घूमते थे वह भी दूर से देखकर मौन है। जिसमें दूषित पानी से 21 लोगों की मौत भा गी र थ पु रा क्षेत्र इन्दौर में हुई। जहां जहरीले पानी से जो घटनाक्रम हुआ उस के बाद पूरे सिस्टम पर सवालिया निशान लगा दिया गया। इन्दौरियो में

बहुत दुःख है, नेताओं का जो साथ उस समय भागीरथपुरा मामले मिलना चाहिए वह क्यों नहीं मिला? अपनों से यहां दूरियां ठीक नहीं, हर समय कोई भी मामला हो या परेशानी आती थी तब सभी मिलजुलकर विधायक संसद राजनेता पार्षद कार्यकृता एक-साथ मिलकर अपना फर्ज अदा करते थे। एक अकेला कोई भी विधायक या महापौर हो यह उस क्षेत्र का पार्षद समस्या का समाधान कैसे निकल पायेगा। इतना सजग नहीं या पूरे देश की मिडिया और ऊपर से लेकर नीचे हर एक महकमे में हलचल थी। ऐसे में इन्दौर की जनता ने हार नहीं मानी ना वह हातश हुई, आंखों में आसूं जरूर थे अपनों को खोने के बाद भी वह शासन प्रशासन के साथ सहयोग बनाए हुए हैं। लेकिन उसके उलट राजनेता राजनीतिक शह व मात की अपनी अपनी चाले चले जा रहे हैं। पक्ष के हो यहा विपक्ष सब के सब अपनी डफ़ली अपना राग अलाप ने में लगे हुए हैं।

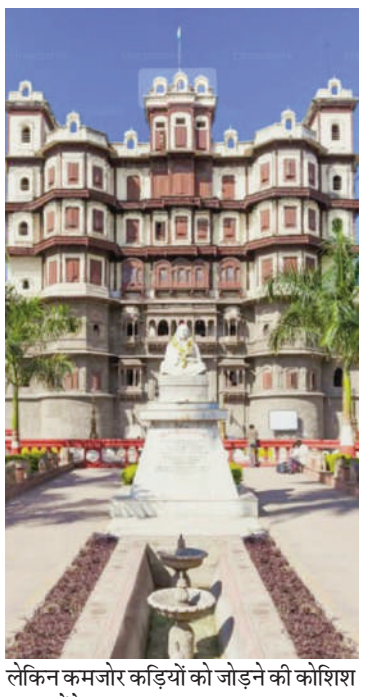

लेकिन कमजोर कड़ियों को जोड़ने की कोशिश कब करेंगे।

₹रहिमन धागा प्रेम का मत तोडो चटकाए। टूटे से फिर ना जुड़े गाँठ परि जाय। राज्य की शासन व्यवस्था में अगर कुछ खामियां हैं तो फिर उसे दूर करने हेतु आपसी सहमति सहयोग और तालमेल क्यों नहीं बैठाया गया था। क्योंकि अधिकारी प्रदेश सरकार के मंत्रीगण सरकार के शहरों के जिम्मेदार राजनेता या जनप्रतिनिधि महापौर पार्षद किसी की कोई सुनाते नहीं तो फिर एक्शन क्यों नहीं लिया जा रहा था? इस पर ध्यान क्यों नहीं दिया गया। इतना ढीला-ढाला व्यावहार जिसमें कमजोरी ही कमजोरी नजर आ रही हो उस भागीरथपुरा के पार्षद कितने दिनों से शिकायत कर रहे थे फिर ध्यान नहीं दिया जाना बहुत दुखत बात है। खुले मंच पर इसी क्षेत्र के विधायक व वरिष्ठ केबिनेट मंत्री ने स्वयं प्रदेश के मुखिया के सामने यह बात कही कि शासन के अधिकारी नहीं सुनाते, और इस घटनाक्रम के बाद इन्दौर के महापौर ने भी यही बात कही। अब तो घटना के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को मुख्यमंत्री के आदेश पर तत्काल प्रभाव से हटा दिया। अब तो जागिए और जागना ही पड़ेगा, क्योंकि जनता नेता और शासन प्रशासन में आपसी गॉठ पढ़ गई है। इसे सही करने हेतु सभी को आपसी तालमेल के साथ समन्वय दोनों बनना जरूरी है, बात जो इन्दौर की बिगड़ गई है, उसे सुधारने की जरूरत है। गुस्से व जल्दबाजी में कोई भी फैसला नहीं लेना चाहिए। कितनी चिंताजनक बात है कि आधुनिक युग में हम क्या जनता को पीने का शुद्ध पानी नहीं दे सकते? अब सहजता के साथ गंभीर होने की आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान में जल दूषित हो चुका है और वाणी.....। इसलिए शासन प्रशासन और जनता के बीच की परेशानी उनकी समस्या विश्वास व धैर्य और तालमेल से ही समन्वय का सेतु बनाना होगा। इन्दौर कभी भी कमजोर नहीं हुआ है परेशानी से निजात पाकर अब फिर आगे बढ़ेगा हमारा इन्दौर।

क्या मृत्यु के बाद भी जाति ज़िंदा है?

नरेश गुणपाल

कहते हैं कि श्मशान में सब बराबर हो जाते हैं, लेकिन सामने आई तस्वीरें इस कहावत को झूठा साबित करती हैं। यहां ज़िंदगी खत्म होने के बाद भी इंसान से उसकी जाति पूछी जा रही है। एक बोर्ड पर लिखा है "SC श्मशान घाट" और दूसरे पर "General श्मशान घाट"। यानी भेदभाव इतना गहरा है कि उसने मौत को भी नहीं छोड़ा।

अब सवाल यह उठता है कि क्या चिता की आग अलग-अलग जलती है? क्या धुएं का रंग जाति देखकर बदलता है? क्या आत्मा को भी अंतिम यात्रा से पहले कोई प्रमाण-पत्र दिखाना पड़ता है? जब अंत में सब कुछ राख हो जाना है, तो यह बंटवारा किसलिए और क्यों?

यह केवल दो श्मशान घाटों की ही कहानी नहीं है, बल्कि हमारी सामाजिक सोच का भी आईना है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 में समानता की गारंटी दी गई है और अनुच्छेद 17 में छुआछूत को अपराध माना गया है। फिर यह जाति-आधारित विभाजन किस कानून के तहत किया गया हैं? अगर ज़िंदा इंसान के साथ भेदभाव अपराध है, तो मृत इंसान के साथ भेदभाव क्या कहलाएगा? क्या पंचायतें संविधान से ऊपर हैं, या सामाजिक परंपराओं के नाम पर कानून की खुली अवहेलना हो रही है?

हम बराबरी और आधुनिक भारत की बातें करते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि जाति आज भी रास्ते तय कर रही है—यहां SC, वहां General। यह केवल लोहे का बोर्ड नहीं, बल्कि हमारी मानसिकता पर टंगा हुआ बोर्ड है।

अगर मौत भी हमें बराबर नहीं कर पाई, तो सवाल साफ है—

क्या नाकामी व्यवस्था की है या हमारी सोच की?

अब वक्त है चुप रहने का नहीं, सवाल उठाने का।

प. बंगाल : घुसपैठ का मुद्दा और वोट बैंक बनाने की रणनीति

(आलेख : स्वर्णेंदु दत्ता, बांग्ला से अनुवाद : संजय पराते)

पश्चिम बंगाल में बहुचर्चित एसआईआर प्रक्रिया के बाद चुनाव आयोग को प्रदेश में एक भी बांग्लादेशी घुसपैठियों नहीं मिला। इसके बाद भी गृह मंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल में आकर कहा कि प्रदेश में अगला विधानसभा चुनाव घुसपैठियों को खदेड़ने और घुसपैठ रोकने के मुद्दे पर होगा। उन्होंने यह भी दावा किया कि बंगाल की पूरी जनता घुसपैठ की समस्या से तंग आ चुकी है। पश्चिम बंगाल के वोटों पर बांग्लादेशी घुसपैठियों यानी अवैध रूप से बांग्लादेश से आए मुसलमानों का नियंत्रण है। यह कोई नई टिप्पणी नहीं है। राज्य के लोगों को आरएसएस के इस एजेंडे पर राज्य में वाम मोर्चा सरकार के दौरान संसद में ममता बनर्जी का हंगामा याद है। जब से केंद्र में मोदी सरकार आई है, हिंदुत्ववादियों ने सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के मकसद से पश्चिम बंगाल में घुसपैठ के मुद्दे को तरह-तरह से पेश किया है। उनके बयान का सार यह है कि राज्य सरकार के समर्थन से मुसलमान अवैध रूप से बांग्लादेश से पश्चिम बंगाल में प्रवेश कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, राज्य की जनसंख्या की संरचना (जनसांख्यिकी) बदल रही है। पश्चिम बंगाल पश्चिम बांग्लादेश बनता जा रहा है। कुछ समय बाद यहाँ हिन्दू अल्पसंख्यक हो जायेंगे, आदि-इत्यादि।

घुसपैठ पर ऐसी टिप्पणियों का उद्देश्य बहुसंख्यक हिंदुओं के मन में मुसलमानों के प्रति डर पैदा करना है, ताकि असुरक्षा की भावना बनी रहे। पश्चिम बंगाल में पिछले विधानसभा चुनाव से पहले सीएए-एनआरसी के मुद्दे पर प्रचार करते समय भाजपा के तत्कालीन प्रदेश अध्यक्ष दिलीप घोष ने कहा था कि राज्य में एक करोड़ अवैध मुस्लिम अप्रवासी हैं। इस बार एसआईआर के दौरान प्रदेश भाजपा नेताओं ने कहा कि राज्य में एक करोड़ रोहिंग्या-बांग्लादेशी हैं। बूथ स्तर पर काम करने वाले भाजपा कार्यकर्ताओं ने कहा, ₹हम तभी जीतेंगे, जब एसआईआर में घुसपैठियों को खत्म कर दिया जाएगा।₹ दूसरे शब्दों में कहें, तो भाजपा नेता ऐसा कहकर निचले स्तर के कार्यकर्ताओं को एकजुट करना चाहते थे। हालाँकि, मसौदा सूची से उन्हें निराशा ही हुई होगी। परिणामस्वरूप, केन्द्रीय गृह मंत्री को इस मुद्दे को पुनर्जीवित करना पड़ा है।

अमित शाह ने दावा किया है कि उनकी सरकार आने के बाद असम-त्रिपुरा में घुसपैठ बंद हो गई है। लेकिन उनके मंत्रालय की जानकारी ऐसा नहीं कहती। कोई यह दावा नहीं करता कि सीमावर्ती पश्चिम बंगाल में कोई घुसपैठ नहीं हुई है। कोई यह दावा नहीं करता कि गहरे भ्रष्टाचार में डूबे निचले स्तर के तृणमूल कार्यकर्ता किसी के लिए दस्तावेज़ नहीं बनाते हैं। लेकिन क्या पश्चिम बंगाल में घुसपैठियों की इतनी बड़ी आबादी है कि वे चुनाव का नतीजा बदल सकते हैं? इस पर चर्चा करने से पहले एक और महत्वपूर्ण बात यह समझनी चाहिए कि अवैध घुसपैठ को रोकने के लिए सीमा की सुरक्षा करना केंद्र सरकार की जिम्मेदारी है। तो अगर बांग्लादेश से अवैध प्रवेश जारी है, तो क्या केंद्र की मोदी सरकार सीमा की रक्षा करने में विफल नहीं हो रही है? बिहार विधानसभा चुनाव के दौरान ऐसे ही एक सवाल पर अमित शाह अपना आपा खो बैठे थे। तब उन्होंने यह विचित्र दावा किया था कि पश्चिम बंगाल की स्थिति को दिल्ली के रायसीना में बैठकर नहीं समझा जा सकता! यानी पश्चिम बंगाल की स्थिति को समझने के लिए उन्हें राज्य की सत्ता में बिठाया जाना चाहिए!

मोदी सरकार ने कोविड का बहाना बनाकर वर्ष 2021 में की जनगणना नहीं कराई। जनगणना के अभाव में संघ-भाजपा और उनके आईटी सेल जनसंख्या, हिंदू-मुस्लिम अनुपात, मुस्लिम प्रजनन दर आदि के बारे में मनगढ़ंत जानकारी देकर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। 10 अक्टूबर को गृह मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में 'घुसपैठ, जनसांख्यिकीय परिवर्तन और लोकतंत्र' पर भाषण दिया था। अपने लंबे भाषण में अमित शाह ने कहा कि गुजरात, राजस्थान भी सीमावर्ती राज्य हैं, लेकिन पश्चिम बंगाल वोट बैंक की राजनीति के लिए घुसपैठियों का केंद्र है। यह बिल्कुल वही तर्क है, जो ममता बनर्जी ने भाजपा के साथ गठबंधन के दौर में दिया था कि माकपा ने वोट बैंक की राजनीति के लिए घुसपैठ को बढ़ावा दिया।

अपने भाषण में, अमित शाह ने यह महत्वपूर्ण दावा किया कि 1951 से 2011 तक की जनगणना के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला है कि घुसपैठ के कारण ही विभिन्न धर्मों की जनसंख्या वृद्धि के संतुलन में अंतर आया है। अमित शाह ने कहा, 1951 में हिंदू आबादी 84%, मुस्लिम 9.8% थी। 2011 में यह क्रमशः 79% और 14.2% थी। उनका दावा है कि भारत में हिंदू आबादी में गिरावट और मुस्लिम आबादी में वृद्धि प्रजनन दर के कारण नहीं, बल्कि मुस्लिमों के घुसपैठ के कारण है, क्योंकि भारत में मुस्लिमों की प्रजनन दर ज्यादा नहीं है। अमित शाह पहले ही कह चुके हैं कि पश्चिम बंगाल में मुस्लिमों की घुसपैठ हो रही है और हिंदुत्ववादी ताकतों को ध्यान देना चाहिए।

यदि पश्चिम बंगाल में वास्तव में बड़े पैमाने पर

घुसपैठ हुई होती, तो प्रति दशक के आधार पर राज्य की जनसंख्या की वृद्धि दर भारत की औसत वृद्धि से अधिक होती। लेकिन आँकड़े ऐसा नहीं कहते। 1951 से 1961 तक पश्चिम बंगाल की जनसंख्या वृद्धि दर राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि दर से अधिक थी। 1961-71 तक इसमें कमी आई और यह राष्ट्रीय औसत के करीब आ गया। 1981 के बाद से, पश्चिम बंगाल की जनसंख्या वृद्धि दर राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि दर से कम रही है। आखिरी जनगणना 2011 में हुई थी, उस दौरान जनसंख्या वृद्धि का राष्ट्रीय औसत 17.7% था, लेकिन पश्चिम बंगाल में यह 13.9% था। यह राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। अगर मुस्लिम बांग्लादेश से यहां आते, तो यह संभव नहीं होता। उसके बाद मोदी सरकार ने जनगणना नहीं करायी है। यदि जनगणना होगी, तो हमारे पास अगले दशक के लिए वास्तविक आंकड़ें होंगे। अब अगर अमित शाह दावा करते हैं कि मुस्लिम घुसपैठ के कारण पश्चिम बंगाल की जनसांख्यिकी बदल रही है, तो गृह मंत्री को बताना चाहिए कि उन्हें यह जानकारी कहां से मिली?

संघ-भाजपा के व्हाट्सएप मैसेज और वीडियो अभियान में लगातार यह दावा किया जा रहा है कि पश्चिम बंगाल पर मुस्लिम घुसपैठियों का कब्जा हो रहा है। दावा किया जाता है कि पश्चिम बंगाल के सीमावर्ती जिलों में जनसंख्या वृद्धि मुस्लिम घुसपैठ के कारण है। 2001 और 2011 की जनगणना रिपोर्ट के आधार पर जिलावार जनसंख्या वृद्धि दर के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिंदुत्ववादियों का यह दावा भी गलत है। 2021 में 'फ्रंटलाइन' पत्रिका में प्रकाशित एक रिपोर्ट में विश्लेषण किया गया है कि, हालांकि नादिया एक सीमावर्ती जिला है, इसके बावजूद हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों की जनसंख्या वृद्धि दर राज्य के औसत से कम है। फिर एक अन्य सीमावर्ती जिले उत्तरी दिनाजपुर में दोनों समुदायों की विकास दर राज्य के औसत से अधिक है। इसी तरह, सीमावर्ती न होने के बावजूद, पुरुलिया जिले में भी दोनों समुदायों की वृद्धि दर अधिक है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन जिलों में मुस्लिम जनसंख्या वृद्धि दर राज्य के औसत से अधिक है, वहां हिंदू जनसंख्या वृद्धि दर भी अधिक है। यदि बांग्लादेश से बड़े पैमाने पर आप्रवासन हुआ होता, तो मुस्लिम आबादी की वृद्धि दर हिंदुओं की तुलना में अधिक होती। हकीकत में ऐसा नहीं हुआ, इसलिए बड़े पैमाने पर घुसपैठ का दावा गलत है।

राम मंदिर, धारा 370, तीन तलाक आदि मुद्दे अब भाजपा के हाथ में नहीं रहे, तो अब 'घुसपैठ' ही भाजपा का मुख्य एजेंडा है। उनके अनुसार, 'घुसपैठ' के मुद्दे से दीर्घकालिक लाभ मिलेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त को लाल किले से अपने स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने विजयादशमी के अपने संबोधन में घुसपैठ को एक बड़ी समस्या बताया था। देश में कोई निवेश नहीं हो रहा है, बेरोजगारों के लिए कोई नौकरियाँ नहीं हैं, मुद्रास्फीति की दर बहुत ऊंची है और मुद्रा का अवमूल्यन हो रहा है, बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार व्याप्त है, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँच से बाहर होती जा रही हैं, महिलाओं की असुरक्षा चिंता की बात है -- लेकिन इनमें से कोई भी मुद्दा उनके लिए समस्या नहीं है। एकमात्र समस्या मुस्लिम घुसपैठ है, जिससे हिंदुओं के अस्तित्व को ख़तरा पैदा हो गया है -- अगर आप धर्म की इस गुदगुदी को अपने दिल में बिठा सकें, तो कोई भी मुद्दा जनता की समस्या नहीं लगेगी। इसलिए उनके लिए 'घुसपैठ' ही मुख्य एजेंडा है।

इसीलिए बांग्लादेश से कोई सीमा लगे न होने के बावजूद झारखंड चुनाव के दौरान भाजपा के प्रचार का मुख्य फोकस घुसपैठ था। बांग्लादेशी मुस्लिम घुसपैठिए झारखंड में आदिवासियों की जमीन और लड़कियों पर कब्ज़ा कर रहे हैं -- इस थीम पर एक घृणित प्रचार अभियान मोदी-शाह द्वारा चलाया गया। बहरहाल, आदिवासियों ने इस झूठे प्रचार को स्वीकार नहीं किया। दिल्ली चुनाव में भी छेड़छाड़ एक मुद्दा रहा है। इस मौके पर आसपास के बांग्लाभाषी लोगों पर अत्याचार किये गए। भाजपा ने बिहार में भी एसआईआर के दौरान बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर भी दुष्प्रचार अभियान चलाया था, लेकिन आख़िरकार बिहार की सूची में 0.012% 'विदेशी' मतदाता ही दिखे। वे भी बांग्लादेशी नहीं हैं, बल्कि इनमें से ज्यादातर वे नेपाली महिलाएं हैं जिन्होंने भारतीय पुरुषों से शादी की और बिहार आ गईं। फिर भी आए दिन मोदी-शाह कहते हैं कि विपक्ष 'वोट बैंक' की राजनीति के लिए एसआईआर का विरोध कर रहा है। केरल और तमिलनाडु में भी यही कहा जा रहा है। पश्चिम बंगाल में एसआईआर प्रक्रिया की शुरुआत में ही 'घुसपैठिया' अभियान का सुर बुलंद हो गया है। रेल-बसों, बाज़ारों और चाय की दुकानों पर चर्चा हो रही है कि ₹न्यूटाउन-साल्ट लेक में अब घरेलू कामगार नहीं मिलते, सारे बांग्लादेशी भाग गए हैं।₹ संघी आईटी सेल ने ईद के दौरान मगराहाट का वीडियो फैलाया, काली पूजा के अवसर पर नादिया के करीमपुर में कांटेदार तार की बाड़ के किनारे भारी भीड़ के वीडियो पोस्ट किए, जिसमें दावा किया गया कि एसआईआर शुरू होते ही बड़ी संख्या में अवैध बांग्लादेशी घुसपैठिये भाग रहे हैं। इस तरह के झूठे प्रचारों की बाढ़ आ गई है कि घुसपैठिए हमारे हिस्से का रोजगार, राशन और सरकारी लाभ ले रहे हैं।

आम जनता का एक बड़ा तबका इस दुष्प्रचार अभियान से काफी प्रभावित है, लेकिन इनमें से सभी लोग कट्टर या सांप्रदायिक नहीं हैं। रिजर्व बैंक समेत विभिन्न सरकारी एजेंसियां, आर्थिक सर्वेक्षण, कारोबारियों के प्रवक्ता, मीडिया रिपोर्टें बार-बार कह रही हैं कि भारत में निजी निवेश नहीं आ रहा है और सरकारी क्षेत्र में भर्तियां बंद हैं। संसद के शीतकालीन सत्र में मनरेगा कानून को निरस्त करके साल में 60 दिन काम न देने का प्रावधान करने वाला कानून बनाया गया है। दूसरे शब्दों में, कुशल और अकुशल, शिक्षित और कम शिक्षित लोगों के लिए रोजगार पाने का कोई अवसर नहीं है। इन मुद्दों को दबाने के लिए दुष्प्रचार चल रहा है कि घुसपैठिए मुस्लिम काम छीन रहे हैं. अमित शाह के शब्दों में, ये कथित घुसपैठिए 'दीमक' हैं।

इस प्रकार, एक समुदाय के लोगों में दूसरे समुदाय के लोगों के खिलाफ गहरी असुरक्षा की भावना पैदा की जा रही है, जिससे एक स्थायी नफरत, एक विभाजनकारी मानसिकता पैदा होती है। इस तरह, दुष्प्रचार के जरिये लोगों को हिंदुत्व की पैदल सेना का सिपाही बनाया जा रहा हैं, जो हमारे आपसी विश्वास-रिश्ते-समाज-जीवन को नष्ट कर रहा है। इससे एक प्रकार का जन्मजात सांप्रदायिक वोट बैंक विकसित हो रहा है। इसीलिए भाजपा के वोट बढ़ रहे हैं, भले ही यह आंखों से दिखाई न दे। इसलिए, अमित शाह-ममता बनर्जी की 'जुबानी जंग' में 'घुसपैठ' कहीं ज़्यादा गंभीर मुद्दा है। मोदी-शाह उपदेश देते हैं -- 'घुसपैठ' वोट बैंक की राजनीति के लिए है। असल में, घुसपैठ के मुद्दे बारे में सोच-समझकर किया जा रहा यह दुष्प्रचार वोट बैंक बनाने की रणनीति है।

(लेखक बांग्ला दैनिक 'गणशक्ति' के संवाददाता हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।

परंपरा, मनोरंजन के साथ सेहत का भी सुख
मकर संक्रांति पर पतंगबाजी

विजय गर्ग

प्राचीन इतिहास में पतंग को लेकर एक कथा यह भी है कि पतंग का आविष्कार मध्यकालीन विद्वान हकीम लुकमान ने किया था। उन्होंने तो पतंग उड़ाने का समय सुबह-सुबह निर्धारित किया था, क्योंकि उनका मानना था कि सुबह की ताजगी और धूप में शरीर निरोगी रहता है। लेकिन हां, 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में पतंग उड़ाने का उद्देश्य मनोरंजन से जोड़ दिया गया। पतंगबाजी को पहले के समय में गुड़ी या चंग के नाम से भी जाना जाता था। नवाबों के पतंगबाजी के किस्से तब खूब मशहूर हुए थे। नवाब आसफुद्दौला के शासनकाल में छतों पर बने शीशमहल में पतंग उड़ाने के सारे इंतजाम होते थे।

पतंग उड़ाना एक ऐसी परंपरा है जो सदियों से जीवंत है और मकर संक्रांति के साथ जुड़ी हुई है। यह न केवल एक उत्सव का हिस्सा है, बल्कि शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभकारी है। पतंग उड़ाने से हमें सूर्य की ऊर्जा मिलती है, शरीर में सक्रियता आती है और जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा मिलती है।

कई बार हम संशय में होते हैं कि हमारी पुरानी प्रथाएं और मनोरंजन के साधन वक्त के साथ उड़ रहे हैं, मगर कुछ ऐसे भी साधन हैं जो मनोरंजन के आकाश में आज भी उड़ते दिखाई देते हैं। ऐसा ही एक पर्व है मकर संक्रांति, जिससे कई किंवदंतियां जोड़ी हैं। हर साल 14 जनवरी को मनाया जाने वाला यह त्योहार सूर्य के उत्तरायण होने का प्रतीक होता है। हिंदुओं के लिए सूर्य एक रोशनी, ताकत और ज्ञान का प्रतीक है। मकर संक्रांति के अर्थ में मकर शब्द राशि के नाम से ताल्लुक रखता है, वही संक्रांति का अर्थ है संक्रमण। यानी इस दिन सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है।

शारीरिक और मानसिक लाभ

पतंग उड़ाने की परंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। मकर संक्रांति के पर्व के आसपास पतंगे उड़ना शुरू हो जाती हैं। हालांकि, ज्यादातर सर्दी के मौसम में लोग घरों में ऊनी कपड़ों में दुबके रहते हैं, लेकिन वैज्ञानिक तथ्यों के अनुसार उत्तरायण में सूर्य की गर्मी ठंड के प्रकोप से होने वाली सर्दी, खांसी, फ्लू जैसे रोगों को समाप्त कर देती है। सूर्य की रोगनाशक शक्ति के बारे में अथर्ववेद में कहा गया है कि सूर्य औषधि बनाता है तथा अपनी रश्मियों द्वारा सभी जीवों का स्वास्थ्य उत्तम रखता है। हमारे वेदों में सूर्य की पूजा को बहुत महत्व दिया गया है। प्राचीन ऋषि-मुनियों ने सूर्य की शक्ति प्राप्त करके प्राकृतिक जीवन व्यतीत करने का संदेश मानव जाति को दिया था।

हाल में एक रिसर्च में यह तथ्य सामने आया कि भारत में करीब 80 फीसदी लोगों में विटामिन डी की कमी है। अकेले दिल्ली में 90 से 97 फीसदी स्कूली बच्चों (6 से 17 वर्ष की आयु) में विटामिन डी की कमी पाई गई है, जबकि भारत दुनिया में उन देशों में शामिल है जहां सूर्य की पर्याप्त रोशनी आती है। ऐसे में मकर संक्रांति जैसे पर्व संदेश और सीख देते हैं कि इस बहाने बच्चों और बड़ों को भी पतंग उड़ाने के बहाने पर्याप्त धूप मिल जाती है। पतंग उड़ाते समय हमारा मुंह ऊपर की ओर खुलता है, जैसे ही हम डोर खींचते हैं, तो ऑक्सीजन तेजी से हमारी सांसों में पहुंचती है। ऑक्सीजन लेवल पर्याप्त होने के साथ हमारे हाथ, कंधे, कमर, आंखें—सभी की अच्छी-खासी कसरत हो जाती है। छत पर सभी का साथ होना सकारात्मकता बढ़ाता है। कुछ वैज्ञानिक और डॉक्टरों का यह भी कहना है कि पतंग उड़ाने से शरीर स्वस्थ रहता है, साथ ही मस्तिष्क भी तनाव मुक्त रहता है। त्वरित निर्णय लेने की आदत में इजाफा होता है। साथ ही धूप से सर्दियों में होने वाली त्वचा संबंधी समस्याओं से भी शरीर मुक्त रहता है।

पतंग की कहानी

पतंग उड़ाने की प्रथा कब और कैसे शुरू हुई, इसके बारे में काफी मान्यताएं हैं। कहते हैं कि करीब 2800 साल पहले चीन के शानडोंग में पतंग उड़ाने का चलन शुरू हुआ था, जिसे पतंगधर के नाम से भी जाना जाता है। एक किंवदंती के अनुसार, पतंग उड़ाने की प्रेरणा एक चीनी किसान से मिली, जिसने अपनी टोपी को हवा में उड़ने से बचाने के लिए एक रस्सी से बांधी थी। ऐसा भी कहा जाता है कि सबसे पहली पतंग बांस और कागज से बनी थी। फिर देखते-देखते यह चलन पूरी दुनिया में फैल गया। तमिल की तंदनान रामायण के मुताबिक, मकर संक्रांति के दिन श्रीराम ने पतंग उड़ाई थी और वह पतंग इंद्रलोक में चली गई थी। बस तभी से पतंग उड़ाने की परंपरा चल पड़

प्राचीन इतिहास में पतंग को लेकर एक कथा यह भी है कि पतंग का आविष्कार मध्यकालीन विद्वान हकीम लुकमान ने किया था। उन्होंने तो पतंग उड़ाने का समय सुबह-सुबह निर्धारित किया था, क्योंकि उनका मानना था कि सुबह की ताजगी और धूप में शरीर निरोगी रहता है। लेकिन हां, 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में पतंग उड़ाने का उद्देश्य मनोरंजन से जोड़ दिया गया। पतंगबाजी को पहले के समय में गुड़ी या चंग के नाम से भी जाना जाता था। नवाबों के पतंगबाजी के किस्से तब खूब मशहूर हुए थे। नवाब आसफुद्दौला के शासनकाल में छतों पर बने शीशमहल में पतंग उड़ाने के सारे इंतजाम होते थे।

सन् 1800 के आसपास नवाब सआदत अली खान के समय में पतंगों से पेच लड़ाने का सिलसिला शुरू हुआ। कहते हैं उस वक्त अपनी पतंग से नॉन पेच काटने वालों को नोशेखा की उपाधि से विभूषित किया जाता था। इसी तरह बादशाह अमजद अली शाह के दरबार में पतंग के ठुड्डे और धनुष बनाए जाने लगे। एक रोचक किस्सा यह भी मशहूर हुआ था कि नवाबों की पतंगे आम पतंगों की तरह नहीं हुआ करती थीं, इन पतंगों को चटखदार रंगों और दुल्हन की तरह सजाया जाता था, जिनमें सोने-चांदी के तार और सितारों का उपयोग होता था। मजेदार बात यह थी कि ये पतंगें जब कटकर जिस छत पर गिरती थीं, उस दिन उस घर में पुलाव बनता था।

पर्व एक तरीके अनेक

समय के साथ पतंग उड़ाना कई देशों में उत्साह का प्रतीक बन गया। गुजरात का पतंगोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। 7 जनवरी से 15 जनवरी तक इंटरनेशनल काइट फेस्टिवल का आयोजन होता है, जहां जापान, मलेशिया, चीन और सिंगापुर से कई विदेशी इस पतंगबाजी का लुत्फ उठाने आते हैं। तेलंगाना का भी पतंग महोत्सव मशहूर है, जहां कई देशों के लोग हिस्सा लेते हैं। इस महोत्सव की खास बात यह भी है कि इस महोत्सव में स्वीट फेस्टिवल भी आयोजित होता है, जिसमें तकरीबन एक हजार तरह की मिठाइयों का लुत्फ उठाया जा सकता है। जयपुर के इंटरनेशनल काइट फेस्टिवल में भी कई विदेशी पतंगबाजी का हुनर दिखाने आते हैं।

उत्सव की वैश्विक धूम

पतंग उड़ाने के दीवाने भारत में ही नहीं, विदेशों में भी कम नहीं हैं। चीन के वेई फांग शहर में अप्रैल में काइट फेस्टिवल बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। लोग ऊंची-ऊंची पतंगों को देखने के लिए वहां आते हैं, क्योंकि वहां एक मान्यता है कि ऊंची उड़ती पतंगों को देखने से उनकी आंखें हमेशा अच्छी रहती हैं। ब्रिटेन में अगस्त के दूसरे सप्ताह काइट फेस्टिवल मनाया जाता है, जहां 3डी पतंगों का क्रेज ज्यादा होता है। ऑस्ट्रेलिया में सितंबर में सबसे बड़ा पतंगोत्सव मनाया जाता है। ग्वाटेमाला में पतंग उत्सव वहां की 15 से 20 मीटर चौड़ी ऊंची पतंगों के कारण मशहूर है। इंडोनेशिया में अक्टूबर के तीसरे हफ्ते में मनाया जाने वाला काइट फेस्टिवल लंबी चौड़ी पतंगों के अलावा 100 मीटर लंबी पूछ के कारण बच्चों में बहुत प्रिय है। दक्षिण अफ्रीका और इटली में भी काइट फेस्टिवल मनाया जाता है। अमेरिका में द जिलकर काइट फेस्टिवल मार्च में मनाया जाता है।

अलबेले किस्से

शुरुआत में पतंग संदेशों के आदान-प्रदान के लिए उड़ाई जाती थी। जापान में एक पतंगबाज के एक ही लाइन में सबसे ज्यादा 11,284 पतंगों के उड़ाने का रिकॉर्ड है। ऐसा भी कहते हैं कि हर वीकेंड दुनिया में कहीं न कहीं काइट फेस्टिवल होता है। 180 घंटे सतत ऊंचाई पर पतंग उड़ाने का रिकॉर्ड है। कागज की खोज के 1000 वर्ष पूर्व ही पतंगें बनाई जा चुकी थीं, जो बांस के बने कपड़ों से बनी थीं। सबसे बड़ी पतंग 630 वर्ग मीटर और लंबी पतंग 1034 मीटर की बनाई गई थी। ऐसा भी एक वाक्या हुआ था जब 1760 में जापान में पतंगबाजी पर रोक लगाई गई थी क्योंकि लोग काम करने की बजाय ज्यादा पतंग उड़ाते थे।

एसोचेम के मुताबिक, भारत में 1200 करोड़ रुपये का पतंग बाजार है। देशभर में 70 हजार से ज्यादा कारीगर पतंग बाजार से जुड़े हुए हैं। लेकिन 2020 में मंदी का माहौल था। एक बड़े आकार की चरखी में लगभग 900 मीटर मांझा होता है।

कविताओं में पतंग

एक समय था जब मनोरंजन के साधनों में पतंग उड़ाने का शौक एक जुनून की तरह था। लेकिन समय का अभाव और घरों में फ्लैट संस्कृति के चलते खुले स्थानों की कमी जैसे कारणों से पतंगबाजी कुछ कम हो गई है। हालांकि, भारत की पतंगबाजी की लोकप्रियता के ऐसे मशहूर किस्से हुए कि कई कवियों ने इस साधारण सी हवा में उड़ने वाली पतंगों को अपने गीतों और कविताओं में स्थान दिया।

जीवन जीने की कला

एक डोर के सहारे उड़ने वाला यह छोटा-सा मनोरंजन का साधन हमें जीवन जीने की प्रेरणा भी देता है। एक डोर पर भरोसा करके आसमान छूने की प्रेरणा पतंग से सीखी जा सकती है। पतंगबाज पतंग के नीचे आ जाने पर हवा का रुख पहचानकर फिर उड़ाता है। जैसे ही सफलता मिलती है, वह बेखौफ उड़ने लगता है। यानी एक-दो बार नाकामियों के मिलने पर भी पतंगबाज के उत्साह में कोई कमी नहीं आती। पतंग अपने सही बंधे जोतों के कारण हवा में संतुलन बना पाती है, ठीक वैसे ही मनुष्यों को अपने रिश्तों में संतुलन बनाने की प्रेरणा देती है। आसमान में उड़ रही दूसरी पतंगों से चुनौतियों का सामना करते हुए पतंग अपने अस्तित्व के लिए दिमागी लड़ाई लड़ती है। वह दूसरी पतंग को काटकर फिर से ऊंचा उड़ती है, और ऊंचा उड़ने के बाद ढेर सारी खुशियां पतंगबाज को देती है। यानी यह छोटी सी पतंग मनुष्यों को कितना कुछ सिखाती है।

कुछ बातें

पतंग उड़ाने का स्थान चुनते समय छतों की मुंडेरों का खास ध्यान रखना बेहद जरूरी है। चीन की डोर कभी इस्तेमाल न करें, क्योंकि डोर को पक्का करने के लिए कांच का प्रयोग जानलेवा हो सकता है। पतंग उड़ाने से पहले अगर कोई स्किन समस्या हो तो सनस्क्रीन और गॉगल्स का प्रयोग कर सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट

संपादकीय

चिंतन-मनन

बच्चों का भोजन: जानलेवा खतरा या सुरक्षित भोजन?

* जनहित में जागरूकता अभियान की आवश्यकता
* समय रहते कार्रवाई से हजारों जिंदगियाँ बच सकती हैं।

संजय कुमार बाठला

हर साल भारत में सैकड़ों मासूम बच्चे भोजन या छोटी वस्तुओं से दम घुटने की चपेट में आकर काल के गाल में समा जाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चे इस खतरे के सबसे अधिक शिकार होते हैं।

यह आपात स्थिति अचानक आती है—बिना चेतावनी के, कुछ ही मिनटों में घातक सिद्ध हो जाती है। सरकार, अभिभावक और समाज को एकजुट होकर इस 'चुपके से आने वाले कातिल' से निपटना होगा।

दम घुटना: श्वसन नली का संकट भोजन का एक छोटा टुकड़ा या बाहरी वस्तु जब बच्चे की संकरी श्वसन नली में अटक जाती है, तो हवा का प्रवाह रुक जाता है।

बच्चों में यह इसलिए घातक है क्योंकि:

* उनकी श्वसन नली छोटी और अविकसित होती है।
* चबाने-निगलने की क्षमता परिपक्व नहीं होती।
* वे वस्तुओं को मुँह में डालकर परखते हैं और संकट व्यक्त नहीं कर पाते।

परिणाम भयावह:

* 4-6 मिनट में मस्तिष्क क्षति,
* 8-10 मिनट में मृत्यु।

वैश्विक आंकड़े चिंताजनक हैं—यह बच्चों में अनजाने घुटन का प्रमुख कारण है।

प्रमुख खतरे: ये खाद्य पदार्थ बने शत्रु कुछ सामान्य भोज्य पदार्थ बच्चे के गले में फँसकर रास्ता अवरुद्ध कर देते हैं:

1. उच्च जोखिम वाले खाद्य पदार्थ

* साबुत अंगूर, चेरी टमाटर
* हॉट डॉग, सॉसेज
* मूँगफली, नट्स, बीज
* हार्ड कैंडी, पॉपकॉर्न
* कच्ची सब्जियाँ, सेब के टुकड़े

2. गैर-खाद्य वस्तुएँ

* खिलौनों के छोटे टुकड़े
* सिक्के, बटन
* गुब्बारे, बैटरियाँ

चेतावनी संकेत: तुरंत पहचानें

* बोलने-रोने में असमर्थता, गले पकड़ना।
* कमजोर खाँसी या साँस की तीखी आवाज़।
* चेहरा-होंठ नीले पड़ना, बेहोशी।

आपात प्रतिक्रिया: हर पल कीमती

* यदि बच्चा खाँस सके, तो प्रोत्साहित करें।
* पूर्ण रुकावट पर: शिशुओं के लिए पीठ थपकी-छाती दबाव; बड़े बच्चों के लिए हाइमलिक मैन्युवर।
* तुरंत 108/एम्बुलेंस कॉल करें। उँगली से वस्तु न निकालें।
* सभी अभिभावकों को CPR - प्रथम उपचार प्रशिक्षण अनिवार्य हो।

रोकथाम: सबसे मजबूत कवच

* भोजन को छोटे, उम्र-अनुकूल टुकड़ों में काटें (गोल वस्तुओं को चतुर्थांश करें)।
* निगरानी में भोजन, छोटी वस्तुओं को दूर रखें।
* स्कूलों - आंगनवाड़ी में प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाएँ।
* 2024-25 के अद्यतन दिशानिर्देशों के अनुरूप मोबाइल ऐप्स-वीडियो से जागरूकता फैलाएँ।

सरकार और समाज का आह्वान

* भारत के मातृ-शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रमों में दम घुटन रोकथाम को प्राथमिकता दें।
* केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय सख्त मानक लागू करे — खिलौनों - पैकेजिंग पर चेतावनी,
* सार्वजनिक जागरूकता अभियान।

अभिभावक सतर्क रहें, क्योंकि जागरूकता ही बच्चों की ढाल है।

आइए, इस चुप्पी को तोड़ें — हर बच्चे का जीवन सुरक्षित बनाएँ।

संपादकीय टिप्पणी: समय रहते कार्रवाई से हजारों जिंदगियाँ बच सकती हैं।

मिलावटी पदार्थों से स्वास्थ्य पर संकट

खाद्य पदार्थों मावा, नकली दूध और पदाथा मिलावट को रोकने के लिए देश भर में समय-समय पर अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन मिलावट नहीं रुक पा रही। नकली और मिलावटी मसालों का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है। मिठाई, बेसन, चटनी और यहां तक कि बच्चों के लिए बनाए गए उत्पादों में भी मिलावट की की शिकायतें। सामने आई आई हैं। मिलावट करने वाले खाद्य सामग्री में नकली और खतरनाक सामग्री का उपयोग कर आम उपभोक्ताओं को नुकसान पहुंचा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर पर दूध में डिटर्जेंट, कास्टिक सोडा, यूरिया और फार्मेलिन जैसे रसायनों का उपयोग किया जाता है, जो शरीर के लिए घातक हैं। इस तरह का दूध पीने से पेट संबंधी विकार, हृदय रोग और कैंसर जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। असंगठित क्षेत्र में मिलावट की समस्या ज्यादा है।

डॉ विजय गर्ग

देश में खाद्य पदार्थों में मिलावट की समस्या एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट में बदल चुकी है। बाजार में नकली और मिलावटी खाद्य वस्तुओं का कारोबार लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे सीधे तौर पर आम जनता का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। आंध्र प्रदेश के तिरुपति बालाजी मंदिर के प्रसाद प्रसाद लड्डु में मिलाव में मिलावट का मामला इस चिंता को और बढ़ा देता है। बताया जा रहा है कि 2019 से 2024 तक बनाए न हुआ। इसी तरह देश गए 20 करोड़ लड्डुओं में नकली घी का इस्तेमाल है, लेकिन कार्रवाई अब हुई है। एस देरी से भी मिलावटखोरों के हौसले मिलावट का एक मशहूर ब्रांड के घी का नमूना भी गुणवत्ता की कसौटी पर खरा नहीं उतरा और इसे सेहत के लिए घातक पाया गया। यह मामला वर्ष 2020 का है ऐसे मामलों में कार्रवाई में टालमटोल या है कि गोरखधंधारों के हौसले बुलंद हो रहे हैं। ऐसा लगता 'करने वालों को कानून का कानन का कोई खौफ नहीं है। मिलावट की समस्या केवल घी घी तक क सीमित नहीं है। देश के बाजार नकली और मिलावटी खाद्य पदार्थों खाद्य पदार्थों से भरे पड़े हैं। हैं। दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं में भी मिलावट होने के कारण लोग कई तरह की बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। र रह हैं। भुने हुए चने जैसे सामान्य खाद्य पदार्थों में भी खतरनाक रंगों और रसायनों का प्रयोग किया जा रहा है। औरामाइन नामक रंग खाद्य पदार्थों में मिलाया जाता है। यह कपड़ा चमड़ा उद्योगों में इस्तेमाल होने वाला रसायन है। इससे कैंसर और तंत्रिका तंत्र प पर बुरा प्रभाव पदार्थों में इस्तेमाल करने पर प्रतिबंध है। इसके इससे साफ है कि खाद्य पड़ने का खतरा होता है। इस तरह के खतरनाक रंगों का उपयोग खाद्य बावजूद निरीक्षण में कई उत्पादों में इस तरह की मिलावट की पुष्टि हुई है। इससे सुरक्षा के नियमों की अनुपालना नहीं हो रही है, जिससे उपभोक्ता लगातार धोखा खा रहे हैं और अस्पतालों के चक्कर लगा रहे हैं।

खाद्य पदार्थों मावा, नकली दूध और पदाथा मिलावट को रोकने के लिए देश भर में समय-समय पर अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन मिलावट नहीं रुक पा रही। नकली और मिलावटी मसालों का व्यापार धड़ल्ले से चल रहा है। मिठाई, बेसन, चटनी और यहां तक कि बच्चों के लिए बनाए गए उत्पादों में भी मिलावट की की शिकायतें। सामने आई आई हैं। मिलावट करने वाले खाद्य सामग्री में नकली और खतरनाक सामग्री का उपयोग कर आम उपभोक्ताओं को नुकसान पहुंचा रहे हैं। उदाहरण के तौर पर पर दूध में डिटर्जेंट, कास्टिक सोडा, यूरिया और फार्मेलिन जैसे रसायनों का उपयोग किया जाता है, जो शरीर के लिए घातक हैं। इस तरह का दूध पीने से पेट संबंधी विकार, हृदय रोग और कैंसर जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। असंगठित क्षेत्र में मिलावट की समस्या ज्यादा है। ऐसे में उपभोक्ताओं की सुरक्षा लिए खाद्य गुणवत्ता की गारंटी आवश्यक है। मुश्किल है कि अब भी मिलावट करने वालों को पकड़ना और उन पर प्रभावी कार्रवाई करना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। जब भी खाद्य सुरक्षा से जुड़ी एसियां जांच करती हैं, बड़ी संख्या में नमूने विफल पाए जाते हैं, इसके बावजूद

सख्त कदम नहीं उठाए जाते या कार्रवाई धीमी रहती है। इसका कारण भ्रष्टाचार, संसाधनों की कमी और निगरानी तंत्र की कमजोरी है।

घातक क खाद्य पदार्थों में मिलावट रोकने के लिए कड़े कानून बनाना जरूरी है। साथ ही कानूनों का ठीक तरह से क्रियान्वयन भी आवश्यक है। खाद्य सुरक्षा से जुड़े विभागों को अपनी जांच और निरीक्षण प्रणाली को और मजबूत करना होगा, जिससे दोषियों को शीघ्रता से उचित दंड मिल सके। साथ ही

उपभोक्ताओं को भी जागरूक करना होगा, उन्हें मिलावटी उत्पादों की पहचान करने की समझ विकसित करनी होगी, ताकि वे इस तरह की घातक

सामग्री से बच सकें। उन्हें ऐसे पदार्थों की बिक्री की शिकायत करने के लिए भी प्रेरित करना होगा, जिससे मिलावट करने वाले हतोत्साहित हो सकें। खाद्य उद्योग में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए तकनीकी उपायों को अपनाना भी आवश्यक है। जैसे डिजिटल ट्रैकिंग प्रणाली, जिससे उत्पाद की गुणवत्ता और स्रोत का पता चल सके। इसके अलावा किसानों और उत्पादकों को भी गुणवत्ता बनाए रखने के लिए के लिए प्रोत्साहित साहित किया जाना चाहिए।

खाद्य पदार्थों की सुरक्षा और गुणवत्ता णवत्ता सुनिश्चित न

न होने से हमारा स्वास्थ्य तो खतरे में है ही, इससे देश के खाद्य उद्योग की विश्वसनीयता और महा अर्थव्यवस्था पर भी गहरा प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए मिलावट करने वालों पर प्रभावी कार्रवाई, उपभोक्ताओं का सशक्तीकरण और सरकारी तंत्र की सक्रियता तीनों मोचों पर ध्यान देना होगा। सरकार उद्योग जगत और नागरिकों को मिलकर काम करना होगा, ताकि खाद्य पदार्थ न केवल स्वादिष्ट हों, बल्कि सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक भी हों। तभी हम एक स्वस्थ और सुरक्षित भारत का निर्माण कर पाएंगे। वहीं, मिलावटी घी से जुड़े मामल मामलों ने भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण की सक्रियता पर भी सवाल खड़े किए हैं। जांच और कार्रवाई में देरी के साथ अनियमितता की शिकायतें सामने आई हैं, जिस कारण उपभोक्ताओं का विश्वास डगमगाने लगा है। कई उप बार राज्यों 'खाद्य सुरक्षा विभागों के साथ तालमेल न होने से भी खाद्य सुरक्षा का कार्य बाधित होता है। राज्यों परीक्षण प्रयोगशालाओं की कमी समस्या बढ़ाती है। कई मामलों में जांच अधूरी होती है या दस्तावेजों में गड़बड़ी के आधार पर लाइसेंस जारी कर दिया जाता है।

'खाद्य पदार्थों में मिलावट और नकली उत्पादों पर प्रभावी नियंत्रण लिए प्राधिकरण को अपनी कार्यप्रणाली को निष्पक्ष और मजबूत बनाना होगा। केंद्र एवं राज्य सरकारों के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करना होगा, ताकि देश भर में सुरक्षित खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराए जा सकें और जनता का स्वास्थ्य सुरक्षित रह सके। जांच और कार्रवाई की प्रक्रिया निश्चित रूप से तेज एवं निष्पक्ष होनी चाहिए, ताकि दोषियों पर सख्त कार्रवाई की जा सके। राज्य और केंद्र के खाद्य सुरक्षा विभागों तथा प्रयोगशालाओं को पर्याप्त वित्तीय, तकनीकी एवं मानव संसाधन मुहैया कराने की जरूरत है। । गुणवत्ता नियंत्रण के लिए नियमित और आकस्मिक निरीक्षण भी आवश्यक है। इस तरह की कार्रवाई से मिलावट करने वालों में भय पैदा होता है। उन्हें लगता है कि उनकी गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है और इसके परिणामस्वरूप वे ऐसे अनैतिक और गैर कानूनी कार्यों से दूरी बना लेते हैं। मिलावट करने वालों को भी इस बात का भान होना चाहिए कि ऐसा करके वे अपने पैरों पर भी कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

मिलावट के जरिए कोई दुकानदार भले ही ज्यादा मुनाफा कमा ले, लेकिन इस दुश्चक्र से वह और उसका परिवार भी नहीं बच सकता। असल में कोई भी व्यक्ति सभी तरह के खाद्य पदार्थ स्वयं पैदा नहीं कर सकता। उसे ज्यादातर वस्तुओं के लिए बाजार पर निर्भर रहना होता है जब दूसरी चीजें भी मिलावटी आएंगी, तो वह खुद् और उसका परिवार भी बीमारियों की चपेट में आएगा। इस तरह मिलावट के जरिए कमाया पैसा भी अस्पतालों चक्कर काटने में ही ही खर्च होगा। बेहतर तो यह होगा कि हर व्यापारी मिलावट से दूर रहे और नैतिकता को अपने धंधे का मुख्य आधार बनाए। व्यापार तो लाभ कमाने के लिए किया जाता है, लेकिन पैसे के लिए अपराध का रास्ता अपनाने का अंजाम भी खतरनाक ही होता है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

स्वामी विवेकानंद: युवाशक्ति के जागरण का अमर स्वर

-सुनील कुमार महला

हर वर्ष 12 जनवरी को भारत में राष्ट्रीय युवा दिवस (नेशनल यूथ डे) महान आध्यात्मिक गुरू, युवा वक्ता, मार्गदर्शक, विचारक और राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानंद की जयंती के रूप में मनाया जाता है।आपका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) में हुआ था। आपके बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था तथा आपके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त था,जो एक प्रसिद्ध वकील थे तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था,जो अत्यंत धार्मिक, विदुषी और संस्कारवान महिला थीं। आपकी माता ने आपका नाम 'वीरेश्वर' रखा था और आपको प्यार से वह 'बिली' कहकर पुकारती थीं।आपका जीवन संघर्षों से भरा था तथा अपने अपने 39 वर्ष के अल्प जीवन में लगभग 31 बीमारियों का सामना किया। जानकारी मिलती है कि आप चाय पीने के शौकीन थे।एक बार आपने स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक से विशेष रूप से 'मुगलई चाय' बनवाई थी। इतना ही नहीं, आपको खिचड़ी और तले हुए आलू (मसालेदार) भी बहुत पसंद थे। विवेकानंद बहुत ही मेधावी छात्र थे,जिनकी प्रारंभिक शिक्षा मेट्रोपोलिटन स्कूल से हुई थी।बाद में अपने प्रेसीडेंसी कॉलेज तथा जनरल असेंबलीज़ इंस्टीट्यूशन (वर्तमान स्कॉटिश चर्च कॉलेज) में अध्ययन किया। आपने दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, इतिहास, साहित्य, वेद, उपनिषद, तथा पाश्चात्य दर्शन का गहन अध्ययन किया। पाठकों को बताता चलूं कि अंग्रेज़ी के साथ-साथ संस्कृत और बंगला पर विवेकानंद जी की असाधारण पकड़ थी।आपका यह मानना था कि 'शिक्षा वह है जो मनुष्य का निर्माण करे और उसके चरित्र को मजबूत बनाए।' आपने एकबार कहा था -'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।' आपका यह कहना था कि-' शिक्षा मनुष्य के भीतर पहले से ही मौजूद पूर्णता की अभिव्यक्ति है।' आत्मविश्वास के बारे में आपका यह कहना था कि 'यदि आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तो आप भगवान पर भी विश्वास नहीं कर सकते।' आपका यह मानना था कि 'शक्ति ही जीवन है और कमजोरी मृत्यु है।'बहुत कम लोग जानते हैं कि आप नास्तिकता की सीमा तक प्रश्न करते थे। वे प्रत्येक साधु से एक ही प्रश्न पूछते थे कि-'क्या आपने ईश्वर को देखा है?' इसी खोज ने उन्हें रामकृष्ण परमहंस तक पहुँचाया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सत्य की खोज में आपकी मुलाकात स्वामी रामकृष्ण परमहंस से हुई। परमहंस जी के प्रभाव में आकर ही आपने आध्यात्मिक मार्ग अपनाया था और बाद में आप स्वामी विवेकानंद के नाम से जाने गए।पाठकों को बताता चलूं कि विश्व में भारतीय दर्शन विशेषकर वेदांत और योग को प्रसारित करने में विवेकानंद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है, साथ ही ब्रिटिश भारत के दौरान राष्ट्रवाद को अध्यात्म से जोड़ने में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि संन्यास लेने के बाद आपका नाम स्वामी विविदिशानंद था, लेकिन शिकागो जाने से ठीक पहले, खेतड़ी के महाराजा अजीत सिंह के सुझाव पर आपने अपना नाम बदलकर 'विवेकानंद' कर लिया था। कहते हैं कि एक बार अमेरिका में एक महिला आपके प्रवचनों से इतनी प्रभावित हुई कि उसने आपसे विवाह का प्रस्ताव रख दिया था। दरअसल उसने कहा था, 'मैं आपके जैसा ही तेजस्वी पुत्र चाहती हूँ, इसलिए आप मुझसे विवाह कर लें।'उस समय आपने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया था कि, 'देवी, मैं तो संन्यासी हूँ, विवाह नहीं कर सकता। लेकिन आपकी इच्छा पूरी हो सकती है। आज से आप मुझे ही अपना पुत्र मान लीजिए। इस तरह आपको मेरे जैसा पुत्र भी मिल जाएगा और मेरा संन्यास भी बना रहेगा।' कहते हैं कि विवेकानंद जी का यह जवाब सुनकर महिला उनके चरणों में गिर गई थी। पाठकों को बताता चलूं कि प्रारंभ में आप रामकृष्ण परमहंस के विचारों से सहमत नहीं थे और तर्क और विवेक के आधार पर आप हर बात को परखते थे, लेकिन धीरे-धीरे रामकृष्ण परमहंस के अनुभवजन्य ज्ञान ने आपको भीतर से बदल दिया।अपने गुरु के देहांत के बाद, 1897 में आपने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य 'परहित' और समाज सेवा के माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति है। आप असाधारण स्मरण शक्ति के धनी थे तथा किसी पुस्तक को एक बार पढ़कर आप उसका सार याद रख लेते थे तथा कई बार तो आप पूरे पृष्ठ शब्दशः दोहरा देते थे। इतना ही नहीं, आप संगीत प्रेमी संन्यासी और युवा वक्ता थे। गौरतलब है कि 1893 के शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में आप सबसे कम उम्र के प्रतिनिधि थे। आपके पहले शब्द-'सिस्टर्स एंड ब्रदर्स ऑफ अमेरिका' ने पूरे सभागार को भावविभोर कर दिया था।उस समय वहां 7000 लोग मौजूद थे।शिकागो में आपने हिंदू धर्म को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति के धर्म के रूप में दुनिया के सामने रखा। आपने वर्ष 1894 में पहली 'वेदांत सोसाइटी' की स्थापना की तथा अपने पूरे यूरोप का व्यापक भ्रमण किया तथा मैक्स मूलर और पॉल डूसन जैसे प्रच्ववादियों से संवाद किया।आपने भारत में अपने सुधारवादी अभियान के आरंभ से पहले निकोला टेस्ला जैसे प्रख्यात वैज्ञानिकों के साथ तर्क-वितर्क भी किये।एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार आपने जगदीश चंद्र

बोस की वैज्ञानिक परियोजनाओं का भी समर्थन किया। इतना ही नहीं आपने आयरिश शिक्षिका मार्गरेट नोबल (जिन्हें उन्होंने 'सिस्टर निवेदिता' का नाम दिया) को भारत आमंत्रित किया, ताकि वे भारतीय महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में सहयोग कर सकें।आपने ही जमशेदजी टाटा को भारतीय विज्ञान संस्थान और 'टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी' की स्थापना के लिये प्रेरित किया था। विदेशों में आज भी उनके बहुत से प्रशंसक हैं तथा उनका यह मानना था कि भारत का उद्धार केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक सेवा से होगा। वास्तव में उनकी यही सोच आगे चलकर रामकृष्ण मिशन की नींव बनी।आपने युवाओं को आत्मविश्वास, चरित्र निर्माण, राष्ट्रसेवा और आध्यात्मिक चेतना का संदेश दिया। पाठकों को बताता चलूं कि उनके विचारों से प्रेरित होकर भारत सरकार ने 1984 में 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस घोषित किया था। इस दिन देशभर में युवा कार्यक्रम, संगोष्ठियाँ, भाषण, योग एवं प्रेरणात्मक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं, ताकि युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया जा सके।आपका विचार था कि-'ब्रह्मांड की सारी शक्तियां पहले से ही हमारी हैं। वह हमीं हैं जिन्होंने अपनी आंखों पर हाथ रख लिया है और रोते हैं कि अंधेरा है।'आपका यह मानना था कि जितना बड़ा संघर्ष होगा, जीत उतनी ही शानदार होगी।आप कहां करते थे कि-' यह दुनिया एक महान व्यायामशाला है जहाँ हम खुद को मजबूत बनाने के लिए आते हैं।' आपका मानना था कि ईश्वर की सेवा का सबसे अच्छा तरीका मनुष्य की सेवा करना है, विशेषकर उन लोगों की जो गरीब और असहाय हैं।यहां यह भी उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी द्वारा सामाजिक रूप से शोषित लोगों को 'हरिजन' शब्द से संबोधित किये जाने के वर्षों पहले ही स्वामी विवेकानंद ने 'दरिद्र नारायण' शब्द का प्रयोग किया था, जिसका आशय था कि 'गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।' यह भी आपका ही विचार था कि-'उस व्यक्ति ने अमरत्व प्राप्त कर लिया है, जो किसी भी सांसारिक वस्तु से विचलित नहीं होता।'आपका कहना था कि अगर किसी देश के युवा जागरूक हों और अपने लक्ष्य के लिए पूरी निष्ठा से काम करें, तो वह देश हर बड़ी सफलता हासिल कर सकता है। आप कहते थे कि युवाओं को सफल होने के लिए मेहनती, समर्पित और भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार रहना चाहिए। कहना ग़लत नहीं होगा कि वे युवाओं को केवल पढ़ाई या सोच में ही नहीं, बल्कि मन की मजबूती (आध्यात्मिक शक्ति) और शरीर की ताकत बढ़ाने के लिए भी प्रेरित करते हैं। अंत में यही कहूंगा कि स्वामी विवेकानंद के विचारों का निष्कर्ष यह है कि राष्ट्र का उत्थान तभी संभव है जब उसके युवा चरित्रवान, आत्मविश्वासी और कर्तव्यनिष्ठ हों। वे शिक्षा को केवल ज्ञान अर्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का माध्यम मानते थे।आपने आध्यात्मिक शक्ति को जीवन की सबसे बड़ी ताकत बताया, जो मनुष्य को निर्भय और कर्मठ बनाती है।आपका यह मानना था कि कमजोर शरीर और कमजोर मन से कोई महान कार्य नहीं किया जा सकता। सेवा, त्याग और मानवता के कल्याण को उन्होंने सच्चे धर्म का आधार माना। आपके विचार आज भी युवाओं को जागृत होकर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने की प्रेरणा देते हैं।बहुत कम लोग ही यह बात जानते होंगे कि आपने खुद यह भविष्यवाणी की थी कि आप 40 वर्ष की आयु पार नहीं करेंगे। उनकी यह बात सच साबित हुई और 4 जुलाई 1902 को मात्र 39 वर्ष की उम्र में आपने बेलूर मठ (पश्चिम बंगाल) में महासमाधि ली।

फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

मकर संक्रांति: पतंगबाज़ी, आनंद, संस्कृति और चेतना

मकर संक्रांति का पर्व भारतीय संस्कृति में केवल एक तिथि नहीं, बल्कि ऋतु परिवर्तन, सामाजिक सहभागिता और लोकजीवन की जीवंत अभिव्यक्ति है। यह वह समय है जब सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर अग्रसर होता है और प्रकृति के साथ-साथ मानव जीवन में भी नई ऊर्जा का संचार होता है। इस पर्व से जुड़ी पतंगबाज़ी की परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसने समय के साथ स्वयं को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संबंधी आयामों को भी अपने भीतर समाहित किया है। आज पतंग उड़ाना सिर्फ़ छतों पर खड़े होकर डोर खींचने का खेल नहीं, बल्कि सामूहिक उत्सव, मानसिक प्रसन्नता और शारीरिक सक्रियता का प्रतीक बन चुका है।

पतंग उड़ाने की परंपरा भारत में अत्यंत प्राचीन मानी जाती है। ऐतिहासिक संदर्भों और लोककथाओं में इसके उल्लेख मिलते हैं। कभी यह राजदरबारों में कौशल और रणनीति का प्रतीक रही, तो समय के साथ आम जनजीवन में रच-बस गई। मकर संक्रांति, बसंत पंचमी और अन्य पर्वों पर आसमान का रंग-बिरंगी पतंगों से भर जाना, भारतीय समाज की सामूहिक चेतना और उत्सवधर्मिता को दर्शाता है। हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश और दिल्ली जैसे राज्यों में यह पर्व केवल परंपरा नहीं, बल्कि एक बड़े सामाजिक आयोजन का रूप ले लेता है।

पतंगबाज़ी का सबसे सुंदर पक्ष उसका सामाजिक स्वरूप है। यह लोगों को घरों से बाहर निकालकर एक-दूसरे से जोड़ती है। छतों के बीच संवाद, बच्चों की खिलखिलाहट, युवाओं की प्रतिस्पर्धा और बुज़ुर्गों की स्मृतियों से उपजी मुस्कान—ये सभी दृश्य इस पर्व को जीवंत बनाते हैं। "वो काटा... वो मारा" की गूंज केवल खेल का उत्साह नहीं, बल्कि सामूहिक सहभागिता की आवाज़ होती है। आज के समय में, जब सामाजिक संवाद सिमटता जा रहा है, ऐसे पर्व मानवीय रिश्तों को सहेजने का अवसर प्रदान करते हैं।

मकर संक्रांति के अवसर पर आयोजित पतंग महोत्सवों और सामूहिक आयोजनों ने इस परंपरा को नए आयाम दिए हैं। कई स्थानों पर स्थानीय प्रशासन, सामाजिक संगठन और स्वयंसेवी संस्थाएँ मिलकर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करती हैं, जिनका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना भी होता है। इन आयोजनों में महिलाएँ, बच्चे और बुज़ुर्ग समान रूप से भाग लेते हैं, जिससे यह पर्व किसी एक वर्ग तक सीमित न रहकर समाज के हर हिस्से का उत्सव बन जाता है।

अक्सर पतंगबाज़ी को केवल मौसमी खेल समझ लिया जाता है, लेकिन इसके स्वास्थ्य संबंधी लाभ भी कम नहीं हैं। पतंग उड़ाते समय शरीर के कई अंग सक्रिय रहते हैं। हाथों, कंधों और आँखों का समन्वय होता है, जिससे शारीरिक सक्रियता बनी रहती है। खुले वातावरण में समय बिताने से शरीर को सूर्य की ऊर्जा मिलती है और मानसिक थकान कम होती है। चिकित्सकों और मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि ऐसे सामूहिक और आनंददायक आयोजन तनाव को कम करने में सहायक होते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी पतंग उड़ाना अत्यंत उपयोगी है। खुले आसमान में रंग-बिरंगी पतंगों को उड़ते देखना मन को प्रसन्नता और शांति देता है। यह व्यक्ति को वर्तमान क्षण से जोड़ता है और एक प्रकार के सहज ध्यान का अनुभव कराता है। आज के तेज़ रफ्तार और तनावपूर्ण जीवन में ऐसे अनुभव मानसिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

बच्चों के लिए पतंगबाज़ी केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सीखने की प्रक्रिया भी है। इससे उनमें धैर्य, संतुलन, समन्वय और प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होती है। हवा की दिशा को समझना, डोर का सही तनाव बनाए रखना और सही समय पर निर्णय लेना—ये सभी कौशल बच्चों की निर्णय क्षमता को मजबूत करते हैं। साथ ही, जब यह गतिविधि परिवार के साथ मिलकर की जाती है, तो बच्चों में सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक जुड़ाव भी गहराता है।

हालाँकि, जहाँ पतंगबाज़ी आनंद और उत्साह का पर्व है, वहीं इससे जुड़ी सुरक्षा चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। बीते वर्षों में चाइनीज़ मांझा और नायलॉन डोर के प्रयोग से कई गंभीर दुर्घटनाएँ हुई हैं। यह न केवल मनुष्यों के लिए, बल्कि पक्षियों और अन्य जीव-जंतुओं के लिए भी घातक सिद्ध हुआ है। सड़क दुर्घटनाएँ, गले में कट लगने की घटनाएँ और पक्षियों की मौत—ये सभी इस परंपरा के विकृत स्वरूप की ओर संकेत करते हैं।

सरकार और प्रशासन द्वारा इस दिशा में नियम बनाए गए हैं, लेकिन केवल नियम पर्याप्त नहीं हैं। समाज में जागरूकता फैलाना और जिम्मेदारी का भाव विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। सूती डोर का उपयोग, खुले और सुरक्षित स्थानों का चयन, बच्चों की निगरानी और समय-सीमा का ध्यान—ये सभी कदम पतंगबाज़ी को सुरक्षित बना सकते हैं। यह ज़रूरी है कि उत्सव की खुशी किसी के लिए दुख का कारण न बने।

पर्यावरणीय दृष्टि से भी पतंगबाज़ी पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। पतंगों के अवशेष पेड़ों, बिजली के तारों और सड़कों पर फँसकर पर्यावरण के लिए समस्या बन जाते हैं। प्लास्टिक और नायलॉन से बनी पतंगें लंबे समय तक नष्ट नहीं होतीं और जीव-जंतुओं के लिए खतरा पैदा करती हैं। ऐसे में पर्यावरण-अनुकूल पतंगों और प्राकृतिक रंगों के उपयोग को बढ़ावा देना समय की माँग है।

कई सामाजिक संगठन और स्वयंसेवी समूह इस दिशा में सकारात्मक प्रयास कर रहे हैं। वे बच्चों और युवाओं को सुरक्षित और पर्यावरण-संवेदनशील पतंगबाज़ी के लिए प्रेरित कर रहे हैं। स्कूलों और सामाजिक मंचों पर जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं, ताकि परंपरा और प्रकृति के बीच संतुलन बना रहे।

बदलते समय के साथ पतंगबाज़ी का स्वरूप भी बदल रहा है। अब यह केवल छतों तक सीमित नहीं रही। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने इसे एक वैश्विक पहचान दी है। पतंग महोत्सवों की तस्वीरें और वीडियो दुनिया भर में साझा किए जा रहे हैं। विदेशों में बसे भारतीय समुदाय भी मकर संक्रांति के अवसर पर पतंग उत्सव आयोजित कर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहते हैं।

यह परिवर्तन दर्शाता है कि परंपराएँ स्थिर नहीं होतीं, वे समय के साथ स्वयं को ढालती हैं। पतंगबाज़ी भी इसी परिवर्तन का उदाहरण है, जहाँ परंपरा, मनोरंजन, स्वास्थ्य और आधुनिकता एक साथ उड़ान भरते हैं। यह पर्व हमें सिखाता है कि आनंद और जिम्मेदारी एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं।

अंततः, मकर संक्रांति और उससे जुड़ी पतंगबाज़ी केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि जीवन को उत्सव की तरह देखने का दृष्टिकोण है। यह हमें सामूहिकता, संतुलन और आनंद का महत्व समझाती है। जब हम परंपरा को समझदारी और जिम्मेदारी के साथ अपनाते हैं, तो वह अतीत की स्मृति भर नहीं रहती, बल्कि वर्तमान और भविष्य की प्रेरणा बन जाती है। आसमान में उड़ती पतंगें हमें यही संदेश देती हैं कि सीमाएँ केवल ज़मीन पर होती हैं, सपनों के लिए आकाश हमेशा खुला रहता है—बस डोर थामने का हुनर और संतुलन बनाए रखने की समझ होनी चाहिए।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवि एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

एक समाज, जो बेटियों को सुरक्षित नहीं, नियंत्रित करता है सुरक्षा का तर्क, समाज की चुप्पी और बेटियों का संघर्ष

कृति आरके जैन

"सुरक्षा" एक ऐसा शब्द है, जिसे सुनते ही मन में भरोसे और संरक्षण की छवि उभरती है। यही शब्द माता-पिता की सबसे बड़ी ढाल माना जाता है और यही समाज की सबसे बड़ी दलील भी। लेकिन जब यह शब्द बेटी की आज़ादी छीनने का माध्यम बन जाए, तब इसका अर्थ बदल जाता है। तब सुरक्षा एक ऐसा ताला बन जाती है, जो बेटी के सपनों, इच्छाओं और आत्मसम्मान पर जड़ दिया जाता है। यह ताला दिखाई नहीं देता, पर इसका बोझ हर सांस के साथ महसूस होता है। बेटी को बताया जाता है कि यह सब उसके भले के लिए है, जबकि असल में यह उसके अस्तित्व पर नियंत्रण की प्रक्रिया होती है।

भारतीय समाज में बेटी को आज भी एक स्वतंत्र व्यक्ति की बजाय परिवार की प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जाता है। उसकी चाल, पहनावा, दोस्ती और निर्णय—सब पर निगाह रखी जाती है। जैसे ही बेटी अपने जीवन के फैसले खुद लेने की बात करती है, "सुरक्षा" का तर्क सामने खड़ा कर दिया जाता है। प्रेम, विवाह, शिक्षा या करियर—हर क्षेत्र में उसकी आज़ादी सीमित कर दी जाती है। यह सीमाएँ परिवार द्वारा खींची जाती हैं और समाज द्वारा स्वीकार कर ली जाती हैं। यही स्वीकृति इस समस्या को और गहरा बनाती है।

इस तथाकथित सुरक्षा का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि इसे प्रेम का रूप देकर प्रस्तुत किया जाता है। माता-पिता कहते हैं कि दुनिया बहुत खराब है, इसलिए बेटी को घर में रखना ज़रूरी है। लेकिन सवाल यह है कि क्या दुनिया केवल बेटी के लिए ही खराब है? बेटे भी उसी दुनिया में रहते हैं, वही रास्ते तय करते हैं, वही जोखिम उठाते हैं। फर्क सिर्फ़ इतना है कि बेटी को कमजोर और असहाय मान लिया जाता है, और यही मान्यता उसकी आज़ादी की सबसे बड़ी दुश्मन बन जाती है।

यह कैद केवल दरवाज़े बंद करने तक सीमित नहीं होती। यह सोच, भावनाओं और निर्णयों पर भी पहरा बिठा देती है। बेटी से बार-बार कहा जाता है कि वह समझदार बने, समाज की बात माने, परिवार की इज़्ज़त रखे। धीरे-धीरे वह अपने मन की बात कहना छोड़ देती है। सवाल पूछना, विरोध करना या अपनी इच्छा जताना उसे अपराध जैसा लगने लगता है। यह मानसिक कैद शारीरिक कैद से कहीं अधिक खतरनाक होती है, क्योंकि इसमें सलाखें दिखाई नहीं देतीं, लेकिन रास्ते पूरी तरह बंद हो जाते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में यह समस्या परंपरा और जाति की कठोर दीवारों से और भी मज़बूत हो जाती है। प्रेम विवाह या अंतरजातीय संबंधों के मामलों में बेटियों को घर में बंद कर देना, मोबाइल छीन लेना या बाहर निकलने से रोक देना वहाँ सामान्य व्यवहार माना जाता है। कई बार यह कैद महीनों नहीं, बल्कि वर्षों तक चलती है। शहरों में इसका रूप थोड़ा बदला हुआ दिखता है, लेकिन सार वही है। यहाँ बेटी को "आधुनिक सुरक्षा" के नाम पर निरंतर निगरानी में रखा जाता है—लोकेशन ट्रैकिंग, समय की सख्त पाबंदी और हर निर्णय पर सवाल। फर्क सिर्फ़ दिखावे का है, सोच वही पुरानी है।

कानून इस पूरी व्यवस्था के विपरीत खड़ा है। भारतीय संविधान हर महिला को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है। बालिग बेटी को अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने का पूरा हक़ है। इसके बावजूद, जब मामला परिवार का बताकर पेश किया जाता है, तो कानून कई बार मौन हो जाता है। पुलिस और प्रशासन अक्सर माता-पिता की बात को ही अंतिम मान लेते हैं, जबकि बेटी की सहमति और इच्छा को नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। यहीं कानून और समाज के बीच का टकराव साफ दिखाई देता है, और दुर्भाग्य से अक्सर समाज हावी हो जाता है।

इस कैद का मनोवैज्ञानिक प्रभाव बेहद गहरा और दीर्घकालिक होता है। आत्मविश्वास टूटता है, आत्मसम्मान कमजोर पड़ता है और भविष्य को लेकर डर पैदा होता है। कई बेटियाँ अवसाद, चिंता और अकेलेपन का शिकार हो जाती हैं। पढ़ाई और करियर पर इसका सीधा असर पड़ता है, क्योंकि उनकी ऊर्जा अपने अधिकारों की रक्षा में ही समाप्त हो जाती है। परिवार इसे अस्थायी कदम मानता है, लेकिन बेटी के लिए यह अनुभव जीवन की दिशा बदल देता है।

समाज की दोहरी मानसिकता इस समस्या को और अधिक जटिल बना देती है। एक ओर बेटियों को देवी कहकर पूजने की परंपरा है, तो दूसरी ओर उन पर भरोसा करने से गहरा संकोच भी है। फिल्मों, धारावाहिकों और लोककथाओं में आज भी "आदर्श बेटी" वही दिखाई जाती है, जो चुप रहे, सहन करे और कभी सवाल न उठाए। यही सांस्कृतिक संदेश पीढ़ी दर पीढ़ी दोहराया जाता है, जिससे नियंत्रण को नैतिकता और दमन को संस्कार का सम्मानजनक नाम मिल जाता है।

इस अंधेरे के बीच बदलाव की कुछ स्पष्ट किरणें भी दिखाई देती हैं। शिक्षा, सोशल मीडिया और जागरूकता अभियानों ने बेटियों को अपनी बात रखने का साहस दिया है। अनेक संगठन और मंच ऐसे हैं, जो कानूनी सहायता के साथ-साथ मानसिक संबल भी प्रदान कर रहे हैं। फिर भी यह प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। जब तक समाज की सामूहिक सोच नहीं बदलेगी, तब तक "सुरक्षा" का यह पिंजरा नए-नए रूपों में बना ही रहेगा।

शिक्षा इस समस्या की जड़ पर सीधा प्रहार करती है। शिक्षित बेटी न केवल अपने अधिकार पहचानती है, बल्कि उन्हें हासिल करने का आत्मबल भी जुटाती है। उतना ही ज़रूरी है माता-पिता और समाज की मानसिक शिक्षा। जब यह समझ विकसित होगी कि सुरक्षा का अर्थ संदेह या नियंत्रण नहीं, बल्कि विश्वास, संवाद और समर्थन है, तब बेटियों को कैद करने की प्रवृत्ति स्वतः समाप्त होने लगेगी। स्कूलों और परिवारों में समानता और सम्मान की भावना को सुदृढ़ करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

आर्थिक स्वतंत्रता भी इस संघर्ष का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हथियार है। आत्मनिर्भर बेटी न केवल अपने निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होती है, बल्कि अन्याय के विरुद्ध खड़े होने का साहस भी जुटा पाती है। रोजगार, व्यावसायिक कौशल और आगे बढ़ने के अवसर उसे मानसिक व सामाजिक मजबूती देते हैं। जब बेटी आर्थिक रूप से सशक्त होती है, तब "सुरक्षा" के नाम पर लगाए गए ताले अपने आप कमजोर पड़ने लगते हैं और नियंत्रण की जगह आत्मविश्वास ले लेता है।

"सुरक्षा" के नाम पर बेटी को जेल में रखना मात्र पारिवारिक विषय नहीं, बल्कि एक गहरा और गंभीर सामाजिक अन्याय है। यह पितृसत्तात्मक सोच की वही कठोर दीवार है, जिसे तोड़े बिना समानता और न्याय की कल्पना अधूरी रहती है। सच्ची सुरक्षा बंद दरवाज़ों में नहीं, बल्कि खुले अवसरों और विश्वास में निहित है। बेटी को उड़ने का अधिकार दिया जाए, उस पर भरोसा किया जाए और उसकी स्वतंत्रता का सम्मान किया जाए। तभी समाज वास्तव में सुरक्षित, संवेदनशील और प्रगतिशील कहलाने के योग्य बन सकेगा।

विश्वशांति के लिए खतरा मत्स्य न्याय

इष्ट देव सांकृत्यायन

बात बेहद कड़वी है, लेकिन वस्तुस्थिति को सरल शब्दों में समझाने का इससे बेहतर तरीका नहीं है।

भगवान न करें, लेकिन मान लीजिए कि आपके पास बहुत उपजाऊ खेत हों और उस पर किसी माफिया की नजर हो। वह माफिया कल अपना गिरोह लेकर आए और आपका अपहरण कर ले जाए। साथ नाचने के लिए सौ-दो सौ भाड़े के नचनिए लेकर आए और आपके अपहरण के बाद उन्हें आपके दरवाजे पर नचाने लगे, या आपके ही परिवार के किसी बिगड़े हुए गजेड़ी बच्चे को सुलफा सुंघाकर नचाने लग जाए, तो क्या इससे ये सिद्ध हो जाता है कि आपके अपहरण और आपके खेतों पर उस माफिया के कब्जे से आपके परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई है? बिलकुल यही वेनेजुएला के साथ हो रहा है। दुर्भाग्य यह कि नरेंद्र मोदी के नाम पर दशकों से भारत के अहित की कामना में लगे हुए चुटकी भर निर्लज्ज लालची तत्त्व इन भाड़े के नचनियों को उदाहरण बना रहे हैं जबकि सच यह है कि ट्रंप जैसे बड़बोले तानाशाह के नेतृत्व में संयुक्त राज्य अमेरिका न केवल पूरे उत्तर एवं दक्षिण अमेरिकी महाद्वीप बल्कि विश्वशांति के लिए खतरा बन चुका है। इससे भी बड़ा दुर्भाग्य यह है कि पूरा यूरोपीय यूनियन लंबे समय से अमेरिका का पिछलग्गू बना हुआ है।

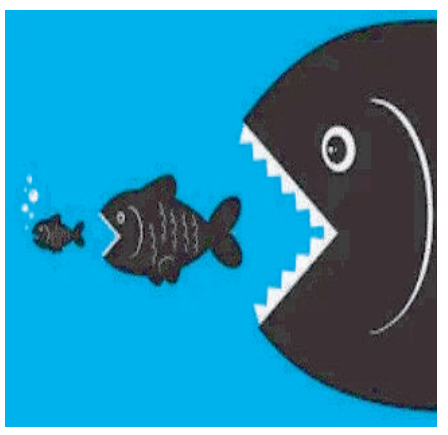

खुद अमेरिका में जिस बात का विरोध है, यूरोप के कई राजनेता उसका समर्थन कर रहे हैं। शब्दों के हेरफेर की बात छोड़ दें यूरोप के लगभग सभी राष्ट्र प्रमुखों की बात एक ही जैसी है। अगर एक बार मान भी लें कि निकोलस मादुरो तनाशाह हैं और उनका शासन लोकतांत्रिक नहीं था, तो क्या इससे ट्रंप को वेनेजुएला की संप्रभुता के सत्यानाश का लाइसेंस मिल जाता है? वेनेजुएला से कई हजार गुना ज्यादा तानाशाही चीन, उत्तर कोरिया, कतर और सऊदी अरब में है। उस ओर कभी ट्रंप ने रुख क्यों नहीं किया? अभी बहुत दिन नहीं गुजरे जब पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका में फिफ्टी फिफ्टी वन (50501) यानी 'पचास राज्य एक आंदोलन' हुआ था। यह आंदोलन न केवल डोनाल्ड ट्रंप की तानाशाही बल्कि उनकी अयोग्यता एवं अक्षमता के भी खिलाफ था और यह कहीं से भी प्रायोजित नहीं था। अप्रैल में हुए इस आंदोलन के बाद अक्टूबर में एक और आंदोलन 'नो किंग्स' भी हुआ। इसके स्वर भी वही थे और यह भी एक स्वतःस्फूर्त एवं सजीव जनांदोलन था। अमेरिका के सभी प्रमुख शहरों में आज ही बड़े विरोध प्रदर्शन हुए हैं, वेनेजुएला पर की गई ट्रंप की इस तानाशाही के खिलाफ। केवल एक साल के भीतर ट्रंप के खिलाफ तीन बहुत बड़े प्रदर्शन हो चुके। ये तीनों प्रदर्शन स्वतःस्फूर्त और सजीव हैं।

इस आधार पर अगर ट्रंप में जरा सी भी नैतिकता है तो उन्हें अपने पद से त्यागपत्र देकर राजनीति से संन्यास ले लेना चाहिए। क्या वे ऐसा करेंगे? या फिर लोकतंत्र का पाखंड ही करते रहेंगे?

दूसरा आरोप ट्रंप ने यह लगाया कि वेनेजुएला में नशीले द्रव्यों का बड़ा कारोबार है। क्या यह केवल वेनेजुएला में है? ट्रंप की नाक के नीचे शिकागो से बड़ा कोई अड्डा है क्या नशे के कारोबार का? द अर्गनाइजेशन ऑफ अमेरिकन स्टेट्स के अनुसार 2013 में 34 बिलियन डॉलर का केवल कोकेन बेचा गया था अमेरिका में। उनकी ऑफिस ऑफ द नेशनल ड्रग कंट्रोल पॉलिसी की रिपोर्ट के अनुसार कुल मिलाकर 100 बिलियन डॉलर के अवैध ड्रग उस साल पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका में बेचे गए थे। यह आँकड़ा अब कई गुना हो चुका है। 2023 में इल्लीगल ड्रग ट्रैफिकिंग से जुड़े कुल 18939 बड़े केस दर्ज किए गए थे। ये नशीले द्रव्य बेचने के धंधे में ट्रंप के देश में आठ लाख से ज्यादा अवयस्क शामिल पाए गए। तो क्या इसके बाद भी ट्रंप के पद पर बने रहने का कोई आधार बचता है? क्या इस आधार पर दूसरे किसी ताकतवर को देश को चाहिए कि वह डोनाल्ड और मेलानिया ट्रंप को उठा ले जाए? अगर नहीं तो वेनेजुएला पर की गई इस बर्बर कार्रवाई के लिए यह तर्क सही कैसे हो सकता है?

इन कुतर्कों के साथ किसी देश की संप्रभुता का सत्यानाश करना, उसके राष्ट्रपति एवं उनकी पत्नी को बंधक बनाना और महिला उपराष्ट्रपति को धमकी देने जैसे कुकृत्य किसी माफिया डॉन के तो हो सकते हैं, राजनेता के नहीं। ये कुकृत्य बताते हैं कि ट्रंप का विश्वास मत्स्य न्याय में है। चूँकि ट्रंप के पास लाठी है, इसलिए दुनिया की हर भैंस ट्रंप की है।

भुवनेश्वर जिला कांग्रेस का उपवास और सांकेतिक विरोध

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर:- केंद्र सरकार की महात्मा गांधी नरेगा योजना के नाम और नियमों में बदलाव के खिलाफ भुवनेश्वर जिला कांग्रेस अध्यक्ष प्रकाश चंद्र जेना के नेतृत्व में XIMB के पास महात्मा गांधी पार्क में गांधी की मूर्ति के नीचे उपवास और सांकेतिक विरोध कार्यक्रम आयोजित किया गया।

केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का नाम बदलकर जीरामजी करना महात्मा गांधी के प्रति हर देशवासी के प्यार और भक्ति का अपमान है। MNREGA योजना सिर्फ एक योजना नहीं है, यह सुरक्षित श्रम के अधिकार का फैसला है। केंद्र सरकार ने नई योजना में मजदूरों के अधिकारों का उल्लंघन किया है और अनुदान का पैसा राज्यों पर थोप दिया है। MNREGA करोड़ों गरीबों, असहायों और मजदूरों के लिए वरदान था। कांग्रेस पार्टी ने सुरक्षित श्रम कानून के अधिकार की रक्षा के लिए पूरे देश में अहिंसक तरीके से अभियान शुरू किया है।

पूर्व मंत्री सुरेश कुमार राउतराय, किशोर जेना, चिन्मय सुंदर दास, सुनीता बिस्वाल, प्रशांत चंपाटी, आलोक मोहंती, तरुण मिश्रा, प्रशांत सतपथी, श्रेया पांडा, श्रेया मोहंती, जयकृष्ण सुबुद्धि, प्राची राउतराय, स्वास्तिक मोहंती, देबाशीष राउत, शुभम राज अभिराम, देबराज मिश्रा, सूर्यकांत जेना, पार्वती प्रताप सिंह, विनोद राउतराय, देबाशीष मिश्रा, खगेश्वर मल्लिक, मंटू मल्लिक, अथाराम पति, तकवीन अहमद, गोपाल खंडेलवाल और सैकड़ों प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम में भाग लिया।

स्टील सिटी गोल्फ टूर्नामेंट 16से 18 जनवरी के बीच जमशेदपुर में

250 से अधिक गोल्फर खिलाड़ी होगें शामिल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर , वर्ष 1951 में शुरू हुए स्टील सिटी गोल्फ टूर्नामेंट का 75 वें संस्करण 16 से 18 जनवरी के बीच आयोजन होने जा रहा है। इस ऐतिहासिक टूर्नामेंट को टाटा स्टील के निरंतर सहयोग से नई ऊंचाइयां मिली हैं। प्लैटिनम जुबिली वर्ष में प्रवेश कर चुका यह टूर्नामेंट भारतीय गोल्फ परंपरा में एक नया स्वर्णिम अध्याय जोड़ने जा रहा है।

प्लैटिनम जुबिली संस्करण का आयोजन बिष्टुपुर स्थित 18-होल बेल्डीह गोल्फ कोर्स और गोलमुरी गोल्फ कोर्स में संयुक्त रूप से किया जाएगा। इस बार 250 से अधिक गोल्फर खिताब की दौड़ में शामिल होंगे। पटना, भुवनेश्वर, पारादीप, रांची, दिल्ली और जमशेदपुर सहित देश के प्रमुख गोल्फ केंद्रों से खिलाड़ी स्टील सिटी पहुंचेंगे, जिससे प्रतियोगिता का स्तर और अधिक रोचक व चुनौतीपूर्ण होगा

बीते दशकों में स्टील सिटी गोल्फ टूर्नामेंट ने क्षेत्रीय गोल्फ कैलेंडर में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। यह टूर्नामेंट खेल की उत्कृष्टता के साथ-साथ अपनी उत्कृष्ट मेहमाननवाज़ी के लिए भी जाना जाता है। 75वें संस्करण को लेकर देशभर के शीर्ष गोल्फरों, कॉरपोरेट जगत के नेताओं, खेल प्रेमियों और गणमान्य व्यक्तियों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है।

टूर्नामेंट की तैयारियों की कमान जमशेदपुर गोल्फ कैप्टन डी. बी. सुंदर रमण (वाइस प्रेसिडेंट, कॉरपोरेट सर्विसेज, टाटा स्टील लिमिटेड), गोल्फ सचिव नीरज कुमार सिन्हा (चीफ, सेफ्टी, टाटा स्टील लिमिटेड) और गोल्फ सीईओ एलन सिंह संभाल रहे हैं। आयोजन समिति टूर्नामेंट को मैदान के भीतर और बाहर, दोनों ही स्तरों पर यादगार बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रही है।

प्रतियोगिता में गोल्फर न केवल खिताब और प्रतिष्ठा के लिए बल्कि विभिन्न श्रेणियों में आकर्षक पुरस्कारों के लिए भी मुकाबला करेंगे। खेल के साथ-साथ अन्य कार्यक्रम भी आकर्षण का केंद्र रहेंगे। 16 जनवरी को बारबेक्यू डिनर, 17 जनवरी को गाला लंच और डिनर तथा 18 जनवरी को समापन लंच का आयोजन किया जाएगा। लाइव म्यूजिक और बैंड प्रस्तुतियां उत्सव के माहौल को और जीवंत बनाएंगी।

गोल्फ की 75 वर्षों की गौरवशाली यात्रा को सम्मान देने के लिए 2026 संस्करण में विशेष हेरिटेज शोकेस, सामुदायिक सहभागिता कार्यक्रम, भव्य संध्याएं और उन दिग्गजों व पूर्व चैंपियनों के सम्मान में विशेष मुकाबले आयोजित किए जाएंगे, जिन्होंने इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट की समृद्ध विरासत को आकार दिया है।

प्रस्तावित पुरी एयरपोर्ट एरिया में ऊंचाई पर पाबंदी, बेतरतीब तरीके से कोई बिल्डिंग नहीं बनाई जाएगी

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : स्टेट ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट पुरी में प्रस्तावित एयरपोर्ट प्रोजेक्ट को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। इस प्रोजेक्ट के लिए ज़मीन की पहचान हो जाने के बाद, इसे बचाने की कोशिशें शुरू कर दी गई हैं। एक खास एजेंसी सर्वे करेगी ताकि यह पक्का किया जा सके कि प्रस्तावित एयरपोर्ट प्रोजेक्ट के आस-पास के इलाके में बिना सोचे-समझे कोई ऊंची इमारतें और स्ट्रक्चर न बनें।राज्य ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने इसके लिए टेंडर मंगाया है। एयरपोर्ट के लिए यह जगह पहले ही पहचान ली गई है। इसलिए एयरपोर्ट एरिया में बिल्डिंग बनाने से पहले एयरपोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया (AAI) के तहत अप्लाई करना होगा। AAI से NOC लेनी होगी। एप्लीकेंट जिस प्लॉट के लिए अप्लाई करेगा, उसका सर्वे किया जाएगा। यह प्लॉट समुद्र तल से कितना ऊंचा है, एयरपोर्ट से इसकी दूरी कितनी है? इसका क्या असर होगा, सभी दिशाओं में सर्वे के बाद NOC मिलेगी। ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट इस सर्वे के काम के लिए एक एजेंसी अपॉइंट करेगा।

ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट ने इसके लिए टेंडर मंगाया है। 28 तारीख तक एप्लीकेशन लिए जाएंगे। ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के अधिकारी के मुताबिक, एयरपोर्ट बनाने के लिए जमीन पहचान ली गई है। इसलिए जमीन को बचाकर रखना है।

शिबू सोरेन की 82वीं जयंती पर मुख्यमंत्री ने माता व पत्नी संग अपने पिता को दी श्रद्धांजलि

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

और कृतित्व को स्मरण करते हुए झारखंड की प्रगति के उनके सपने को साकार करने का संकल्प लिया।

राची , झारखंड आंदोलन के पुरोधा , झारखंड मुक्ति मोर्चा के संस्थापकों में से देश व राज्य के मंत्री , सांसद रहे दिशोम गुरु शिबू सोरेन की 82वीं जयंती के अवसर पर रविवार को मोरहाबादी स्थित उनके आवास में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने अपनी माता श्रीमती रुपी सोरेन, विधायक श्रीमती कल्पना सोरेन तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ गुरुजी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर मंत्री हफ़ीजुल हसन, सुदिव्य कुमार, राज्यसभा सांसद श्रीमती जोबा माजी, झारखंड मुक्ति मोर्चा के वरिष्ठ नेता विनोद पांडे सुप्रियो भट्टाचार्य सहित अनेक जनप्रतिनिधियों, पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने भी गुरुजी की तस्वीर पर पुष्प अर्पित कर उनके योगदान को याद किया। मौके पर सभी ने दिशोम गुरु के व्यक्तित्व

विवेकानंद जयंती (युवा दिवस) विशेष - स्वामी विवेकानंद: भारतीय संस्कृति के शिखर और युवाओं के प्रेरणास्रोत

-संदीप सृजन

स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति के एक ऐसे शिखर हैं, जिनकी चमक आज भी पूरे विश्व को रोशन कर रही है। वे न केवल एक महान दार्शनिक और आध्यात्मिक गुरु थे, बल्कि युवाओं के लिए एक अनंत प्रेरणा स्रोत भी। 19वीं शताब्दी के अंत और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में, जब भारत ब्रिटिश उपनिवेशवाद की जंजीरों में जकड़ा हुआ था, स्वामी विवेकानंद ने भारतीय संस्कृति की गरिमा को पुनर्जीवित किया। उन्होंने वेदांत दर्शन को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया और युवाओं को आत्मविश्वास, साहस और सेवा भावना से ओतप्रोत किया। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था, और वे रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्य थे। स्वामी विवेकानंद का जीवन छोटा था, मात्र 39 वर्ष। लेकिन उनके विचारों की गहराई और प्रभाव इतना विशाल है कि वे आज भी लाखों युवाओं को प्रेरित करते हैं। 1893 में शिकागो में विश्व धर्म संसद में उनके भाषण ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई। उन्होंने कहा, "बहनों और भाइयों," जो अमेरिकी श्रोताओं को इतना प्रभावित किया कि वे तालियों से गूंज उठे। यह भाषण भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिकता का प्रतीक था।

स्वामी विवेकानंद का जीवन संघर्षों से भरा था, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। बचपन में वे खेलकूद और पढ़ाई में अव्वल थे। उन्होंने स्कॉटिश चर्च कॉलेज से दर्शनशास्त्र में स्नातक किया। पश्चिमी दार्शनिकों जैसे ह्यूम, कांट और स्पेंसर से प्रभावित होने के बावजूद, वे भारतीय वेदांत की गहराई में डूबे रहे। 1881 में रामकृष्ण से पहली मुलाकात हुई, जब नरेंद्र ने पूछा, "क्या आपने ईश्वर को देखा है?" रामकृष्ण का उत्तर था, "हां, मैंने देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूं।" इस मुलाकात ने नरेंद्र के जीवन की दिशा बदल दी। रामकृष्ण की मृत्यु के बाद, विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जो आज भी शिक्षा, स्वास्थ्य और सेवा

के क्षेत्र में कार्यरत है।

1890 से 1893 तक वे भारत भ्रमण पर निकले। इस दौरान उन्होंने देश की गरीबी, अज्ञानता और सामाजिक कुरीतियों को निकट से देखा। वे पैदल यात्रा करते, गांवों में रुकते और लोगों से बातचीत करते। कन्याकुमारी में ध्यान करते हुए उन्हें भारत के उत्थान का संदेश मिला। उन्होंने महसूस किया कि भारत की संस्कृति में छिपी शक्ति को जगाना होगा। शिकागो धर्म संसद में उनका भाषण एक मील का पत्थर था। उन्होंने हिंदू धर्म को सहिष्णुता और एकता का प्रतीक बताया, कहा कि "सभी धर्म सत्य हैं, जैसे अलग-अलग नदियां समुद्र में मिलती हैं।" इस भाषण ने पश्चिम को भारतीय आध्यात्मिकता से परिचित कराया। अमेरिका और इंग्लैंड में प्रवास के दौरान उन्होंने कई व्याख्यान दिए, योग और वेदांत पर किताबें लिखीं। 1897 में भारत लौटकर उन्होंने रामकृष्ण मठ की स्थापना की। उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा, लेकिन वे रुके नहीं। 4 जुलाई 1902 को बेलूर मठ में उनका निधन हुआ।

स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति के शिखर हैं, क्योंकि उन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन को आधुनिक रूप दिया। भारतीय संस्कृति की जड़ें वेद, उपनिषद और गीता में हैं, लेकिन औपनिवेशिक काल में यह सब दबा हुआ था। विवेकानंद ने वेदांत को पुनर्जीवित किया। उन्होंने कहा, "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" यह नारा भारतीय संस्कृति की आत्मनिर्भरता का प्रतीक है। उन्होंने हिंदू धर्म को एक विज्ञान की तरह प्रस्तुत किया, जहां आस्था और तर्क का सामंजस्य है। उनका योगदान सामाजिक सुधार में भी है। वे जातिवाद, अंधविश्वास और महिलाओं की दशा के खिलाफ थे। उन्होंने कहा, "महिलाओं का उत्थान किए बिना राष्ट्र का उत्थान असंभव है।" भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का रूप माना जाता है, लेकिन व्यवहार में वे उपेक्षित थीं। विवेकानंद ने शिक्षा और सशक्तिकरण पर जोर दिया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन के माध्यम से स्कूल, अस्पताल और अनाथालय स्थापित किए, जो भारतीय संस्कृति की सेवा भावना को दर्शाते हैं।

पंजाब एमटीबी टीम गठन के लिए ओपन चयन ट्रायल 29 जनवरी को; पटियाला में

*साइकिलिंग फेडरेशन ऑफ़ इंडिया की एड-हॉक कमिटि द्वारा ओपन ट्रायल्स की घोषणा

*पंजाब में केवल एड-हॉक कमिटि ही टीम गठन के लिए अधिकृत

*खिलाड़ियों से अनधिकृत एवं अनऑथराइज्ड किसी भी चयन प्रक्रिया से दूर रहने की अपील

अमृतसर, 11 जनवरी

अरुणाचल प्रदेश के (रोइंग में) आयोजित होने वाली आगामी माउंटेन टेरेन बाइक (एमटीबी) नेशनल चैंपियनशिप में भाग लेने हेतु पंजाब राज्य साइक्लिंग टीम (माउंटेन बाइक) के गठन को लेकर ओपन चयन ट्रायल 29 जनवरी को जागो–अकाल अकादमी रोड, गांव कालवा (निकटवर्ती गांव बारन, पटियाला–सरहिंद रोड) में आयोजित किए जाएंगे। ये ट्रायल सभी श्रेणियों (पुरुष एवं महिला) के लिए होंगे, तथा उन्हें पंजाब राज्य के मूल निवासी होना अनिवार्य है।

सभी पात्र साइकिलइंग खिलाड़ी इस ओपन ट्रायल्स में भाग ले सकते हैं।

ये ट्रायल सभी श्रेणियों के लिए आयोजित किए जाएंगे, जैसे कि मेन एलीट और वुमेन एलीट (19 वर्ष एवं उससे अधिक), मेन अंडर-23, मेन और वुमेन जूनियर (आयु 17 एवं 18 वर्ष), यूथ बॉयज़ और गर्ल्स (14 वर्ष एवं उससे कम)। खिलाड़ियों को अपने साथ पंजाब राज्य का मूल निवास प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाना अनिवार्य है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए शैलेंद्र पाठक, अध्यक्ष, एड-हॉक कमिटि (साइक्लिंग पंजाब) एवं संयुक्त सचिव, साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया (सीएफआई) ने स्पष्ट किया कि पंजाब में किसी भी प्रकार की साइक्लिंग गतिविधियों तथा ओपन चयन ट्रायल्स के आयोजन एवं संचालन का अधिकार केवल साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा गठित एड-हॉक कमिटि को ही है। (जब तक की पंजाब राज्य के स्थाई कमेटी का पुनर्गठन/चुनाव संपन्न नहीं होता)

उन्होंने स्पष्ट किया कि इस दौरान किसी भी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा आयोजित किए गए ट्रायल या चयन प्रक्रिया को अनधिकृत एवं अमान्य माना जाएगा। खिलाड़ियों को किसी भी बहकावे में आने या दीगभ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है I पंजाब प्रांत के सभी खिलाड़ियों को किसी भी अन्य व्यक्ति अथवा अमान्य संस्था द्वारा आयोजित चैंपियनशिप अथवा ट्रायल्स से दूर रहने की सलाह दी जाती है।

उन्होंने बताया कि साइक्लिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया द्वारा 25 दिसंबर 2025 को पंजाब में साइक्लिंग गतिविधियों के सुचारू संचालन तथा खिलाड़ियों को किसी भी प्रकार की असुविधा से बचाने के उद्देश्य से एड-हॉक समिति का गठन किया गया है, तथा कमेटी अपने पर्यवेक्षक तथा पीसीपी नियुक्ति के साथ ओपन ट्रायल संपन्न कराएगी।

श्री पाठक ने कहा कि समिति खिलाड़ियों के कल्याण के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है। सही एवं समयः पर जानकारी के लिए पंजाब के साइकिल खिलाड़ी श्री मनीष सावनी, सदस्य, एड-हॉक समिति से मोबाइल नंबर 9463909616 पर संपर्क कर सकते हैं।

स्वामी विवेकानंद : भारत का युवा सन्यासी एवं महान आध्यात्मिक गुरु

प्रदीप कुमार वर्मा

भारत जैसे महान देश के महान आध्यात्मिक गुरु। देश और दुनिया के सबसे बड़े यूथ आइकन। विश्व में योग और वेदांत के प्रणेता। महज पच्चीस वर्ष के सन्यासी। और मात्र चालीस साल में दुनिया से विदाई। हम बात कर रहे हैं भारत के युवा सन्यासी एवं महान आध्यात्मिक गुरु स्वामी विवेकानंद की। पश्चिम देशों में योग, वेदांत और भारतीय दर्शन को पहुंचाने वाले स्वामी विवेकानंद की आज जयंती है। स्वामी विवेकानंद को करोड़ों युवा अपना आदर्श मानते हैं। उनके जोशीले विचारों से प्रेरणा लेते हैं। यही वजह है कि 12 जनवरी उनके जन्मदिन को देश में राष्ट्रीय युवा दिवस के तौर पर मनाया जाता है। राष्ट्रीय युवा दिवस का मकसद स्वामी जी के संदेशों को फिर से जागृत करना और प्रोत्साहित करना है।

स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कलकत्ता के एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। स्वामी विवेकानंद के पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के वकील थे, जबकि मां भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। स्वामी विवेकानंद बचपन से ही पढ़ाई और अध्ययन में रुचि थी। वर्ष 1871 में 8 साल की उम्र में स्कूल जाने के बाद 1879 में उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज की प्रवेश परीक्षा में प्रथम स्थान हासिल किया।

विवेकानंद और रामकृष्ण परमहंस 1881 में कलकत्ता के दक्षिणेश्वर के काली मंदिर में पहली बार मिले। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रेरित होकर सिर्फ 25 साल की युवावस्था में सबकुछ छोड़कर नरेंद्रनाथ दत्त संन्यासी बन गए थे। स्वामी विवेकानंद ने 1 मई 1897 में कलकत्ता में रामकृष्ण मिशन और 9 दिसंबर 1898 को गंगा नदी के किनारे बेलूर में रामकृष्ण मठ की स्थापना की। स्वामीजी जिस नाम की बदौलत से पूरे विश्व में जाने जाते हैं, वह राजस्थान के खेतड़ी के राजा अजीतसिंह की देन है। उनका बचपन का नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। और स्वामीजी अपना नाम विविदिशानंद, जिसका अर्थ जानने का इच्छुक होता है, लिखा करते थे। स्वामीजी ने अजीतसिंह से पूछा कि आप किस नाम को पसंद करते हैं। इस पर अजीतसिंह ने कहा कि उनकी राय से विवेकानंद होना चाहिए। उस दिन से स्वामीजी ने अपना नाम विवेकानंद रख लिया।

खेतड़ी के राजा अजीत सिंह ने ही विवेकानंद का मुंबई से अमेरिका के लिए जहाज का टिकट बुक कराया था। 31 मई

1893 को जहाज से स्वामीजी शिकागो रवाना हो गए। शिकागो के धर्म सम्मेलन में जाने के लिए पहनावे में राजा अजीतसिंह द्वारा भेंट राजस्थानी साफा, चोगा, कमरबंध को पहना। 1893 में शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में जब स्वामी विवेकानंद ने अपना भाषण 'अमेरिका के भाईयों और बहनों' के संबोधन से शुरू किया तो पूरे दो मिनट तक आर्ट इंस्टीट्यूट ऑफ शिकागो तालियों की आवाज से गूंजता रहा। उस दिन से भारत और भारतीय संस्कृति को दुनियाभर में पहचान मिली। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो भाषण के पहले और बाद में भारतीय संस्कृति और आध्यात्म का विस्तार पूरी दुनिया में किया। वह दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य जैसे विभिन्न विषयों के जिज्ञासु पाठक थे। उन्हें वेद, उपनिषद, भगवत गीता, रामायण, महाभारत और पुराण जैसे हिंदू धर्मग्रंथों में भी गहरी रुचि थी। नरेंद्र भारतीय पारंपरिक संगीत के विशेषज्ञ थे और खेल शारीरिक योग, खेल और सभी गतिविधियों में भाग लेते थे। स्वामी जी ने भारत में ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन और मठों की स्थापना करके लोगों को आध्यात्म से जोड़ा। उनका एक ही सिध्दांत था कि भारत देश के युवा इस देश को काफी आगे ले जाएं।

उन्होंने कहा था कि अगर मुझे सौ युवा मिल जाएं, जो पूरी तरह समर्पित हों तो वे भारत की तस्वीर बदल देंगे। शिक्षा ऐसी हो जिससे बालक का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास हो सके। शिक्षा से बच्चे के चरित्र का निर्माण और वह आत्मनिर्भर बने।

एसके अस्पताल में नवजन्मी बेटियों की लोहड़ी धूमधाम से मनाई गई

बेटियों को सम्मान और समान अधिकार देना समाज की प्राथमिक जिम्मेदारी: चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू

अमृतसर, 11 जनवरी (साहिल बेरी)

समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच को बढ़ावा देने और उनके सम्मान व अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से आज एसके अस्पताल, अमृतसर में "बेटियों के लिए लोहड़ी" कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर अस्पताल में जन्मी नवजन्मी बेटियों के माता-पिता को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया, उन्हें पारंपरिक लोहड़ी भेंट की गई तथा सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य यह संदेश देना था कि बेटियाँ किसी भी रूप में बेटों से कम नहीं हैं और उन्हें समान अवसर, सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए। कार्यक्रम के माध्यम से यह भी स्पष्ट किया गया कि बेटियों के जन्म को उत्सव के रूप में मनाना समाज में सकारात्मक बदलाव की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

इस अवसर पर इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन एवं उत्तरी विधानसभा क्षेत्र से आम आदमी पार्टी के इंचार्ज करमजीत सिंह रिंटू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल सभी अभिभावकों को बधाई दी और नवजन्मी बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अपने संबोधन में करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि "बेटियों का सम्मान करना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी उन्हें समान अधिकार और अवसर देना भी है। आज बेटियाँ शिक्षा, खेल, प्रशासन, विज्ञान और राजनीति सहित हर क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं। यह गर्व की बात है कि पंजाब जैसे प्रगतिशील राज्य में अब बेटियों के जन्म पर भी लोहड़ी जैसे त्योहार पूरे उत्साह के साथ मनाए जा रहे हैं।"

उन्होंने कहा कि सरकार और समाज दोनों की जिम्मेदारी है कि बेटियों को सुरक्षित, शिक्षित और सशक्त वातावरण प्रदान किया जाए ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और राष्ट्र निर्माण में अहम

भूमिका निभा सकें।

एसके अस्पताल की निदेशक राजवंत कौर ने इस अवसर पर कहा कि समाज में बेटियों के प्रति सकारात्मक सोच को मजबूत करने के उद्देश्य से पिछले नौ वर्षों से लगातार "बेटियों की लोहड़ी" कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि अस्पताल भविष्य में भी ऐसे सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा।

कार्यक्रम के दौरान अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखते हुए इस बात पर जोर दिया कि बेटियाँ समाज की धरोहर हैं और उन्हें शिक्षा, सम्मान और समान अधिकार देना समय की मांग है। कार्यक्रम के अंत में सभी ने मिलकर बेटियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की और समाज में समानता का संदेश दिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023